

7084

1. Title Bhāgavata Purāṇa
2. Accession No. 5612
3. Folio No./Pages 71
4. Lines 13-15
5. Size 34 × 17 cm.
6. Substance ~~leaf~~ ^{leaf} of ~~paper~~ ^{leaf}
7. Script Devanāgarī
8. Language Avadhī
9. Period Not mentioned
10. Beginning "श्री गणेशाय नमः ओम् नमः परम
परमहंसा स्वादित चरण कमल चिन्म कर दाय
सक्ति जन्मानस निवासाय श्री राम चन्द्राय...."
1. End "दक्षिण वाम श्रीणीन में है आद्रिलेवाले दक्षिण
वाम पछिले पामन में है अभिजित उत्रापाठले
दक्षिण वाम नासिका में है ॥"
12. Colophon No
13. Illustrations No
14. Source Donation
15. Subject Purāṇa
16. Revisor No
17. Author Not Known
18. Remarks Bound, fair condition, seems to
be incomplete.

①

2

3

पत्रसंख्या ८४ पंचमसंघे

005612

005611

005611

श्रीगणेशाय नमः ॐ नमः परमः परमहंसास्वादिज चरण कमल चिन्मकरंदाय नमः किञ्चन मानस निवासाय श्रीरामचंद्राय प्रधातः पंचमस्कंधव्याख्याने कविशेषवान् प्रियव्रतो न्वयोपत्रसंप्रसंगप्रपंचते १ पादोऽनंतरपंचमस्कंधक्रीपाख्यानामैः प्रनेककथानकरिकैः युक्तैः प्रसोजो प्रियव्रतको वंससो विस्तारकरिकैः वरानवरैराहै १ धवीसक्री २६ प्रधापने पंचमस्कंधमैः प्रस्थानसीयते स्थानवरीनवरैः स्थानकारैः क्रौनामैः लोकदीपादिनकीजो मर्यादाको जो पालनसो प्रस्था नकरीराहै २ तीनलोकनमैः प्रिररकलोकक्रीवित्तमर्यादाकरीराहै ३ ममिमैराजानकरिकैः दीपादिनकीजो मर्यादासो पाल

प्रधातः पंचमस्कंधव्याख्याने कविशेषवान् प्रियव्रतो न्वयोपत्रसंप्रसंगप्रपंचते १ धडिषत्पायुताध्यापे पंचमे स्थानसिख्यते लोकादीपादिमर्यादापालनारब्धमने कथा २ एषुमुपर्यधोलोकैः मर्यादात्रिविधामता पुनः श्रेष्ठैकरास्तेषु मर्यादावर्धुमीमता ३ भुविदीपादिमर्यादापालनैराज्यभिः एथक् भूमेरुपरदेवाद्यैस्ततश्चाथौ ऽसरादिभिः ४ तत्राध्यापेस्तुविंशत्याप्रयत्नतपुरस्सरः भुवोदीपादिमर्यादापालना इति वरार्थते ५ त्रिमिसूर्यादिभिर्ज्योतिश्चक्रादिदिति कथ्यते अतलादिषु हैताधैः पालनं च तस्मिन्निः ६ तत्रतुप्रथमे ध्यायेज्जानिजो राजनिर्दे

नकरियेहै ७ प्रोरसुमेरके उपरदेवतानकरकैः मर्यादापालनकरीराहै ८ तत्तांवीसप्रधापकरकैः प्रियव्रतनैः प्रादिलैः कैंयेराजा निनकरकैः एष्वीदीपादिनकीजो मर्यादासो पालनकरीयेहै ९ तीनप्रधापनकरिकैः सूर्यादिनकीजो तिचक्रमैंसो वरानकरीराहै नापीछेतीनप्रधापनकरकैः प्रतिलादिकममैं हैतादिनकरिकैः जो पालनसो वरानकरीयेहै ६ तत्तां पत्तिलीप्रधापनैः जानीजो प्रियव्रतनाकेराजकीजो निहती प्रोरफेरजानमैः निहारे सो जो प्रदुतकथासो वरानकरीयेहै ७

तत्तांविस्मयकरकैंराजापछैहैं तेसुखदेवजी प्रियव्रतजो राजासो भागवतप्राप्तामरामलोकैंधरमैंसैंसैंरमतभयोंजाघरतेकर्मबंधनलोपहैं प्रारपाराभवलोपहैं १ सोहैंहोस्मननमैः प्रेरछोडोहैं संगतजिनैः प्रैसैंप्रियव्रतसरीकेजेपुरुषतिनकोपरमैंजोप्रभिनिवेशसोहैंवेकनलीयोपहैं २ उज्जमलैजसजिनको प्रैसैंजो भगवान्तिनकेघरनकीजो ध्यापाताकरिकैः प्रान्दितचिज्जजिनको प्रैसैंजो मर्याततिनकीकुरुंवमैंजो चारतमति सोनरीलोपहैं ३ मेरेवडोसैंहैंहैं होस्मराखीधरपुजादि

श्रीराजोवाचः प्रियव्रतो भागवति आत्मारामः कथं मुनेः अतरेमतयन्मूलः कर्मबंधपराभवः १ यन्मूलं मुक्तसंगा नांतादृशानां धिजयमः अरे धमिनिवेसोयुपुसांभवतिमर्हति २ मर्यातं खलु विप्रैर्धुतमश्लोकूपादयोः ध्यापानिवर्तिचिज्जानां नकुरुंवेस्पृशामतिः ३ संसयोयं मर्यातं हस्मन् दारागारसुतादिषु सक्तस्य युत्सिधिरभूत्स्मेच मतिरद्युता ४ श्रीशुक उवाचः बाढमुक्तभगवत उज्जमश्लोकूस्पश्रीमद्भरणाविहरसंप्रावेसितचेतसो ५ भगवतपरमहंसदयितिकथा किंचदंतरायविरुताः स्यासिविति मां पदवीप्रापेरानतिन्येति ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

कनमैं आसक्तप्रैसोजो प्रियव्रतीनाकूं सिद्धीलोतमई प्रोरश्रीहस्ममैं प्रद्युतमतकैंसैंतोतमई ६ तत्तांश्रीसुखदेवजीकैं हैतभरा तेराजानैः सांचकली उज्जमलैजसजिनको प्रैसैंजो भगवान्तिनको जो सुंदरचरणारविह ताको जो मकरंद रसनामैंलगाहोचिज्जजिनको तेभागवतपरमहंसतिनकूं पारजो भगवान्तिनकीजो कथाकथुविप्रनकरकैंनयलो नयलोतमई अपनीमंगलरूपजो पदवीनायवरुधा करिकैंनलीछोडतहैं ५ श्रीहस्माय गोपीजनवल्लभायः

हे राजन् परमभागवत राजा प्रियव्रत तू सो नारदजी की चरनसेवा करि कै प्रनायास मिलौ परमार्थ नत्व जा कं हं सक
रि कै ही सतत तासमै उन्नमगुरा के समस्त निन को प्राप्ति है यत्तु जानि के पिता जो स्थाप्य भूमनि नै एषी पालव के लीये प्र
जा होनी परंतु भगवान् कामदेव निन मै लगे जो समाधि ता करि कै साग कीये तें सब रे कर्म जानै ए सो जो प्रियव्रत सो राज
की स्थान ही करत भयो है पिता की आज्ञा पुत्र को करनी है तो उरुदे राजपुत्र अपनो पराभव देखै पाते स्थान को यो नासमै
स्वयं के वटायव के लीये चिन्ता करि कै जानौ सव जगत को अभिप्राय जानै ए सो जो सवन को आदि देव हं ह्मा सो सव देव न

अथाय भगवानादि देव ये तस्य गुरा विसर्गस्य परि हृदि शानु ध्यानु ध्याव सति सकल जगद्भि प्राप्य प्राप्त
यो निरखिलि निगम निजगुरा परिवेष्टितः स्वभवनादि वतार ७ सतत तत्र गत नल उडपतिरिवि विमाना
वलभिरनुपथ ममर परिवटे रविभिः सज्जमान पथ पथि च वरूथसः सिद्धगंधर्वसाध्य चारण मुनि गरीरू
पगीयमानो गंधमादन शोणी मवभाष्यन्नुपसमर्थ ८ तत्र त्रधारानंद वरुथ मयानेन पितरं भगवतं हिर
ण्यगर्भमुपलभमानाः सवसेवीत्यापारो न सदि पिता पुत्रा मवहिता जालरूपतस्थे ९ श्रीहरिः श्रीहरिः

हं प्रारवेदान कं ले के सुत लोकते उतर के आवत भयौ ७ जरांतु रां प्राकास मै चंद्रमा सो सो भापमान विमान न मै वैठे
देवता प्रार सिद्धगंधर्व चारण मुनि गराइन करि कै मार्ग मार्ग प्रजै गये ए से जो हं स्नाजी गंधमादन पर्वत की जो गु
फा नाय प्रकास करत आवत भयौ ८ तासमै हं सपे चंदे अपन पिता हं स्नाति मै जानि है सी घुली उठ कर के स्थाप्य भू प्रार
प्रियव्रत कं संग ले के राथ जोर के तासमै तो नारदजी सजा करत भरा ९ श्रीहृस्माय नमोनमः श्रीहरिः श्रीहरिः

हे भरतवंसमै भये राजा परिहृत नारद नै सजा जिन की करी प्रार सुंदर वचन न करि कै वरी न करीयेतें गुरा प्रवतार जिन
को दया सतीत है हंसन चितवन जिन की ए से जो भगवान् हं स्ना सो प्रियव्रत सो बोलत भरा १० पुत्र मै कतुं सो सनि नरी
हैं मभाव जिन के सुतरूप रा से जो भगवान् ति नै दोषारोपन कर के नरी देखे के जो गपतें तम मरा देव तेरो पिता मनु प्रार ते
रो गुरु नारद जो सव रे जाई स्वर की आज्ञा कं विवस रौ पकर है १२ जाई स्वर को जो कर्म नाय कोई पुर्व जप करि कै विधा कर के योग

भगवानपिभारतदुपनीतार्तनाः स्रज्जवाकोनातिनरा मुदितगुरागुरा चतारजुषः प्रियव्रतमादिपुर्वस्तं सद्य
हसावलोक इतरोवाचः १० श्रीभगवानुवाचः निबोधतार्ते हं मनुववीमीमासपितुं देवमर्त्यं प्रमेयं त्रयं वस्तेन
तये समर्धकं मसवे विभसायस्पदियं ११ नतश्चक्रस्पतपसावियावानयोगवीयेन मरिण वपावानेवार्थ
धर्मः परतः सुतोवाहृतविवरुंतु मनुवद्विभयात् १२ भवायनासायचक्रमर्तुसोकाय मोताय सहाऽभवाय सखाप
५ः स्थापचदेहयोगममक्तिरिये जनतागधतः १३

वलकर के वद्वि कर के प्रथ धर्म कर के तथा प्रार के वलतें अपव लतें प्रार की प्रार कर के जीवतें सो नरी समर्थ नरी १२
जनन को जो मर सो जन्म के लीए नास के लीये कर्म कर के लीये लोक मोर के लीये सख दुःख के लीये मोस के लीये ईस
र नै ही यो जो हेर योग ताप धारन कर है १३ जाई स्वर की वाराणी घडी डोर ता मै गुरा कर्म ते इ भरा वडी जव डोर तिन कर के वंधे जे
तम हं स्नादि कतें ने पुत्र ईस्वर के प्रथ भेट है जे से नाक प्रार के बांधे ते मनुष्य न को भेट है प्रार प्राभा मै चले है १४

हे प्रियव्रत ईश्वर नैदीवों गुणकर्मके योग करि कै सरवदुःखके स्वभाव भोग करै तें जो जो ईश्वर नै जो निदीनी तें तिन २ मै स्थित होय कै
भोग करै तें जैसे आधरो सुजते के संग कर के धाम में ध्यायामे जल ले जा पतें तसं चलो जाय तें १५ जीवन मुक्ति तें सोई तव ताई प्रपनो प्ररध्व
मले तव ताई हेर को धारन करै परदे को भनिमान करै तें जैसे सुपने में देख्यो जो देह नाय जागे पीछें स्मरण नही करै तें सोई मुक्ति तें सो प्रो
र देह के लीये गुणकर्म तें तिनै नही भजै तें १६ सो प्रसावधान तें तां वन में भय होय तें होय तें छे दंडी रूप जो वेरी संग ले कै और जो जिते दितें

यद्यचित्तं मागुणकर्म दामभिः सुदुस्तरैर्वत्सवयं सुयोजिताः सर्ववत्तमवलिमीस्वराय प्रोत्तानसीवद्वपदे चतुष्यदः १४
ईशावस्यं ह्यवतु धर्मे गुरुः खं सुखं वा गुणकर्म संगतं आस्थापत तद्युक्तं नाथ चतुस्मता धाय मनीषमाना १५ मुक्तो
पितावधिभूपाश्वहेदामारधमश्रन्नभिमानसत्याः प्रथानुभूतिप्रतिपत्तिनिंदित्वन्यदेहाय गुणान्महते १६ भयं
प्रमतस्य वनेषु पितृघातः स आत्मे सत्सुदसपत्नः जिते द्विषस्यात्मरतेर्बुधस्य गताश्रमाः किं नु करो सवधः १७ याषट्
पत्न्यान् विजगीयमाणो अतेशुनिर्विषयतेतर्ष्व अतेशुर्गो अतर्जतारो नृहीरो पुक्कामं विचरेदिपश्चित् १८ श्रीहरिः

आत्माराम तें जानमान तें तां गुरुस्था अमकरा होय करै तें १७ जो छे इंद्री रूप वेरी तिनै जीत वे की इच्छा करै तें सो परलै वैदिकै
जतन करै जैसे घर को आओ लै कै राजा वेरी न को जीतै तें जैसे इंद्री म को जीतै तें कै जरा इच्छा होय तगाई विचरे १८ श्रीहरिः

तू लोक मल तें नाभि में जिन कै ऐसे भगवान तिन को जो चरण कमल सोई न योग दना को आओ लै कै छे इंद्री रूप वेरी न क
जीत कै ईश्वर नै दीये जो भोग सो कर प्रेर मुक्त संग होय कै प्रपनो जो स्वरूप नाथ भजि १६ रासे जव सजाने क ह्योत वमता भागव
त जो प्रियव्रत जो त्रिलोचिलो को गुरुः जो हंसा ना की जो नाथ नी चोरे कै वडो सनमान सो अतृणा करत भये २० स्थाप भमन
नै रजा कीये ऐसे भगवान् हंसा ने प्रियव्रत नारद जी को विसम नाव नरी देखी कै दर के स्वरूप को स्मरण करत प्रपने लोक को

चंलज्वनाभांघिसरोजको रादुर्गप्रितो निर्जित पटसपत्नः अहो ह भोगान् पुर्याति दिष्टान् विमुक्तिसंगः प्रहृतिं भ
जस्व १५ श्रीशुक्र उवाचः इति समभिदिनो मतो भोगवत्स्त्रिभुवनगुरोरनुसोसनमात्मनो लघुतपाः वनतसिरोध
रोधारमिति तासवतुवानमुवाह २० भगवानपीमनुनायेथा वदुपकलिना पाचतः प्रयवत नारदयोरविधममभि
समिहमारणो रात्मसमवस्थानमनवा संवाडन सहायमव्यवहृतं प्रवर्तयन्वगमन् २१ मनुरीपि परै रो वं प्रति सं
धित मनोरथः सरखिवरानुमते नात्मजमखिल धरामंडलि स्थित गुमय आस्था यखयमाते विषम विषय जला सपा

जात भये २१ ईश्वर नै सिद्ध कीये तें मनोरथ जिन को ऐसे जो मनु सो उ नार की संगत कर कै सवरी एखी मंडल के पालन क
र वे के लीये पुत्र है नायरा अप वे ठार कै धर की आसाते उपराम को प्रामी तोत भयो और वन को जात भयो २२ ऐसे ईश्वर नै
दीये कर्माराधन जाके रासो जो एखी को पालक प्रियव्रत सो सव जगत के बंधन को नास करन वारे है प्रभाव जा को
ऐसे जो भगवान् आदि पुरी तिन के युगल चरण को निरंतर ध्यान ता के प्रभाव करि कै नास की रातें रागादि कमल जा के

अैसेतैं प्रंतस्करनजाको धारीतै बुद्धितैं मरांतन कौं मन कौं धटावन वारों अैसेजो प्रीय हत सो एखी पालन कर
तभयो २३ याके प्रनंतर प्रजा प्रजापति जो विस्वकर्माता की वेदी वतस्मती जाको नाम ता यथा हत भयो तामें
प्रपने समान सील गुण कर्म रूप पराक्रमतिन करके उदार अैसे जो हस १० वेदातिनै उपजावत भयो तिनतें धेरि उर्ज

ईतो हवाव सजगती पतिरीखरे छयाधिनिवेसित कर्मादिकारोऽखिल जघंध ध्वंसन पराभाव स्पमगवत प्रा
दिपुष्टि स्यां धियुगलानि वरत ध्यानानुभावेन परिरं धिजस्रसाक्षपाशऽवतातोऽपि मानवर्द्धमरा मोमरीतल
मनुषसास २३ अथ दुहितरं प्राजायते विस्वकर्माता उपयेमेव हिंसांती तस्या मुतुवाचः आत्मजो नात्मसमान
सील गुण कर्म रूप वीर्यो हरानुहसभावयान् वभूव कंसा च यवीयसी मूर्ज स्वतीनाम २४ अजिन्ध्र जिह्वय
यज्ञवातु मरावीर तिरण परहि नो धकेंत ए ए सवन मै धाति धि वीतरोत्र क वय ईती सर्वये वाजिनामानाः २५
एतेषां कर्मरावीर सवन इति त्रय प्रासन उद्धरेत स त आत्मविधयाम भभावादारभ्य कृतिवर चयाः पारमहंस्प

स्वती जाको नाम ता य उपजावत भयो २४ अजिन्ध्र जिह्वय जवात मरावीर तिरणरेता धत ए सवन मै धाति
धि वीतरोत्र क वियेसव अजिन्ध्रे नाम तेर उन के नाम मोत भये २५ ईन मै क व मरावीर सवन येती नो नैय कह
स्वाचारी होत भये मेवाल क प्रवस्थामे आत्मविधामे कीयोतें अभ्यास जिह्वे परम संसन को आ प्रमता प भजत भये २६

ता आ प्रम मै उपसम मैतैं सील जिन को परम रिख अैसेती नों ते सव जीवन कौं निवास भगवान वासुदेव उर पेन कूं
सररा अैसे जो हरि तिन कौं सुंदर जो चरणा रवि हति न कौं जो निरंतर स्मरणा ता कर के अथं डिन परम भक्त यो गता के
मभाव करि कैं सो धो जो प्रंतस्करणा ताते प्रतीत भये सगरे भूतन के आत्मा भगवान तिन मै ता कूं प्राप्ति होत भये २७
अव प्रिय हत कैं प्रोर जो र क स्त्रीता मै उन्नमता न सरै वत पुत्र होत भये ते मन्वंतर के पालक न संपरी नय भयो नही

तस्मिन्नु हवाव उपसमशीलाः परमरषयः सकल जीव कायावासस्य भगवतो वासुदेवस्य भीतानां सररा
भूतस्य श्रीमच्चरणा रविंदा विरतस्मरणा विगता परम भक्तियोगानुभावे परभावतांत हं दयाधिगते भगव
तो सर्वेषां भजना मा ज्ञभूते प्रत्यगात्मने वातसनस्तादात्मविशेषे राशमीयु २७ अथ स्याम पिजाया यात्रयः
पुत्रा आसन् उन्मत्तां मसौ रैवत इति मन्वंतराधिपतयाः एवमुपसमायेन पुस्वन नये ध्ययु जगती पतिर्जगतिः
मबुदा न्ये कादश परवत्सराणां मवाहताऽखिल पुरकार सार सभरत हं दु युगला पीडित मोर्वी गुणास्तानि वि
रमित धर्म प्रतिपक्षो वर्हिंसा चात्त्व दिन मेघमान प्रमोद सन वोषिण त्रिडा प्रमुषित ता सावला कुरुचि
रस्वल्वा हिभिः पराभय माज विवेक इवान वबुध्यमान इव मरामानु बुभुजे २८ श्री हस्मायन मानमः

अैसेतैं पराक्रम जा मै ए सो जो बलता करि कैं दुर्न ए सो जो भुज दंड को जुगलता कर कैं चटा यो जो धनुष ना की जो रं कर
ता कर कैं निरस्त की एतैं वेरी जानैं वरिं भनी जो रानो नामे दिन दिन वडो जो प्रमोद स सुख जायवों प्रंगार ता सभावत
जाहसन चितवन करि कैं पराभव की योतैं सो विवेक जाको आत्मा कून जानत सावडो जाको तन रासी जो एखी को पा

ऐसे प्रपराक्रम जाके प्रैसौ जो प्रियवत सोरा करिना नारहजी के चरनन को जो सरराता में प्राप परो प्रैसोरा ज्वाहिर प्रपंच
ता के संसर्ग करके मन में निर्वेद कर पद ब्रत भयो ३५ प्रतो मै नै वडो नियम कर्म की पौ जाते इन्द्रिय न करके प्रविद्या करके
रह्यो विषम विषय प्राता मै विरत भयो प्रौरयारानी को जै सै विलाय वे को वंदरा तो यना ते सो मै रोत भयो जाते मो कंधिका

सवौ रावम परिमित वल पराक्रम राह देव धि चरणानुशय नानुपति तगरा विसर्ग संसरेणानि वत मि
वात्मानं मन्वमान् भ्रातृनि वेद इह माहा ३५ प्रतो प्रासाध्वनि यतं यदिति निवेशीतो दमै द्वियैर विपारिचि
त विषय विषयां धरूपेत हल मल ममुष्या विनताया विनोद मगं मां धिगतिर्गहं यां चकारे ३६ परिदेवता प्र
साह धिगति तौ मप्रत्यवमपै रानुप्रवते म् पुत्रे भ्यश्मां यथा हायं विमज्ज भुक्त भोगं च महिषी मृतक म् निवसतु
महा विभूती मपि हाइ स्वयं निहित निर्वेदो हृदय लोत हरिं विहारानुभावौ भगवतो नारहस्प पदवी पनरवानु

रहै प्रैसै निहा करत भयो ३६ भगवान के प्रसाद करि के पायो जो विवेकता करके भगवान नारहजी को जो पदवी
नाय प्रेर सेवन करत भयो करा करके प्रपने पुत्र न को यथा जो पराज्पवां ट करके करो है भोग जा को प्रैसी जो रा
जा मधुरे सरीर की सी नाई राज्य संपत्ति छोडि के आपदे मै निवेद करके अररा की रसें हर के बितारनु के प्रनु भव जानै र

ता प्रियवत के ये श्लोक है प्रौर प्रियवत को को यो जो कर्म जाय ईस्वर विना को न करे जो राजारथ के पैया की धार करके
रात्र कुंदर करत सात सनु इ करत भयो प्रियवत नै दीपन करके रचना करो प्रौर नदी पर्वत वन इन करके दीप दीप में
प्राणी न को सुख के लीपे सा मा करी ३७ पाताल को सुख स्वर्ग को सुख भूमि को सुख तारा जानै नर्क की लुत्प को यो के सोरा
जा है हरि के मज्जि है पारे जा को ४० ईति श्री भागवते महापुराणो पंचम स्कंधे प्रथमो अध्याय

तस्य हवाये तै श्लोका प्रियवति श्रुतं कर्म को नु कुर्यादिने स्वरं यो ने मिनि प्रेर करोत ध्याया घन सप्रवार धीनु ३८
भू संस्थान श्रुतं येन सरिद्वीरि विनादिभिः सीमा च भूत निवृत्तै दीपे विगसः ३९ भो मै दिव्य मानुषं च मरी लंके
मै योग जं यश्च के निरयो पम्प पुरुषानु जन प्रिया ४० ईति श्री महागवते महापुराणो पंचम स्कंधे प्रथमो अध्या
या १ द्वितीये प्रोक्त माग्नीध्र चरित्रं स्त्रेण संमतं पत्न्यां हि पूर्व चित्रा यो नानी मुख्या न जीवित १ शुक उवाचः
एवं पितर संवत तदनुसासने वर्तमान् प्राग्नीध्रोजं वुदीपो कुरा प्रजा प्रौर सव द्रमां वे स मा रा पयं गो पापत् १

मै स्थील पटन कं संमत प्रैसौ जो प्रग्नीध्र को जाति वरी न करे है जो प्राग्निध्र पूर्व चरित्र प्रसरामें ना भितै आहिलै पुत्र
है ति नै उपजावत भयो १ प्रस्मिन्वसे प्रसिद्धो यमाग्नीध्र स्त्रेण पुंगव वितिसिद्धि वत स्पेहं चरितं मुनिरह्वीत २ वा
वंस मै प्रसिद्ध जो प्राग्नीध्र सो इ स्थील पटन मै प्रेयता के चरित्र को श्री सज्ज देव जीतां सी प्ररत से कृत भयो २ श्री हरिः

प्रैसौ जो प्रियवत सोरा करिना नारहजी के चरनन को जो सरराता में प्राप परो प्रैसोरा ज्वाहिर प्रपंच

15

ऐसे पिता जो प्रिय हनु सोत वगयोत वृत्तिन की आत्मा में वर्तमान ऐसे जो प्राणि घसो जंबु दीप की जो प्रजाति में पुत्र की सी नई पा
लन करत भयो १ सो प्रग्री भ पुत्र की चा च करि देवतान की स्त्री न को बेल वे को पवन मंदिरा चल मा की गुफा में वे दिक् सव प्रजो
की सामि ग्रीधर के विस्वस्थान को पति जो हं स्नाता पप कर के आराधन करत भयो २ प्रादि पुत्र जो हं स्नाता को प्रमिया
य जानि के अपनी सभा में गावें ऐसी र्व चित नान जो प्रसरा ता पपरा वत भयो ३ सो प्रसरा प्रति सुंदर नाना प्रकार के स

सच ब्रह्म बिभ्र पितृ लो न काम सुरवर वनता की डा चल होरा पां भगवंतं विस्व स्जां पति ना भूत पर चर्यो पकरण
आसे का गोरा त पखो सन् आराध पां व भूव २ त दु पल भ भगवान् प्रादि पुत्र स सी गायती र्व चिति नामा
सरस मि प्रपा य मा सा ३ सा च त हा श्र मो पवन मति र मणी यं धि वि धि नि वि ड वि ट पि नि क्र सं स्ति ल्य पुर ट
लता विसृ ह स्य ल वि हं ग मि धु नै प्रो च मा न श्रु ति निः प्रति बो ध मा नि स लि ल कु छु र क रं ड व क ल हं सा दि मि वि चि
अनु प कं जि ता म ल ज ला स य म मि ला क्र म य व भू मः ४

धन जे ह सुति न की जे ति न की जे सार वा ति न ते लि प टी जे स्व री ल ता ति न में वे डे जो मोर ते प्रा दि ले के पक्षी न के जो डा ति न के
र के उच्चार न की ये ऐसे जे स्वर ति न कर के बो ध की रा ऐसे जे जल सुर गा ऊ ड र राज हं स इन कर के वि चित्र रे ना द जि न में
ऐसे जे जे न त ति न में ए ले जे व ल ति न की हे स्ना ति ज में ए सो जो रा जा को आ श्र म ता में भू म ती ना म भू म ति भू ४

ना प्रसरा को सुंदर जो ग मन ता ते पा म न को जो धर्म धर वों ता की जो ग ति ना में है विलास जा को तलां पा म न में पं न पं न व जे घ
घरं ति न को जो श हा ता य सु नि के राज कुमार जो प्रा ग्री घ सो समा धि योग कर वे के ली ये मू है है ऐसे युग ल कम ल ने त ति न त व
तो घ घ र न को स ह सु नि के ने व सो लि के हे स त भयो फल न को सं घ त जे से मोरी आवै ते से चली आवै है देवता मनुष्य न के मन कं प्रां
नंद देव वारी ऐसे जे ग ति विहार लज्जा विनय वारे चित वन सुंदर प्रसर ने आ दि क प्रं ग ति न कर मनुष्य न के मन में काम को प्रवेश क

त स्या स। ल लि त ग म न प द वि न्या स ग ति वि ला सा आ नु प दं स्व रा ष ना य मा न रु चि र च र णा स्व न मु पा क र्ण न र
देव कुमारः समा धि योगे ना मी लि त नु य न न लि न मु क ल यु ग ल मी स द्वि ब्र च प्य च य ता मे वा वि हू रे मु धु रु री मि
म सु म न स दु प ज प ती वि ज म न ज मु नो न य ना दि उ च्छे र्ग ति वि हार वि न पा वि लो क्क श्र स्व रा ष रा व य वे म न सी
नृ णां कु रा मा पु स्य वि श दं ती वि व रं ई नि ज मु ख वि ग ल ता म ता स व स हा स मा स र णा मो द म धां ध म धु क्र रि नि
प्र रो प रो धे नु दु त प द वि न्या से न व लु स पं द न स्त न ब्र ल स ब्र व र भा र स नां दे वी न व लो क्क ने न वि ह ता व स र स्य
भ ग व ता म क र ध्व ज स्य च स मु प नी ज ड वा दि त रे वा चः ७

रवे जो जो धार ता प करे ई नि ज मु ख ते नि करे प्र म न सरी के दे प्रा स व की सी नाई मा द र जो हां सी सहित बोल नी ता में जो स्था स की गंध
ता के न द स् प्रा ध रे जे मो रा ति न को जो प्रा प वो ता के ड र ते वे री जो पा म ध रे है ता के र के र ले र से जे स्त न चोरी सु रि घं रि का जा की ऐसी
जो देवी प्रसरा ता की चित वन करि के काम के व स रे गयो ऐसे जो प्राप्ती घ सो ज ड की सी ना री बोल त भयो ७ श्री कृष्ण भ्या न मः

हे मुनीन मैं श्रेष्ठ कौन हैं धा पर्वत मैं कहा करवे की इच्छा करें हैं अथवा तू पर मे सर की माया है सो धनुष ने डपाय है सुदहन
कृं जी तो चाहें कहा अथवा वन मैं भ्रम तू प्रैसे जे मग तुल्य तू मैं जिने दहे रे कहा ८ सत पत्र जे ने जल मल तेरी वें पोष जिन मैं वि
लास करवें सुंदर विना पोष के पं नी तें भाल जिन की प्रैसे जे हो उवाने तिनैं कौन के उपर चलाय वे की इच्छा करें हैं सो तू मनरी
जानैं तेरो जो पराक्रम सो जड बुद्धि जो हूँ मैं तिन के कल्पारा के ली एलो ३ ६ और तेरे जे चेला तें तेरे विस्प सतिन जो स्याम वेद

कालं चिकीर्षसि चिकिं मुनवर्य सैले मायाः सिकापि भगवत्प्रवर देवतायाः विजै विभर्षि धनुषी सुदरात्मनो
र्थं किं वा भगवन् भगवत्से विप नै प्रमत्तान् ८ वाणा विमो भगवत् शत पत्र पन्तौ शाना वपुष रुचिरा वनीतिः
अहंतौ कस्मै पुयं स सिवरे विचरन् विप्रः सो मायनो जडधीयांतव विक्रमो सु ९ शिष्याय मे भगवतः परि
तपत गायंति सामसरत्सु प्रजसनीशः पुष्पच्छिखा विलुलिताः सुमनो भिहृषी सर्वे जंतु प्रघणा पववे
हस्यारवा १० वाचं परंचरणा यजरति तिरीणा हस्मन्त रूप मुखरं प्रणा वामतु भलधा क्रिदेव रुचिरं विरं वेयः

विमलानि रत्न
वस्त्राणि

नाय चारो और ते पेटें और ईस्वर कूं निरंतर गामें तूं गुमारी सिखा मैं धुरें प्रै सी जो हलन की वर्षा ता पसवरे जने भजे हैं त्रै सैं
जै सैं रिषी न जे गराते वेद सागन कूं भजे हैं १० तेरे चरनरी जे पीजरा तिन के जेती तर तिन की विना रूपरी प्रघट प्रै सी जो वा
गतिनाय केवल रूप सुने तूं सुंदर जो निज मंडल तामें भ्रम की सी जो कानि सो कहां पाई तां कानि मे भजि कौ सो जो मंडल

वे सांजरा सुंदर जे तेरे सी गतिन मैं तेने कलाधारण की यो तूं और मध्य मैं तू वडो कृष तूं कृष करवें हेतु धारण करें हैं यामें मेरी
इच्छा लग गई तूं तेरे सी गत मैं अरु न जो को च सो पा प्रकार कौ तूं पा करवें मेरे प्राप्ति मूं सुगंधित करें हैं १२ हे सुदहन तेरो जो लो
कताय मो कूं सोषा जालो कैं जे जने तें तें या प्रकार मन कूं ह्वा भ करन वारी तें प्रपूर्व प्रगति नैं छाती करवें धारना करें हैं
और तेरे मुख मेर सा बिसा सइ न करि के सतिन प्रमत्ता दिव सैं हैं १३ और ते मित्र तेरे लो क मे हेतु कौ आहार कृत तें जा आहार तें आ
हार को जो गंध सो आवैं तूं तू विष्णु की कला तें पातें तेरे कानन मैं मकर तें सो भायमान आकार कूं डल तें और तेरो मुख सरोवर सो

किं संमर्तं रुचिरयो द्विजसंगयो स्ते मध्ये सुसो वतु मपत्र दसि श्रतामैं पंक्रौरुणाः सुरमिरात्म विधारा इह कये
आश्रमं श्रमगमै सुरभिकरो सि १२ लो कं प्रहृषिव सुवुत मजा व कूं मै इज तप इत्तं मुख साव पवाव र्वा स्म दिध ८
स्प मन उन्त यनो विभर्त वतु हुतं सर सरा दिसु धा दिव के १३ कामात्म हनी रदना द्वि विरंग वाति विस्मोक फ
लास्प निमिषो न्न करो च करौ उद्विज न मी न पुग लो द्विज पंक्ति शो चरा सन्ध भंग नि करं सर इ मुखं ते १४ यो सो
त्वया कर सरो जतः पतंगो द्विषु भ्रमन भ्रम त एज यते हरणी मे मुक्तं न जे स्मर शिव क जरा वरुथं कथोति लो तर नि १५

सर्वज्ञा तित स्मरण नी करे १५

और चंचल तें मधुरी सैने उ हो उ सो जामें प सी जे सैं दंत तिन की जे पंक्ति का की तें सो ना जामें और नि कर जो भंगन कौ समूह ता की
सी ना इ तें जे सन के समूह जामें प्रै सो मेरो मुख तें १४ तेने तू स्त व मल करवें मारी जो गे ह सो दिसान मैं भ्रम त भ्रमैं हैं चित जा को
प्रै सैं जो कौने जति नैं कपावैं और तेरो जटान कौ समूह खुल गयैं तें ना पतनरी स म्भारैं और धर्त जो पवन ते मेरी नी वी कूं

नपरीहै साधन जाकों अैसे मित्र तेरो जो रूप सो लपके करन वारे न केत पको ना सकसैं सो रूप तेने को न सेत पकरि कै पाये
है ते मित्र प्रवत मेरे संग न पकर वे को योग्य हैं संसार को विस्तार करन वारो जो हंसा सो मेरे उपर प्रसन्न भयौ १६ हंसा प्र
हीयो रसो जो मित्रता ते मे नही छोड़ौ जात तो मे मेरो मन दृष्ट लगी है सो नही छुटै है हंसा सी गन की तेरे प्राधीन अैसे जो
मे नाय जरां तेरो चित्त रो पत गालें चल थोर ये तेरी सखी हैं ते प्रनु कुल है मे मो क सेवन करौ १७ श्री शुक दे जो कहै है राजा में

रूपंत पो धन न पश्र रतांत पो घं सेन नु केन न पसा भव तो यल ध्वं चर्तु तपो र्द सि मया सह मित्र म ध्वं विं वा प्र सी
ह त स वै भव भाव नो मे १६ नत्वां प्रजा मि र पितं द्विज देव हतं यस्मिन्म नो द्र ग पि नौ न व या ति ल ज्जं मां चा रु सं
ग व स ने तु म नु हं तं ते चितं यतः प्र तिस रं नु शि वा स चि व्या १७ शुक उवाचः ई तिल ल ना नु न या ति वि सार
हो ग्रा भ वे ह्म ध या पा रि भा ष या तं वि वि धि व धू बि बु ध म ति र ति स मा ज या मा स १८ सा च त त स्य वी र य धु प ते
धु ह्म सी ल रु प व यः श्र तो दार्य रण प रा वि प्र म ति स्ते न स रा पु ता पु त पर व त्स रो य ल स रां कालं जं व द्दी प ति भा नो मि स क

स्त्री न के सम जाय वे मै चतुर अैसे जो प्राग्गी घ्रामी न लोक न हं संहर ल गै अैसे जो वारी ता कर वै देव तान की कहु प्रसरा
ताय स न्मान करत भयौ १८ सो प्रसरा वीर य धन की अधि पत अैसे जो प्राग्गी धना की बुद्धी सील रूप विधा वय संपति उदा
ता डल कर के व स ते ग यौ हैं चित्त जा को सो तारा जा के संग ह सु र जार तीन के लाघ इत ने व ध ति नै जं व द्दी प को जो पति प्राग्गी घ्रा

राजान म श्र व्ज आ ग्रा घ्रा प्रसरा म ना भि कुरु प त र व धा इ ला ह त र म्भ क तुर र प य व र व द्रा स क्त मा न प हें ना म जि न के अ
सै नो पुत्र उ प जा व त भ यौ सो र व चित प्रसरा व द २० म र क र क पुत्र उ प जा य के राजा कं ध र ती मे छो ड के फेर हं सा के पा स जा त भ २०
प्रार प्राग्गी घ्रा के जे वे रा ते मा ता के अनु ग र ते सु भा व कर के ह द हें अंग जि न को ते व ल कर के नु क रौ त भ य पि ता ने म्यारे २१ ज व की ने ते
अ प ने तु ल्य हें ना म जि न के अैसे जे जं व द्दी प के धं ड ति नै नौ ग कर त भ ये २१ न सी त भ भ यौ का न जा को अैसे जो राजा प्राग्गी घ्रा सो प्र

न स्या मु रा वा आ त्म जा न स रा ज व र प्राग्गी घ्रा ना भि ल स रां काल जं व द्दी प प ति ना विं पु र्व ह रि व र्ये ला ह त र म्भ क तुर
रा म य कुरु म द्रा सु के तु मो ल सं ज्ञा न व पु त्रान ज त्सा स त्वा य स ता न्न वा नु व त्स रं गृ ह्ये वा य रा प र्व चिं ति भ य र
वं जं दे व मु प त स्थे २० प्राग्गी घ्रा सु ता स्ते मा तुर नु ग र ता हो त्प त के नै व सं ह न व लो पे ताः पि वा धि भ ज्ञा आ त्मा तु त्या ना
मा भि य था वि भा गं द्दी प व र्षा रा वु भु ज २१ प्राग्गी घ्रा राजा त्प्र का मा ना म प्र स र स मे वा नु धी म धि म स मा न २२
स्याः स लो क तां शु ति मि रि वा रं ध य त्र पि त रो मा द यं ते संप रे ते पि ति रि नि व भ्रा त रो मे रु द्दि त्रि र्मे रु दे वी प्र ति रू पा भु ग
हं ह ल तार म्पां सा मा ना री म द्रा दे व वी मि ति सं ज्ञा न वो द व रु व २३ ई ती प्राग्गी घ्रा यो ध्या या २

प्रसरा की कं अधिक मानत वे ह नै कहैं जे कर्म ति न कर कैं ता प्रसरा की के लोक कं प्राप्ते त भयौ जा को लोक मै पितर प्रा नं द रहे है २२
प्रव पिता के मरे पीछे नो भै था मै रु की वेटी मे रु देवी प्र तिरू पा उग्र देवा ल चार म्प स्वा मी नारी म द्रा दे व वी र्या पे हें ना म जि न के
ये नो कं त्या ति नै व्या र त भ ये २३ ई ती म द्रा ग व ते म ला पुरा रो पं च म स्तं धे ना म दु ती यो ध्या या २ श्री कृष्णाय नमो नमः

भा.पं.
९०

तृतीये चरितं मेना परं मंगल मीर्यते न स्पयजे प्रतीतः समुजौ भूदि मोहुरि १ नीसरी अध्याय मै परम मंगल नाभिकों चरित्र कहै है
पाके पत्र मै प्रघर भये जो भगवान् सोई रिषि भदेव नाम कर के पुत्र होत भये १ श्री सुकदेव जी कहै हैं तेरा जन नती है पुत्र जा के
ऐसे जो मेरे देवीता पसंग लै के पुत्र की कामिना कहै हैं ऐसे जो नाभिय ज पुर्ष जो भगवान् तिन की पूजा करत भयो २ तारा जा की
अष्टा कर के विशुद्ध भाव करि के प्रवर्ग नाम जे कर्म तिनै श्री रस ते इव देश काल मंत्र कृत क ह सिखावन को जो सिद्धता करि के

22

श्रीशुके उवाच: नामिरपसकामो प्रजय दे मेरु देवा भगवंतं यज्ञपुरुषमवतिसात्माऽपजत् १ तस्य ह वाव अद्र
या विशुद्ध भावेन जयतः पवर्गेषु विचिरत्सु इव देश काल मंत्र कृत क ह सिखा विधान योगोपपत्ता दधिग
मो भगवन् भागवत्वात्सल्यनपाप्रतीक प्राप्ता नम पराजितं निज जनाभिमतार्थ विधितया अतीत ह स्पे
इदं गमं मनो नयनानंद वयवा निराम प्राभिश्चकार २ प्रयत्न मा विस्तृत भुज पुगल दयं विरर परा पुर्व विशेष
वक्रपिकौ से पावर धर धुर शिव लयात् श्रीवत्सन लामं हर वर वन रुद्र माला प्रवर्ष मृत म शिवा दिव रूप लज्जते ३

नरी प्राप्ति ऐसे जो भगवान् सो भागवत न पे जो वात्सल्य ना कर के सुंदर हैं अंग जिन को ऐसे जो अभिप्राय ता करि के
अतरा की पोरैं चित जिन को सुख दय सुख करैं मन ने चन को आनंद है न वारें ऐसे जे अंग तिन कर के सुंदर रा सो
जो अपना आत्मा सुत जनाय प्रघर करत भये ३ प्रघर करी वार भुजा ते जो मय पुर्ष न मै अष्ट पीतां वर पारि सको

वाजपय धधर रुद्र न कार १ नू पतारु ता १५६ वक्र कंडु सन्मान सूर्य प्रथल कनो चतु सरा जन के प्रसार त्व क सभा सदरा
ते जैसे कंगाल न के उत्तम धन मिले ता पव सेवन करैं ते से भगवान् को सेवन करत भये ४ प्रस्तुत करैं ते प्रज्ञान मै अष्ट मारे दास
जो मतिन को पूजा आपवार वार स्वा कर के जो परे साधु ते न मोन नः यती ह म को सिखायो ते प्रपंच मै तिन कर के ते मति जिन को आत्म
श्री ऐसे जो यत्न लो क सो प्रहृत पुर्ष न ते परे इव रजो तु मतिन के नाम रूप प्राहृत प्रपंच ते करत भये तिन कर के तु मारे स्वरूप के निरूप

23

किरशि प्रवर मशि मय जु कट बुंडल कटल कटसूत्र वा के पर न पुरा घग भूषरा विभूषत मत्व क स ह स्प गत पतयो
धता धवौ नम मघन पल म सवुतु मान मरु रो ना वत नू शी धारा उपतस्यः ४ अविस्तुः अतीसि सुहर्त तना
ई राम स्या क मनु पथानां न मोन म इति ना वद सु दु पति हि संक्रौ इति पुर मान प्रहृती गु रा वति कर मतिर नीरा
ई श्व स्य पर स्प प्रहृति पुरुष योरो वत्तिना निना मरु पा कृत नीः रूपानि गुरो गरी क देश कथना डते पर जनान रू
परां ५ सकल जन नि काया ह जन निरसन शिव नम प्रवराग विरचित सवल संश दशालितत विसल पातुल
सिद्ध वीधुरे र पिसं भत या स पय या क्लिषर म पा ह तु सा सि ६

एकर वे कं को नयो अप्पु हैं ५ सगरे जन न को जो समूह ता के नाश कर न वारें उज म गु रा न को जो गु रा तिन को राव देश ता के
क रि वे विना को न निरूप रा कर स के परो जन न प्रनुराग कर र वे जे ग द ग ह म कर प्रोर प्रस्तुत ते ई भये फल न के स
भूत प्रोर धान की पील प्रसत शुद्ध पल्लव तुलसी यव प्रकु इन कर स पा ह न कर के रा सो जो पूजा ता कर के पर मे स्वर जो
जुम सो प्रसन्न हो उया के प्रनंतर प्रोर प्रकार कर के वतुत रै सा मि ग्री न के भार जा मे रा से जा मे जज्ञता करि के तुम को प्रयोजन

मात्र नु न री द्यैः ५

तुमहैंसैहोआपतैतीसर्वप्रनापासप्रघटभरासबरेपुष्पीयेतेईस्वरूपजिनकेअैसेहोकिंततेनासुमनोरथनकीआ
साकरैहैअैसेजेतमतिनकीयतआराधनहै७अपनेअपकेनहीजानेअज्ञानीतिनकोहैपरमपुर्वकसुआकरकेअ
पनीमहिमाभासतायहैवैकीएआरतमारीकामनाहैवैकीएइतरलोअकीसीनाईविनाअजाकीराहीतुमहैं
नहैतभरा८हेप्रजपतमकूपरीवरहैकोनसोधानासिकैयनमैवरहैनवारैनमैअैजतुमहोतमारेनेअनकविषयसे

अथानयापिनभवताईसपोरुभारपासमुचितमर्थमिहोयलभामहैआमतरावानुसवनमंजसावति
रेकेरावोभूपमानशोवपुसार्धस्वरूपस्यप्रिनुनाथासिखआसासानानामेतइधिसराधनमात्रभवतु
महंती७तद्यथावालिसानीखमात्तनाअेधपरमविदुखापरमपुरुषप्रकृषकरुखासुमहिमानंचापर
वरुषासुपसुवृत्तविषयनुस्वयंनयचितयेचेतरवदोयलहितः८अथायमेववरोधतमयहंमहिषी
राज्येवरदृषभोगवाननिजपुरुषेष्टराविषयआसीत९आसागलिसितकानानलेविधवाशेषमाला
यांभवत्सभावानामाअरामाणानामुननामनवरतपरगरीतगुरागुरापरमंगलायनगुरागुराकथनोसि१०
तनये११वेराअपरिकैपेनायोअैसेजोज्ञानसोईनयोअजिताकरकैजरगयेहैअनेकपापजिनकेअौरतुमहैंहै
स्वभावतिनकोममननशीलअैसेजेभक्ततिनकोपरममंगलकेस्थानजेगुरातिनकोकलीवोरीहैइहोन
हीहैअैसेतुमहो१२तुमारेहरीनकरकेतुमहंजायहैपरराकवरमागेहैचलतमेंछीकलतमेंगिरतमेंजमाली
नरुअगाधरु११आरयसजारजारयनामलसानुमसारकेपुत्रतापइधकरतयावतित्यगनाहकरहैनवार
अैसेजेभगवानतुमतिनकीसेवाकरेहैपुत्रमहैमयोजनजाकोअैसेनीहंनकंवेरकेपासजायहैतुसुभसीहैनकीई
धकरहैहैसैरीयेतुमतेपुत्रकीईधकरहै१२यासंसारमेंकलनेनहीजीतीअोरनहीलघातेमागजाकोअैसेतुसा
रीमायाजाकरकैनहीजीतोअैसेकोनहैकोईनहीयासीतिविषयजेहैतैईनयेविषयकोजोवगवाकरकैनहीठाकी

अथअर्थचितसरवलनसहृतपतजंभरादुरवस्थानाहिसुखिवशानांनस्मरणायज्वरमरणादासायामपिस
कलअश्मलनिरसनानितवगुराकृतनामधोयानवचनगोचरारागीभवंतु११किंचायंराजधीरपातकाम
प्रजांभवाहिसीमासाशानईस्वरमासिवांस्वर्गापवर्गयोरपिभगवंतमुपधावतिप्राजापामर्थप्रत्यपोधनद
मिवाधनाप्रलीकुरं१२कोवाईहतेअपरतितोअपराजितोयाभाययाअुवासितपदवाअनाहतमतिविषयरावा
अनाहतप्रहृतीरनुपासितमहचरणाः१३यहदुवाचतवपुनरुदभक्तर्तितिसिमाहुनस्तत्रार्थधिपामंदावांनस्त
धदेवहेलनदेवदेवाईसिसाह्यंनसर्वान्प्रतिबोदमविदुवा१४

हेप्रहृतिजाकीअैसेकोनहैनहीउपासनाकीयेहैभरांतनकेचरनजानेंयावीतेतुमारीमायाकरकेमोरितहैभनजाकोनाकी
कोसवभांतिकीआसारोईहै१३हेवतुकार्यकेचरनवारेतुमहोतुमकोहमनेबुलायेअर्थमैहैबुधिजिनकीमंदरासैजेह
मतिनकोजोअपराधितायहमावरवैअैजोप१४अैसेगधग्लोअनकरकेस्तुतकीयेदेवतानमैअैनाभनैवहिनकी

राजकरकेकीराजेतुमारेनामतेवमारवच

भा. पं.
१२

26

ये जैसे जे रिख जति ने प्रमाण की पोते चंदन जिन के ऐसे जे भगवान सो दया सहित यत्न करत भये १५ अति रिखी लो सत्य है
वारा जिन की ऐसे जे तुम जिन ने दुलभ है सो मागो जो तुम यत्न करत भये के तुमारे समान वेरा होतु सो मेरे समान तो मेरी लो सो
मे अघुती यत्न पाते लो वतो हां प्रमाण को जो वन है वे क्यो उपनही लो कावेने हां स्नान को जो कुल है सो मेरी लो मुख है पाते १६ ता
जेयाना भि को मे प्रसन्न लाकर के अवतार लो चो पनी वेरावर को प्रेर कातु को मे नही देखुं ऐसे सने है मेरु देवी ता को पति जो

इति निगदेना भिष्यमानो भगवान निमेषर्षभो वर्षधारा भिवादिना भिवंदिन चरणः सदयमिदमाल १५ श्री भगव
वानुवाचः आरो वनाय मय्यो भवद्विरवितथा गोभीर्वरमसुलभमभिधाची तोय हिमुष्य आत्मजो मया सदृशो
भूयादितममालमेवाभिरूपाः कैवल्यार्था प्रित्तस्ववाचो नम्रवा भवितुमर्हती मयैव हि मुखं यत वीज देव कुलं १६
ततः प्राप्तीये सकल यावत्तरिष्यामि आत्मतुल्यमनुष्यलभमानाः इतीति श्रामयंता मेरु देवाः पतिमभिधायांत १७
भगवान् १७ वर्ति धितुस्मिन्नेवं विस्तु दत्त भगवान् परमर्षिभिः सगादिना मे प्रीय चिकीर्षया तद्वरो धायने
मेरु देवा धर्मान् दसेपितु कामो वीतरसना नाश्रमना ना मयरा मूर्धिमथिनां शुक्ल पातनुतनु वावतगार १८ इती

नामिता सौ यत्न करी के भगवान है सौ प्रंतर ध्यान को प्राप्ति भये १७ हे विस्तु के ही ये राजा परी क्षति ऐसे ता पत्र में परम श्रय ने
प्रसन्न की ये भगवान सो ना भिके प्रिय कर के लीये पम नरी है व से जिन के तपस्वी जानी है एक हं चारी तिन के जे धर्म

चतुर्थ सत पुत्र स्वराज्य तस्योपवर्षते यस्य राज्ये जनः सर्वसंतोसाः सन्तविहता १ चौथे प्रधाय मे सो है पुत्र जिन के ऐसे जे भि
षि भदेव जी तिन को राज्य वर्णन करे है जिन के राज्य मे सब रे जन संतो व करि के प्रा नंद क प्राप्ति होत भये १ श्री भगव देव जी कहै है राजा
या के प्रनंतर उत्पत्ति करि के हो प्रगट भये है भगवान् क्षण जिन के साम उपसम वेरा उपयुक्त मरा विभूती इन कर के दिन २ मे व ठ है प्र
भाव जिन को ऐसे जे भगवान् तिन ने प्रधान प्रजा बाखण देवता ने सब एषी पाल वे के लीये इष्ट करत भये १ या प्रकार व सो के कृति ने
जा को वर्णन की पोते ऐसे सो देह तेज प्रवाह उत्साह इन कर के प्रेम भये पाते पिता ने रिषि भय ह नाम की पो २ स्पष्ट करत जो ईद्र सो जि

श्री भगव उवाचः अथ तमुत्तये वा भिष्यमान भगवत्क्षेत्रं सामोपशमवैराग्यैश्चर्य महाविभूति भिरनुदिन मे
धमाना नुभावं प्रकृतयः प्रजा बाखण देवता आवनितल समवना याति तरां जप धुत स्पृह वा इत्यं व प्पणा वरी
यसा हत स्ते के न व ऊज सावने न श्रियाय सर्वय प्रैयी भ्यां च पिता श्रम न इति नाम चकारः तस्य हीद्रः स्पष्टमा
नो भगवान् वर्षेन ववर्षत दध धार्य भगवान् श्रम देवो योगेश्वरः प्रहस्यात्मयोगमायया स्ववर्ष मजना भना
माऽन्यवर्षत ३

न के वंड मे वर्षा न करत भये यह जानि के योगेश्वर भगवान् रिषि भदेव हासि करि के प्रप नो जो जे प्रे ना भखंडता मे वर्षी क
रत भये ३ श्री भगव देव जी कहै है ना भि जो राजा सो जे से पुत्र चाहे हो ते सो ही पुत्र मिलो जा के वडे प्रा नंद के घर कर के विहल
ये मेरे पुत्र है ऐसे की नीते मति जाने प्ररण की पोते नर क्तो क को समान धर्मी जिन ने ऐसे जे भगवान् पुराण पुरुष तिन ने
गद २ वाणी न कर के हे पुत्र है तात ऐसे स्नेह सूता उ करत वडे प्रा नंद क प्राप्ति होत भये ४ पुर के लोक देव के लोग ही मा
न प्रधान इन को पुत्र मे प्रनुराग जान के समे मे मयी हा की रक्षा मे पुत्र प्रभिषेक कर के बाखण न की गो द मे धर के आप मेरु

निपुनतपसमाधि योग इन कर के नरनारायण है ना मजिन कों ऐसे जो भगवान् वासुदेवतिन उपासना करि के जीवन मुक्ति को
प्राप्ति होत नयो ५ है पांडुवंस में भगवान् परीक्षित या ना भिके ये श्लोक गा मे है राजरिषि जो ना भिता के जो कर्म ता य को न पुस्तक प्रा
चरन करै है जा के श्रद्धा कर्म कर के भगवान् होत नये पुत्र ६ ना भितें प्रो र ब्रह्मण को न है जिने दक्षणा दिक कर के सजे ब्राह्म
ण न ते या के यज्ञ में अपने मंत्र बल कर के भगवान् कूँ दिषाय देत भये ७ ना भिके भगपीछे भगवान् रिषि भदेव

ना भिस्तय था भिलसतं सु प्रज श्रम वरु ध्याति प्रमोद मर विरु लो कं गङ्गा हा सरय गिरा चै रं गृहीत नर लोक स
धर्म भगवंतं पुराण पुरुष माया विलसित मति र्वत्स ता ते तिसा उरा गमु पलाल यान् परा निवृत्ति यु फा तः ४ विदि
ता नुराग मा यौर प्रकृति प्रन प्रदं राजा ना भिरात्म जं सम य सैतु रक्षा या मा भि विच्य ब्राह्मणे यूप निष धाय सह ९
मेरु देव्या विसा लायां प्रसन्न नि यु लेन तपसा समा धि योगे न नर नाराय ना ख्यं भगवंतं वासु देव उपासी नः ६
काले न तन्महि मान मवाय ५ यस्य रूपो ड वे य श्लो का बु दा हर ती को न तत्कर्म राज र्धे नी ने रत्ना च रे त्यु त्तान् अप १५
स्यता मगा घु स्य हरिः शुद्धेन कर्मणा ६ ब्रह्म णो न्य कु तो ना ने वि प्रा मं ल ए जिता यस्य वा ही धिा जं स दर्श या मा स १५

सो अपने खंड कर्म न को होत्र मानि के ब्राह्म कुल में विद्या पाठ में गुरुन कूँ दक्षणा दे के तिन सं ग्रा ज्ञा से के ति नि गृह स्थ न के
धर्म ति ने सिखाये वे के लीये श्रुति स्मृती इ नै क र्यों जो धर्म ता य प्रा प करत ई द्र नै ही नी जो ज यं ती ता में अपने समान पुत्र
उपजावत नये - तिन पुत्र न में जे ये श्रेष्ठ है गुण जिन के वडे जो गी भ रत जी होत भये ८ भिन के नाम कर के यह पं
७ न सपु ० ६ तिन य ३ नो पाव हार प्रो र स प्र बु धा प प्य लाय न ७ प्रा व हार ३ नु म न च म स कर भा जन य नो ना श व
त धर्म को दिषावन वारे महा भाग क लो म भये तिन को चरित्र भगवान् को महि मा करि के युक्त वसु देव नार द के सं वा द में
एका द स त्कंध में वर्णन करे गे ११ छोटे जे इ क्पा सी ज यं ती के वेदा पिता श्री प्रा जो क र न वारे वडे न म्र वेद के पठन वारे यज्ञ
मै सु भाव जिन के कर्म करि के श्रद्धा ब्राह्मण होत भये १२ भगवान् रिषि भदेव जी के से है सत्त त्र नि स नि ह त भई है प्रार्थन न

अथाह भगवान् यम देवः स्वर्ग्य कर्म होत्र मनु मन्व मानः प्रदर्शित गुरु कुल वा सो ल ध्व व रै र्गु ति निरनु ता तो ग
ह मे धि नां धर्मान नृ शि क्ष मा नो ज यं ता मि द्र त हा या मु भ य ल स ण कर्म समा ग्ता या प्रा त म भि पुं ज न् प्रा त्म जा
ना मा त्म समा ना नां शत जन या मा स - ये वां ख ल म रा यो गी न र तो ज्ये षः श्रे ष्ठ गु ण प्रा सी त् ये नै दं व र्धे भार त मि
ति व्य पा दि शं ति ९ त म नु कु सा वर्त्ता इ ला वर्त्त म ल यः के तु र्भ द्र से न इ द्र स्य क वि द र्भः की क र श्ति न व नू व ति प्र धा नः १०
क वि र्हरि रं ता रे स प्र बु धाः पि य ला य नः प्रा वि र्हे त्रो य दु मि ल श्र म सः कर भा जनः श ति भ ग्वा ति ध र्म दर्श ना न व
म हा भा ग व ना स्ते यां सु च रि त भ ग व न्म हि मो य व र्ति तं व स्यु देव नार द सं वा द मु प स मा य न मु पा रि द्वा ह ण य ष्या मः ११
यं वी यां स ए का सी ति जी यं ते यां पि नु रा दे स क रा म हा सा ली ना म हा मो त्वा य त्त सो ला क र्म वि श्र द्वा ब्रा ह्म णा व न्म व १२

की परंपरा जिन तें सुद्ध रूप आनं द को है प्रनु भव जिन के ईश्वर है जीव की सी नाई कर्म न कूँ करै है काल करि के प्राप्त भयो
धर्म ता य प्रा प प्रा चर न कर न जे न ही जानै है तिन कूँ सिखा मे प्रा प शं ति रूप रों करुणा कर के पुक्त है धर्म प्रर्थ प्रजा भोग
मोक्ष इन को विरोध जे सें न होत सें पर न मे लो क न हूँ शिखावत ये जो वडे न नै प्रा चर न की यों ता कूँ इतर लोक प्रचवते है १३

भा.पं.
१४

80

याद्यपि सब है धर्म नाम वेद नै करौ भागवत धर्म नाय आप जानें हैं हैं तो हज्रा सुणन संपूर्ण करै करै हैं साम दाम दंड भेद
नउपाय न करि कैं लोक नि को पालन करत नये १४ द्रव्य देश काल वयस प्रसाद करै नाना विधि जो उपदेसति न
रकैं पुत्र प्रे से जे सगरेय जतिन करै जैसी विधि हैं ते सैं सो वेर प्रजन करत नये १५ भगवान् स्वयं भदेव करै रक्षा कियो
प्रे सो जो खंड नाम को ईउ तय आपकैं प्रोर तैं कछु इच्छा नही करत नयों और की वस्तु कैं नही चोर करत नयों अपने भरना

भगवान् मय भसं ज आत्यंत त्राः स्वयं नित्य निवृत्तानर्थ परंपुरः केवलानं हनु भुवर्षि चरय ब विरीत वत कर्मणा
रभमाणः काले नानुगतं धरमा चरणो नो पशित यत्तत द्विही समुपशंती मे त्रः कारुण्य को धर्म धर्म शोः
काले नानुगतं प्रजानं दाम्ता वरोधेन गेह पुलोक न्यपय मुयत् १३ यद्यच्छीर्षणा चरितं तत हनुवर्षते लो
का यद्यपि स्वविदिनं सकल धर्म ज्ञां सुगुह्यं ज्ञातुं नोर्द्वितीय मार्गेण समादिभिरुपायैर्जनतामनुशास १४
द्रव्य देश काल वयः प्रदीर्घा विविधा विधौ द्वेषोपाचैतैः सर्वैरपि कृतुमिर्थयोपदेशां प्रात कृत्व इयाज १५ भग
वत मेण परिरक्षमाणतस्मिन् वषे नैक श्रम पुरुषो वा छत्य विद्यमान् मिवात्मनोऽन्यस्मात्प्रथमं च न कश्चपि
कहिंचिदचेहते नर्त्यनुसम्भवे विजुंभित त्नेहातिशय मंतरेण १६ सकल चिदृढ मानो भगवान् मय भो ब्रह्मा
वर्तगता जलधि प्रवर सभाया प्रजं निसामयंती नामात्मजान परिहृतात्मन प्रयश्रय प्रणय भरतु यंत्रितानपु
या शिष्ययन्त्रितो वाचः श्रुति श्री भगवते चतुर्थोऽध्यायः ४

जो स्वयं भदेव जीतिन में लण २ मै बहों जो सो हता विना प्रोर इच्छा न करि हें न भयो १६ सो भगवान् रिषि भदेव जी नहः
नै धर्म ना सय माय द्रव्य उपाय दान उपाय परम सुख तत्त्व द्वाता लक्षणा १ पाच भा प्रधाय भमा सधम कउप दशा
करैं पुत्र न कुं शि सा देन भये और सुख दुःख सहि वे के लीये परम तं सन को धर्म कसों सो वर्णन करै है १ अथि भदेव जी
कहै है हे पुत्र हो देह धारी न को यत जो मनुष्य देह सो या लोक में दुख के देन वारे जो विषे निन के नही है १ जे विषय विषा के
खान वारे प्रकरा दिवति न कूं हो है ताते यत देह दिवत ए के लीये है यात प करै है हय सु द्रोय है या सु द्रु दयत प्रनत
ब्रह्म सुख हो है १ हरि भक्त न की जो सेवा सो मुक्त को धार कहै है स्त्री संगीन को जो संग सो नरक को धार कहै है महा तन को

अथि भउ वाचः नायं देहो देह भा जां न लोके कृषान् काम नार्हते विदुजाये तपो दिव्यं पुत्र कायेन सत्त्वं श्रद्धे
द्यद्यस्माद्भूतो स्वात्वनत्वं १ महात्मे वां द्वारमाह विमुक्तैस्तमो ह्यं द्योषितां संगि संगं मत स्तै समचिन्ताः
प्रसांता विमन्त्रवः सुहृदः साधवो यो २ ये वा मयी प्राकृत सो ह दार्था जने सु देहं नर वार्ति के सु गहे पुजा
यात्मज राति मत्सु न प्रीतयुक्ता यावदर्थी श्रुत लोके ३

लक्षण कहै है समान है चित जिन के प्रशांत को धाजिन के नही सब के हृदय सदां चर के करन वारे २ मै परमेश्वर मै
कीयों सो हृदय सोई है पुरुषार्थी जिन के देह के दोल वे कूं हैं जीव काजिन के प्रे से जे जननिन मै धरन मै स्त्री पुत्र धन इ
मे नही है प्रीति जिन के लोक में जित नों अपनो प्रयोजन इत नोही है प्रर्थ जिन के ते महांत है ३ प्रमत जो लोक है सो इंद्र
न की प्रीति के लीये पाप है नाय करै है ना पाप ते यत देह के स को देन वारो हो है या ते पाप के कर वे कूं मै मलौ नही मानू ४
तव ताई प्रात्म तत्व कूं नही जानै तव ताई प्रज्ञान है भयो परान व हो है तव ताई क्रिया है ते हो है ॥

भा.पे.
१५

तवतीताईमनमैसोकर्मस्वभावहोहै जामनकरकेंसरीरबंधनहोहै ५ ऐसेमनहैसोकर्मकेवसहोहै आविद्याकरकेंदेवसं
तेंकर्महैसोपुरुषब्रह्मकाकरलैहै कवताईजवताईमेंजोवास्तुतामेंप्रीतनहीकरहै तवताईदेहयोगकरकेंमुक्तिनही
होहै ६ इंद्रीनकीजोचेष्टासोहुंहीहै अपनीनहीहै ऐसेविवेकीहोकेबुलीदेवहैं तासमैगयोहैस्मृतीजाकोंमूर्खगुंसे
जोजनहै सोमैधुनहै सुखजामें ऐसेजोपरनापपायकेंदः त्वहैतिनैप्राप्तहोहै ७ पुरुषकोस्त्रीकेसेगजोभावसो

32

नूनप्रमत्तः कुरुतेविकर्मायादिद्रियप्रीतयः प्राप्नोती नसाधुमन्येयतः प्राप्नोती यमसन्निपिक्वेष्टादः प्राप्नोती
देहः ४ पराभवस्त्वावद्वोधजातोयावान्जितासतः प्राप्नोती यावत्क्रियास्त्वावदिदं मनोवैकर्म्यं तन्मये
नशीरवेधः ५ एवंमनः कर्मवशात्प्रपुंकेऽविद्यायात्मजपथोयमाने प्रीतिर्नयावत्सपिवासुदेवेनमुच्यते
देहयोगेनतावन् ६ यद्वानपश्यत्ययथागुणं सत्त्वाद्येप्रमत्तः सहसाविपश्चित् गतस्मृतिर्विदितितत्रताया
नासाधुमैधुन्यमगारमजः ७ पुंसोस्त्रियामिधुनीभावमेतंतपोर्ध्वो हृदयग्रंथेमाहुः अतोऽतः सैत्रसु
तासवित्तैर्जनसामोहीऽयमहंममेति ८ यद्यामनो हृदयग्रंथीरस्यकर्मजवद्वेदः प्राप्स्यथेन तराजनासं

परिवर्ततेस्मात्मुक्ताः परयात्यातिहायहेतुः ९

स्त्रीपुरुषब्रह्महृदयकीगांठकरहै जामिधुनीभावतेंघरसेत्रपुत्रघनपारइन्करकेंजनकमेंमेरों ऐसेमोहहोहो ८
कर्मनकरकेंवधोहैदृढमनरूपहृदयगांठिसोजवसिधालहोहै तवयद्वज्जवमिधुनीभावतेंनिहतहोहै तवप्रलंका
त्यागकरहै १० मरअथकमकरमराकथातुन मरमत्तनकासंगकर मरगुणनकाकातनकर निरवरहोयः

सबकुंसमानदेवेहैपुत्रहोदेहगेहमें प्रलंका ममताइनकोत्यागकर ११ ज्ञानसास्त्रकोंप्रभासकरैं एकोतसेव
नकरैं प्राणइंद्रीआत्माइनकेप्रधेजीति आद्वाराखें ब्रह्मचर्यधारनकरैं प्रमादनकरैं वाणीकुंजीतें १२ सर्वत्रमेरी
भवनाजातैहोय प्रजनवपयंतैज्ञानसाधें समाधिलगावें धैर्यप्रयत्नविवेकइनकरकेंयुक्तहोके अहंकारजाकोनाम
हंसेगुरोमपिभक्त्यानुहत्यावितस्मयाहंइतिनिहयाचः सर्वत्रजंतोवसनावगत्याजितासघातपसेहानिह
ता १० मत्कर्मभिर्मत्कथयाचनितं मदेवसंगात्गुणकीर्तनान्मेनिर्वेदसामोयसमेनपुत्राजितासघादेह
गेहात्मबुधोः ११ प्रध्यातुयोगेनविविक्तस्वर्वाः यापारोह्यात्माभिजयेतसाध्वं स हृदयाहृत्तचरणासास
हंसंप्रसादेनयमेनवाचा १२ सर्वत्रमद्रावविचक्षुरोनानेनविज्ञानविराजतेना योगेनधुपमसत्त्वयुक्तो लि
गंविपोरेतु कुशलोत्तमारयं १३ कर्मशयंरह्यग्रंथिवंधंविद्ययासाहितप्रमता अनेनयोगेनयथोपदेसंभ्य

33

ऐसोजोलींगदेहनापनासकरैं १३ कर्मरहेजामेंरह्यग्रंथबंधनप्रधातेप्राप्तिकीयोतापजैसैरमनेंवतायोउपायता
करकेंसवशपाधीनकोंदुरकरकेयोगतेउपरामकोप्राप्तिलोय १४ मेरेलोकायवेकीहैंईयाजाकेमेरों अनुग्रहीहैं प्रयो
जनजाकेरासोजोपितासोपुत्रहैतिनैसिहादेहगुहसोसिधनकंसिधादेय जोधनकरैं मृदमूर्खतिनैकर्मलगावें १५
जैसें प्रांधरेकोंप्रडलामेडारके प्राखनवारी कोनसेप्रयुक्त प्राप्तहोवें लोभहैसो प्रापरीअपमैहैइष्टजाकी ऐसेहैं+

भा.पं.
१६

३५
असैकरकैहैं कामजाकौ परस्परवैरकरैहैं सुखकोजोलेषाताकेलीए अनंतजोदुःखताहिमरविनरीजानैहैं १६ ज्ञान
मानजोपुर्वसंसारदुखकौ जाननवारौ अविद्याकैवीचमैंपरोखबुद्धिनायहेवकैकौन असैहैं सोसंसारकं ग्रामेंडाहैं
जैसैंउभटचलोअधातापकोनरावतावै १७ संसाररूपजोसुप्राप्त असैजोलेकतापसंसारनेनछुडावैं सोगुरु
नरोय स्वजननरोय पितानरोय देवतानरोय पतिनरोई १८ यदमेरोसरीरनर्ककरवैमैंन प्रावैं मेरीइच्छाकरकैप्रग

पुत्राश्रियांश्रनयोयुर्वीमल्लोककामोमहनुग्रहार्थाः ईत्यंविमत्पुनसिष्यादततज्ञानयोजयेत्तर्ममदा
न अंयोजनं ननुजोर्थलभेत निपतयनस्य दशार्तिगते १५ लोकः स्वयंश्रेयसिनस्य दृष्टिर्योर्धीनसमीहेतनु
कामकामः अनोमवैराः सुखलेशहेतोरनंतरंदुःखंचनवेदमूढा १६ कस्तस्वयंतदभिज्ञोविपश्चितविद्या
यामंतरेवर्तमानं दृष्ट्वा पुनस्तंसद्युगः कुबुद्धीप्रयोजयेदुत्तमथगंयथाहं १७ गुरुरनसस्यात्स्वजनोनस
स्यात्पितानसस्याजननोनसास्यात् देवंनतत्सात्रियतिश्रुसस्यानमोचयेद्यासमुपेतमृत्युं १८ इंदूसरीरम्
ममदुर्विभारं तत्तंतिमेवदययवधमं पृथेक्षुतोमेयजधमं आरोहतोहिमामधमां प्रातुरायीः १९ तस्माद्भवंतं
दयेनजाता सर्वमलीपांसमसुसनाभं प्रतिशुद्ध्याभरतंभजघं शुश्रूषणां तद्भरतां प्रजानां २०

होइहैं अरमेरोहृदयरूपहैं जानत्वमेधर्मरहैं अरमेनेधर्महैंसोडरतेईपीछेकीयोहैं यातेविवेकहैंमोक्तंअविभ
भूतनमस्याविरुत्साअवृत्तिनतजगमरुतअवृत्तिनतवाधानयत्तुतअवृत्तिनतगार्धधरतअवृत्तिनत
नरादिहैंतेअवृत्ति २१ तिनतेअसुरअवृत्ति तिनतेदेवताअवृत्ति हंइअवृत्ति इंदितेसाहिअवृत्ति तिनतेमरादेवअ
वृत्ति तिनतेहंजाअवृत्तिहंस्नामैतेमैअवृत्ति मेरेहंअराहेतेअवृत्ति २२ हंअसुरानब्रह्मसमानभूतहंतायसमाननहीदे
खुव २३ जाहंअराहैअवृत्तिहंजोभोजनरीयोहैं नायमेरीभोजनरुखु तैंसैअनितोवमैभोजननरीरुखु मेरी

भूतेषुवीरुदवदुतमायेसरीरपास्तेषुसबोधनिद्याः ततोमनुष्याप्रमथास्ततोभूपिगंधर्वसिद्धाविबुधानुगा
ये २१ देवासुरेभ्योमघवत्प्रधानादृष्टादयोहंससुतास्तुतेषांभवः परः सोऽपविरंचवीर्यासमत्परोरंदिज
देवदेवा २२ नहंअरौस्तुलयेभूतमन्यसपामिनिप्राः विमनाः परंतुयस्मिन्निप्रदतंअद्वैतमश्रामक्रां
मंनताप्तिहोत्रे २३ अजातनरुष्टातिमेपुदाशीयेनेहसत्वपरमपवित्रशमोदमः सत्यमनुग्रहश्चतपस्ति
निष्ठाः शुभवश्रयत्रा २४ सतोपनंतात्परतः परस्मात्स्वर्गायवर्गाधिपतेर्नाकेचित् येषोविमुष्या
दितररातेषांमलिचनंमपिभक्तिभाजां २५

मूर्तवेदतेपालोभमैंहंअराकरकैंधारीनकरहैं जाहाअराहैंपरमपवित्रजोसत्वसोसमदससत्यप्रनुग्रहतपति
निष्ठाअनुभवयेगुरारहैंहैंतातेपरेअरकूंनहीदिखु ३४ सवनमैंपरेस्वर्गमोक्षइनकोस्वामीअनंतअसैजोमैतातेअ
लैंवेकीनलीकरै राजादिजनकीतोइच्छाकरैहैं निश्चितनहैंमोमैभक्तिरीकोकरैहैं २५ वेपुत्रोसगरेजपानीहैंस्वावर
जंगमतेमेरेलीस्यानहैं यातेनुमकूंसमानकरवेवेह्योअपरे पवित्रदृष्टिअरकैंसोई मेरोअजनवै २६ मनवचनदधि

प्रारंभीयनक्रोर्धनाकोसाक्षात्तमोकोकरनोयतीफलहैं मोकं प्रयत्नकीयेविनामतामोरूपजो काल पासतामेंधुखे
कंसमर्थनहीहैं २७ शुक्रदेवजीकृतहैं तेराजाप्रापसीधिसाखेहो परंतुलोकनसीसा हैवेकलीयें पुत्रनको उपदेश
हैंमहानभागपरमसुयसुदभगवान् ऋषिभदेवजीउपसमैंहैं सभाविनिनको निवृत्तभएहैं कर्मजिनकेमहामुनि
निनक्रंभक्तिज्ञानवेरागपरिनको लखामनेवारी परमसंसनको धर्मजायसिखायोचहैंहैं अपनेसौपुत्रनमेंजोठोपरम

सर्वीरिमद्रिस्तयावभक्तिअराणीभूतानिगधिसंभावितिव्यानपदेववितुद्रमिस्तद्व्यरंरामें २६ नवोचवो
द्विद्वररोहितस्पसाक्षात्तहंतमेंपरिवर्तीरंति विनापुमानपेनमरा विमोहातहतातपासाम्निविमुक्तसी
शेत २७ शुक्रउवाच: एवमनुष्यास्यात्मज्ञानस्यमनुसिथानिपिलोकानशासनार्थमराजुभावः प
रमसुदभगवान् शुभदेवउपसमसीलानामुपरतकर्मणांमहामुनीनांभक्तिज्ञानवेराजलक्षणां पारम
हंस्यधर्ममुपिप्रिहामाणाः सुतनयसुतमेयंपरमभागवतभगवज्जन परापनंभरतंधरदगीपालना
याभिधिंचस्ययंभवनरावोरवरतुषारीमात्रपरगत् उन्मत्तफगगनपरधाना प्रकीर्णकेशाभ्यातम्यारोपि
नाहवनीयोहंसावतीतप्रवचाज २८

भागवततरभक्तनको प्राप्तेरासेजिभरततिनैएषीपालवेकलीये प्रवसेषकरहैं आपधरमेसवधोंडहैं एकसरिमा
जसंगलैकें उन्मत्तसेकासहंस्वजिनके विधररहैंहैं केसजिनके आत्मा मेराहीहैंहोमभरवेकीप्रणिजिनो ऐसेकरषिभरेकी
नेलीकनभरकवालुहं परनुप्रापुपुतातभय २८ ततो २ पुमममस्वानमभवतरनक्रगमभक्तननकावा ३ इरान
मैयाजीजननमें ऋषिनमें प्राप्तेजनमें मार्ग २ दुष्टजननेतर्जनाकरीताउनाकीयो काऊनें उपरमुवकरदीनो कातुनें
उपरयुद्धदीनो पथरकीमारी कातुनेंविषाडारदीनो कातुनेधरडारदीनो कोऊप्राधोवायुछोडेहैं कोऊगारीहैंहैं इन
करकेपराभवकीयेतोउप्रपराधगिनैहैंसेवनकीमाधीवनकेतार्थकोपराभवकरैहैंहैं अपराधनगिनो कूटोयतुदेहतामेंअभि

जडांधमूकवधरपिसाचोन्मावकवदवधुतवेस्योभिभास्पमारोपिजनानांअसीतमोनवततसीवभवः २९
तत्रतत्रपुराग्रामाकरखैरवारसिविरहजयोधसार्थगिरवराश्रमादिवलुयथप्रचरायसहै परभूपमानो
मपिकाभिरववनगजतर्जनताउनावमेरतयीवनग्रावससइजा प्रहोयपुतेवातइतैस्वदविगरायन्तेवा
सतसंस्थानेरान्तिमनूहेतोपलक्षारोसहपदेशअनयानुभवस्वरूपेराखमरिभावस्थानेनासमारोपि
तारंसमामभिमानत्वात् प्रखंडितमनाः पृथ्वीमेकवनापरिवभाम ३०

वासीहैंदेहाभिभानीहोतीसोअपराधमानें कार्यकरूराकोजोअनुभवताकरिहैं प्रखंडितहैंमनजिनके ऐसेजोअरुषीभदेकी
सोकीबलेईभमतभरा ३० अतिसुष्ठुमारवेचरणवक्षस्थल उदरजुजात्रंथागरो मुखराअंगतिनकीजोरचनासोहैंजिनकेसुभव
करहैं सुदरसभावतेहैंहैंतसनजामेयु ऐसेसुखजिनको अमलहलसेविसालसीतलनारेअरूराऐसेहैंनेजिनकेसुदरकपि
लकरराकठमहैमुसियाजामेएसीजोमुयनाकेविलासकरहैं परकीजिस्त्रीतिनकेमनमेकामकधारनकरहैं औरकुंडललट
हैंहैंकुटलजटाजिनकीवंधिगई ऐसेजोपरेकेशतिनकोहैंवडोभारजिनकेअवधतहैं ३१ सोभगवानयालेकयोगप्रतिहूल
हेयतभए ताकीप्रतकीपासनहै यत्नजानकेअजगरवतीकरी सोवतरीभोजनकरैजलिपीमैहैंत्याहैं विद्यामूककरहैं: विद्यामैहैं

ही लोटे हैं ता कर के नरगये हैं देह तिन के तिन को विश्वासी सुगंधता कर के सुगंधीत प्रेमो जो प्राचरन सो चाली सको राताय
सुगंधित करत भयो प्रेमो सुगंधो प्राधन को जो प्राचरन ता कर के चले हैं ठाढ़े होय हैं वे ठे होयें सो मैलें को प्राधन की सी नार
पी मैलें रवाय विश्वा करे ३२ प्रेमो प्रनेत्र चरित्र करत वल्य जो नो ह्यता वे देन वारे निरंतर जो प्रेम वडो प्रानंद सो हें स्वरूप जिन

अजि सुखार कर चरणौ र स्थल विपुल वाहं सयुगल वरना द्यवयव विष्वास प्रकृति सुंदर स्वभावता ससुखो
नवन निलहलायमान सिधिरतारारुणापतनयन रुचिर सहस्रभगकपोल करी कर नाशो विमल स्मीत व
दनमतो सवेन पुरवनता नां मनसि सुसुमिसरासन मुपस्थान परागवलवमान कुटिल जटिल अपि सके भ
र भारों वभूतमलिन विजसरी रे राग्रत अवीत इवाहस्यतः ३१ यस्मिं वाचसभगवान् लोक प्रीयं योग्यस्या द्वा मतिः
पमवा कुरास्तमति क्रिया कर्तव्यं न त्सुत नितवन मां जग रा मा स्थित रायान एवा प्राति ति पिवति स्वाहस्य व मेर ति
हृती तस्म चेष्टमान उचरति प्रादि ध्ये सो न स्यत्या परिपुष्टमि सौ गंध वा पुस्तं देश योजनं समं ता सुरभि चार ए
वंगो भगका कचर्य पाहं स्ति वं ना सीना का कगो भग चरितः पिवति स्वाहस्य व मेर ति स्म ३२ इति नाना योग चर्चा चरण
भगवान् वल्य पति र्द्विभो उ विरत परनु मरा नं दानु भव आत्मनि सर्वेषां भूतानां मात्मभूतः भगवत वा सु देव प्र
त्मनो उवधाय ना नतरो ह्म भावे न सिद्ध स म स्तार्थ पर प्रणी यो जै स्वयी रा विहाय समनौ जवांतरधान परकाय प्र
वेशा घर गुरा ही नय द्वा यो यगता नि नां ज सान् पर र्द्वये नाम्य नं दत् ३५ इति श्री भागवते पंचम स्कंधे पंचमोऽध्यायः

पराय द्वा न प्रवश कर ना ह्म पस्त द्वा वारे ३३ इति श्री भागवते पंचमोऽध्यायः ५ यद्येतीना निमानस्य देह ताग क्कानि धा प्रदहं तं द्वा ग्निं यः पप्रपन्नो पन पप्रपतिः १ छदे प्र धाय मै लो
न नयो अजि मान जा को प्रेमो जो रिष भ देव तिन के देह को जो ताग ता को को जो क म सो वर्ण न करे हैं जो सिधम देव ज रावता जो अग्नि ता
हि देय त नये १ त हां रा जा प्र छे हैं हे भगवन् जो आत्मा राम है योग ते प्र गट न यो तान ता कर के नरगये हैं कर्म विज जिन के तिन के आत्मा
त प्राप्ति नये योगे प्रवर्तते प्राप्ति नये फिर से स के देन वारे ही वे कू जो पन हि हो है १ अक देव जी ता को उतर दे है हेरा जा ते नें सांच कही

रा जो वाचः ननु नु भगवन् आत्मा रामा एण योग समीरता ज्ञाना निवर्जिन कर्म वी जानां योगै प्रवर्था पुनः केषा दानि भवि
जुर्महति य द्वा यो यगता नि १ स्तुति रुवाच सत्यमुक्ते चित्ति त्वा रा केन सो उ द्वा विष्मं भव स्थान स्य सकि रात इव से ग छ ते
अथा चोक्तं न कुर्यात् कर्हि चित्तरयं मनसि एन वा स्थिते यदि शुभाचिरा चीलं चत्कंदत परो श्वरं २ नित्यं ददात कामस्य छि
द्रं त मनये डरयः योगिनाः कृत मै त्रस्य पत्न्यै वयः श्रुती ४ कामो मनुर्महो लो म प्रो क्त मोह भवा द्यः कर्मबंधश्च यन्म
तः स्वाकुपी न्को नु त दुधः ५

परं नु बुद्धमान है ते च चल जो मन ता को विश्वास नही करे हैं कैसे वधि कहे सो पकरे जे मगति न मै विश्वास नही करे हैं प्रथवा
मग है सो पकरन वारों जो वधि कता मै विश्वास नही करे हैं २ तै से क ह्यो हैं च चल मन ता मै विश्वास नही करे हैं जा विश्वास नै बहुत का
ल को संचय कीयो महा देव जी को तप सो मोहिनी रूप देव के वरि क गयो १ विश्वास करन वारों जो जोगी ता को जो मन सो काम को छिद्र
ता इति तप दे है काम को पी एने वैरी है तिन को छिद्र दे है जे से विभिचार नी जो श्री भिन्न कं अव का स दे कें प्रपने पति के ना सक रावें
तै से मन का मादिक कर के योगी कं भव कर वें हैं ४ वैरी को न से है तिनै कहें हैं काम को ह म हलो न शो क मोह भय इन तै प्रो रि तै के वैरी
हैं मन तेरी कर्म बंधन हो है ता ते को न जान मान मन क प्रपने आधौ न माने ५ अखिल लोक न के पालति न के मंउन ज उग्र व द्त

कौंसेवेष्टाभावाचरनप्रनेकप्रकारकेतिनकरकेनहीलखोहे भगवतप्रभावजिनमेंयोगीनकंदेहछोडवेकौंजेप्रकाशनापुसि
त्वायोचारुत अपनेदेहछोडिवेकीइच्छाकरत आपनेपरमात्मामेंएकभावदेखतदेहाभिमानकेयोगकरतभर ६ प्रेमछोडोहेप्र
भिमानजिनने तिनकंदेहप्रभिमानकेआभासकरकेयोगमायाकीवासिनाकरिकेंएध्वीमेंडोलनमयो ७ कौंजदेसवेकदेहा
कुटकाहिएकरणाटकंदेष्टातिनेआजसमाज्जातभर कुटकाचलनेउपवनमेंमुखमेंकौंथोहेपथरकौंरजिननेउन्म

प्रथेवमरिविललोकपालललाती कितसणैजउवदननसवेष्टाभावाचरितैराधिलस नभगवत्प्रभावयोगीनासां
परायविधिमुनिशिसयन्त्रकलेवरीजहासुरात्मयाआनमसंयवहितमनधीमरभावनातीसमाणउरतानुर
तिरूपररामः ६ तस्यहवाएवमुक्तलिगस्यभगवतज्ञप्रनस्ययोगमायावसानयादेहमाजगतीमभिमानानासन
चक्रममाणः ७ कौंजवेककुटकानुदासिएकरणाटिकानुदेष्टानुप्रदष्टयोपगतः कुटकाचलोपवनप्राप्तेकता
प्रपाकवलउन्माहृदयमुक्तमूर्द्धजोउसवीनएवविचार ८ प्रथसमीरवेगविधतवेखविधयणजातोप्रसावान
ललावनमालेलिहानः सहेनदहार ९ यस्याकिलाउचरितमुपाकएयो कौंजवेककुटकानोंराजार्हनामोप
शिक्षाकलावधर्मउत्कषमाणभवनयेनविमोहितः स्वधर्मपथमकुतोभयमपहायकुपयपापडमेसमेजसेनि
तसेविस्वररहेहेकेशजिनकेअसेविचरतभये तापीछेपवनकौंवेगताकर कैरपायेजेवांसजिनकोजोसंख्यनतातेभयो
उगजेहावानलसोवावनकुंजरावततिनरिषिमदेवजीकुरितैसहितजरावतभयो ९ तिनरिषिमदेवजीकोजोचारित्र
तायलोकनसंस्तुतिजरिकें कौंजनवेककुटकादेसनकोराजाप्रार्हणजाकौनामसोलोकनसंसीखकरिकेंकालियुगमें

जापायडकारकदारकाध्यानमाहृतकायमनुष्यनमनाचआपनाकारककायासाचाचारनकारकहानदेवतानकेअपराध
करनवारेकुसितवतनिनेअपनेइच्छाकरिकें जरणकरिकेंआनकरिकें प्राचमनेकरिकें केशानउखारिकें प्रधर्ममेवहनअ
सोंजोअलियुगताकरिकेंनएकरीहेबुद्धजिनकीवेदेजाअणयज्ञपुरुषहरिमक्तिइनकौंदूसनकरनवारे असेनुहोतहोय
गें ११ तेप्राजकाजभईनिजलोकयात्राकरिकेंहेविश्वासजिनकोतेप्राप्तोनरकनमेंवदेगें जैसेप्राधरेगिरहे १२ परजो
अतारसोजोगएकरिकेंवापिअसेजेलोकनिनकुंमोतमार्गप्रियायवेकैलीयेहे तिनैरिषिमदेवजीकेगुणनकेजेष्टोके

येनहवावकलौमनुजायसहंदेवमायामोहिताः स्वविधिनियोगप्रोचचारित्रहीनादेवहेवनान्ययवतानिनि
जनिजेष्टयाग्नानास्नानाचमनाशौचकेशोपलचनादीनिबलिनाधर्मबहुलेनोपहेतधीयो ब्रह्मब्राह्म
णयज्ञपुरुषलोकादिद्वयकाप्रायेणभविष्यति ११ तेवस्यर्वाक्नयानिजलोकपाभायांप्रधपरंपयाश्चेत्तास्त
मस्यधस्यमेवप्रपतिष्यति १२ अथमनारोराजसोयुक्तताकेवल्योपशिपाथीः तस्याउगणान्स्त्रोकगायती १३
अहोनुवः सप्तसमुद्रवत्याक्षेपुर्वेष्वधिपुण्यमेत गायतियत्रत्यजनामुरादेकमीणभद्राएवतारवति १४ ॥
अहोनुवंप्रोयशासावदानः प्रयवतोयत्रपराणुराणः कृतावतारः पुरुषः सप्राद्याश्चचारधर्मयदिकर्मतेनुं १५ ॥
कौन्वस्यकाशमपरोउगछेअनोरथेनास्यभविष्ययोगी योगयोगमायासहयत्पदस्ताहसनायेनकृतप्रयत्नाह

तिनैगामैहे १३ सप्तसमुद्रवतीजोएध्वीताकेजेदीपखंडतिनमेंयहभरतखंडअधिकपुंन्यहै जहांकेलोकभगवान्कैमंगल
कर्मप्रवतारतिनैगामैहे १४ अहोप्रियव्रतिकांजोषंससोयसकरकेअदिहै जावंसमेंपराणपुरुषप्रवतारलेतभये औरमो
हकोकारण असेजोधर्मताइआचरनकरतभये १५ रिषिमदेवजीकोजैदिसातायमनोरथकरकेहूओरयोगीकोनहे
जोप्राप्तहोइ जोयोगीअणमादिकसिद्धितिनेचाहकरहेजिनकेलीयेजतनकरहेतेसिद्धितिनेरिषिमदेवजीकुरितैत्यगके

इति षष्ठोऽध्यायः ६३

वर्तस्वभावात्तस्मिन्
इतिषष्टोऽप्यष्ट

विश्वामित्रः

43

शत्रुविघ्नः ३

नाकरबैपूजाकरतभये. ५

प्रवर्तमानजो नानाप्रयोगनामैरची अंगुलीयातिनमे अर्धजो लीया प्रलधर्मजा कौ नानतापपरिहंस्ययज्ञपुरुषसरे देवतानके
हैं चित्तजिनमें ऐसे जे मंत्रतिनके प्रथम द्वादश देवतातिनके निया मिक साक्षात कर ता भगवान वासुदेव तिनसे भाव
ना करत अपनो जो को शालता कर के सीरा भरतें रागादिक रासैं भरतजी हां सरा नैं अर रा की रा तव्य तिनमें यज्ञ के भज
न करन बारे देवतातिनमें भगवान के अंगन करन बारे ध्यान करत सजत भरा है या प्रकार कर्म की श्रद्धा करि कै श्रद्धा अंतः
स्वरन जिनको ऐसे जो भरतजी तिनकी जो भक्ति दिन २ में बढे तें वेगजा को ऐसे भगवान वासुदेव के विषे लोभ नई जो भग

संप्रचरतु नाना पागे युविचरती गलीये सुपूर्व यत लीया प्रलधर्मजा कौ नानतापपरिहंस्ययज्ञपुरुषसरे देवतानां मंत्रा
रा मर्थनीया मन्त्रया साक्षात कर पर देवतायां भगवत वासुदेव राव भाव यथमान आत्मने पुन मरित कथा पोर विधुर्
युभिर्ग्रीत्यमाणेषु सयजमानो यज्ञभाजो देवास्मान् पुरुषावयवेधम्य ध्यापान ई एवं कर्म विष्ठा विद्व सत्य सांत ह
दया कास सरीरे हस्तरा भगवति वासुदेवे मत्ता पुर्व रूपो घल ह्मरो श्रीवः सौ सुभवन माला रिदरा हादिभिरुपल
क्षिते निज पुरुष हस्ति विनिना मात्मने पुर्व रूपे रा विरोचमाने उचे सरो भाक्तिरनु हने मे घमान रया जा पाते ७ एवं वध
पुन सत सपर्यता वे सित नियोणा वसरो धनुज मानं स्वत नये भोरि कथं पितृपैता मरं पथा हायं विभज्ज स्वयं सकल संपुन
क्रेता स्वनि क्रेता सुलसा श्रमं भयमः प्रजाः यत्र यवा व भगवान् तरिर पाप ताना निजनाना वत्सलेन संनिध्याप्यते इष्टा रूपे रा ॥

वान के सैं तैं जीतर हरे में प्रधर तो हैं मत्ता पुर्व रूप तें श्रीवत्स कौ सुभं मशिवन माला चत्र ग हाई न कर के युक्त नार हादि कन के रूप में
लिखे सैं तें दे पुरुष रूप कर के अपने मून में प्रका सैं तें ७ ऐसे स र जा के ल जा र वर्य पर्यन रा उप कर के राज की समा मिजा नि के प्रा
जरा आश्रम न कजा तव्य नातिन १७ आर कृत्वा च न ज न ज असा ज त र गा न के क करान न क वृ च क न रा ७ ड का ला पा व व १६
वा स्थान में जो अपनो आश्रम ता के उपवन में प्रवैले भरतजी नाना प्रकार के फल पत्र तुलसी ब्रं ह मूल प्रल इन कर के भगवान को
आराधन करत डुर भई हें विषय वासना जिनकी बडो हें उपसम जिन के सो बडे प्रा न ह कौ प्रा मिता भरा १० ऐसे निरंतर हर की
सेवा कर के भगवान में बरो जो प्रनुरागता के भार कर के को मल जो हरो ता में सिध ल नये तें प्रा न ह के वेग कर के हरे प्रधर भरा हें
रोमाच जिन को समूह जिन के उलं हा कर के प्रवर्तनयो प्रेम को प्रपु पात ता कर के रुको हें इष्ट जिन की प्रे सैं तैं ने व जिन के पा प्रकार

यज्ञाश्रमपदास्तु भये तो नाभिर्दृष्ट चक्रे श्रकनरी नाम सरस्वरा सर्वतः पवित्रीकरोति ९ तस्मिन् वाव किल सरा क
लाः पुलराश्रमोपवने विविधिकुसुमक्षिसलयतुलसीकां बुभिः ब्रं ह मूल प्रलो पग रें अ स नीत मानो भगवत आराधन
विविध उपरत विषया भिलाष उपवतो पसमाः परा निर्वृत मवाप १० तयेत्यम विरति पुर्व परवर्ष या भगवत वर्द्धमाना उ
राग भरदुत्त दयशो धित्यः प्रहर्ष वेगे नाम्म सुद्विद्यमान रोम पुल क कुल क औ लं ह प्रवृत्त प्ररा प वा ष निरुद्धा मो नो व
लौक नयन रावनजर मणा लरा चरणार विधानु ध्यान परचित् भक्तियोगेन परिसुता परम्भा लहा ग भीर त ह्य ह व ग रा ध

अपने रमण भगवान् तिनको जो चरणार विंद ता कौ निरंतर जो ध्यान ता कर के बडो हें भक्तियोग ता कर के व्याप्र परमानं ६ पा में प्रे सो
जोग भीर ह्य रूप हवता में डूबी तें बुद्धि जिन की प्रे सैं जो भरतजी सो करी जो भगवत सेवा पस्मरन करत नये ११ प्रे सैं धारन की
भगवत चत जिनै भगवत कौ प्रो डू हें त्रिकाल स्नान करतें ता सैं भीजे के सतिन की वद ग ई ज रा जा के समूह कर के प्रका समान हें स
जै की जो रिचा ता कर के सूर्य मंडल में विराजै हें प्रे सैं जो भगवान तिनकी उपासना करत यरु बोलत भरा १२ १२ १२ १२

भा.पं.
२२

प्रकृतीतेपरैकर्मफलजौदेनचारौसूर्यदेवकौतेलैजसौमनकरकैयाविस्वकौस्रजनभयौ प्रेरपाविस्वमैअंतरयानीरूपकरकै
प्रवेशकरइष्टाकरतजोजीवतायविच्छातिकरकैपालनकरकै मनुष्यनमेरुहै असेजोबुद्धीताकीजोरिगननापदेवताकेव
मसरगाप्रामिभरहै १३ इतीश्रीपंचमैसप्रमोधापा ७ अथभजतोविस्नुंनस्पकर्मनरायतरारसाप्रशक्तस्यजानमेरात्व
मीपते १ प्रारमीअध्यामैभगवानकोभजनकरहै असेजेभरतजीतिनकौकर्मतरतमगवालककीजोरसाताकीप्रशक्त

46

इत्यं धृतमवदुत राशोयाजिनवाससानुसवनाभिधैकाईद्वपिसुखरिलजराकलायेनचविरोचनानाः सूर्यीची
भगवतंतिररणापुसयं उज्ज्वलानुसूर्यमंडलेभपतिवन्तेनदुलोवाच १२ परोरजः सवदुजानवेदो देवस्पमोर्गीयत्
सोहजजानसुरेतसाह पुनराविस्वचयेतंसंगधारांनसिइंगिराममः १३ इतीश्रीभागवमेभरापुराणोपंचम
स्त्रंधेसप्रमोधापा ७ शुक्रउवाचः राकहातुमरायासुताभिधैकनेयविक्रावस्यकोहंसासरमधिग्रणोमुतु
तेत्रपमुहकांत उपविवेश तत्रहाराजनुरिणीपीयासयाजलासयाभासरकेवोपिजगामतयापेपीयमानउद्वे
तावदेवाविदुरेरावदतोभगपतेरुन्ताहोलोभभयंकरउदयतत् १

संतिररातोतभरायस्ववरीनकरहै १ हपयापिष्टुतः संगयतनापेवयोगिना इतीप्रदरीयन्ताहभरतसैरापोषरां २
कयाकरकैकीयोजोसंतजनसंगजोगीकंपातब्रह्मेलीयेरौहै यद्विद्यायवेकैलीयेअहदेवजीतिररापोषराकरहै ३ राके

गइहयासजाकोअसाजोहिरणीसोभयतनसोभइहमभइभागनानहामतराचाहअसाजाहरणाताकाभयकमार
गर्महोसोयोनिनोनिकरकैजलमैगिरतभयौ वालककौजोहोवोनहीकौधैरवोभयखेदइनकरकैप्रातुरअपनेलहडे
तेनिकरगईहिरणीसोकोईपर्वतकीगफामैगिरपरी गिरेपीछेमरगई ३ सोजोहिरणीकोवालकप्रवाहमैवह्योग्रायोः
तायदेवकैराजरीधियोभरतसो कपाकरकैउठायकै अपनेआश्रममैलैग्रावनेमये ४ प्रोरजानीकैयहवालिकमेरो

तमुष्टुत्यासामुगवधूः प्रकृतिंविक्तवाचकिंतनिरीक्षणसुतरामपिहरिभयाभिनिवेशायग्रहदयापारिप्लवदधि
रगततषाभयात्सतुसैवोचक्राम २ तस्याउत्पत्तित्याग्रतर्वत्माउरुनयावगलियोनिनिर्गतोभः श्रोतसिनिघयात्
तत्प्रसवोत्सर्पणमयत्वेदानुरास्वगणेनविपुन्यमानांक्रसांचिद्वर्षीकृष्णमारसतीनिययातप्रथममारचः ३ तत्वे
एकुलंकुंठपणंश्रोतसाः नृस्वमानमाभिधिसायंविबुंधुरितुकपयाराजैधिभरतप्रादायमृतमातरामिसाश्रमपदा
मनयत् ४ तस्यहवाराणकुणकैउधैरेतस्मिन्कृतनिजामिमानस्याहातुस्तस्यवणपालनलालनप्रीणनउम
धानेनिम्नमियमोः पुरुषपरिचयीदयराकैकैपाः कृतिपत्येनार्हगणेनविपुन्यमामाः किन्तसर्वेवोदवसेन् ५ अ
होवतायंहरिणकुणकः कपणईश्वररथेचरणपरिभ्रमणरयेणस्वगेणसुहृदभ्यः परिवर्जितः धारणंचमोपसा
दितोमामेवमानापितरोभ्रातृजानीयोथिकांश्वोयेययनान्यंकनवेदेमपतिविरुद्धअग्रतरावमयामत्तराय
णस्पयोषणपालनलालनमनस्सुपनाजयेयंशररापोषेहादोषविदुषाह

मपतैव्याकुलहैइदयजाकोनदी

ईवेटाहै असेअभिमानकरतदिन २ पासलायेचरामेहै ल्यारीकुताननेरहाकरहै पूजामेमुखकौचुमनकरहै
असेजोवापाकनईताकरकैहरिकीसेवाकौनियमराक २ नित्यष्टतभयोंकोईदिनमैसवनैमष्टतभयोंमृगवालक

हिर

५

नूनं ह्यार्याः साधव उपसमनी लाक्ष्यं सुहृद एवं विधार्ये स्तार्या नपि गुरुतरानुपे संते ७ इति कलानुषंग
 आसन्नशयानाठनस्थानाशनादिषु सहमगं वडुनास्ते दानुवद्ध हृदयं प्रासीत् ८ कुसकुसमसभिन्नलास
 प्रलमूलोदका न्याहुरिष्यमाणो वृक्षपाला वृक्षादिभ्यो भयमाशंकुमानो यहासत्तरि साकुणकेन वनेषमावि
 शति ९ पथिपुचमुग्धमविननेद्यतत्र विषकमतिप्रयत्नरहृदयः कार्यस्यात्स्केधेनोद्वहति एवं मुत्संगे उर
 सिवाधायोपलालयन्मुदं परमा मवाय १०

49

इष्टमैताके प्रपराधकूनदीगिनकैस्वजनकीसीनाईकहाग्रावैगो १३ कल्यानकरिकै प्राश्नमने उपवनमै घासचरै
वनेनाकीरहाकीनी प्रैसोंजो बालिकतायकहा देखूगो १४ लपारीकुजासूकरादिकसिंहादिकतेकहावाकौखाइ
गयेकहाकोनखायगये १५ सगरेजगतकेकल्यानकरवैकौहे उदयजोकोवेइत्रयीरूप प्रैसोंजोसूर्यसोअ
स्तहोइहे परमगवधकी धरोवरसोंनग्रावतनयो १६ १६ १६ १६ १६ १६ ॥

नही कीयो तै पुरा पजानै प्रे सो जो मै ता के निरारा राजा को जो कुमार सो नाना प्रकार के सुंदर देव वे मै प्रावै प्रपने मरुवाल क
के धिने होता करवै प्रपने न को जो दुख नाय डर करत यता प्राय के कला सुख हे यो १७ काल समै रुही समाधि करवै मरे
है ने ज जानै प्रे सो जो मै ता के निरार आय के प्राण प को प करवै पा सो जल की जो खुरता की सी नाई को मल सी जन के प्रग

निम्नोचति भगवान् सकल जगत् हो मोदय प्रपात्ता मायापिय मन मगवधु ना स प्रागृष्टि १६ अपि स्वदक्षत
सुखल मांगस मां सुख पिप्यति रिराराज कुमारो विविधि सुचर द्दीनी यनि ज दार क विनो र संतो वं स्या नामप १
नुहन १७ लेख कायां मां मया समाधिना प्रामो लिख ह सं प्रेम सं रं भेण च कित च कित प्रातः पखि ह प रूप विषाणा मे
रालु रती १८ आसा हित विषवर्ति छिद्रयते मयो पिल धौ भीतः स पद्य परत राज कृषि कुमार व ह्वसित कर ए
कलाप प्राप्ते १९ किंवा परे आचरत तपस्तपस्वि गानया परि यम वनिः स विनय ह्वस्यारत नयन रस भग शिव
तमाखिर खुर पर पंति भद्र विरा विधुरा नुर स्पष्ट परा स्पम मद्र विरा पद वी स च यं तात्मा भं च सर्वतः द्युत को न
कं दिजा बां स्वर्गो प वर्ग कामानां देव जयनं करोति नि इती वधु धा विल प्यो साय वति निर्ग द्यत तपुर वात भूमा गो प ल भ स क

भागतिन कर के मेरी पीर जाय खुजा मनो १८ पूजा के लीये धरे रा सै जे कुसा मुल लती ने हांत न तै डर कर मोत व मै डाह तौ
न न को को विही वाल क की सी नाई निश्चल है ई ईजा की नली की यो है उपम जाने प्रे सो रति तो १९ प्रेत प स्त्री प

ए प्रे सो जो मै ता को मग माल क को मार्ग ता य वे ता मै है सब प्रो रते को ति क कर है स्वर्ग मो स की इ धा कर है प्रे सै जे स रं रान
को यत्र की भूम कर है २० चंद्र मासे मग के प्राकार कलं ब्रू देव के संभव ना कर है यत्र जो भगवान चंद्र मा रै सो सिल के भये ते
मरी ए है मै या या को मेरे प्रा प्रम मै ते भय है ग यो मेरो मग वाल क ता प गो र मै धर के पालन कर है चंद्र मा की किरान को सरी

अपि सौ खिद सौ भगवानु दुप हरे नं मग यती ययाति मत्मानं रं मग वाल कं स्वा प्रम परि भय मनु सं पया सुपरा जन
वत्सलाः परियात २१ किंवात्मज विस्लेष ज्वर हव ह्वन सिखा निरूपत प्यमान हृदय स्थल न लिखं मा मुष मत्त म
गीत नयं शि शिर शांता नुराग गुरा तीत निज वदन सलिला मत्त मय ग भस्ति भि स्वध पती ती च २२ राव धर मान म
योरथा कुल हृदयो मग दार का भासे न स्वार ह्वम री रा योगारं भरा तो विभं सितः स योगत या प सो भगव हारा धन ल
हृरणा च कथि मित रथा जातं त रयेण कुरा क प्रा संगः सा सा नि श्रेय स प्रती प क्षत या प्रा कु पर त्त ड स ज नु वं गे रणा
विग रा पुत प्रात्मान म वि र वा सु विलं दुरती ह म काला कराल रं भ स प्रा प य २३

को सुखता य पाय के क है पुत्र के वियोगि कर के भयो जो ज्वर सो ई भई प्रजिता की ज्वाला न कर के ज र है हृदय रूप स्थ
ल कमल जा को प्रे र दे यो लो मगी को वेरा जानो प्रे सो जो रं ता य चंद्र मा सो सीत ल शांत प्रनुराग कर के युक्त प्रपने म
खता को जो जल सो ई भयो प्रमत्त तन्मय जे किरन निन कर के ता के कर प्रांत कर है २२ प्रे सै धर मान जो मनोरथ
ता कर के व्याकुल है हृदयता को मग वाल क को प्रे सो जो मार ह्वम री ता कर के योग के प्रारंभ ते भय होत भए

भा.पं.
२५

भगवान् के प्राराधन ते भय नये प्रार प्रकार के सेवने प्रपनी जात को नही लीला को वाल कता में संग करत नये सासा
त श्रेय को कल है यहिले छोड दीपे पुजा दिव जिने विघ्न कर जे नय भयो ते योग को प्रार न जिने को राज रिष नाग वतः
भरत जी ति न कुं हूँ दो रिरा वाल कता को पोषन पालन लालन के से संनय है जाके संनय कर करे शपनी चिं जान करत भयो
तित नेरी काल में तीवरा जा को वेग दुरन करो जाई प्रे सो मृत्यु को समय प्रावत भयो २३ वात समय अपने निवृत्त वेगो रि

तदानी मपि पार्वर्तिन मात्मज निवाचु सोचंत मभिपीक्ष्मणो मग्न रावाभिनिवेशीति मनी विसृज लोकमि
मंसह मग्नो राग लेवरं सतमनुममृतजन्मानुस्मृती रितरवन मग्न शरीर मवापा २४ तत्रापि हवा आत्मनो मग्नत्व का
रां भगवदसाधन समीक्षानुभावे नानुस्मृत्य मग्न मनुष्य मान आस प्रहो कथं भयो मात्मैवता मनुपयात् यवि
मुक्ति समस्त संगम विविक्त पुन्यारारण्य आत्मवत आत्मनी सर्वेषां आत्मना भगवति वासुदेवे ननु भ्रम मन न
संकीर्तन भाराधनानुस्मरण भियोगेनास्तन सकल पा मेन कालेन समावेसितं समारितं कास्मिन् मनस्तनुपम

रा वाल कता य पुजा दि की सी नाई सोच करे हैं नाय हे है हैं मग मै ली ल गये मन जिने को प्रे से जो भरत जी सो मग
वाल कस सित यत हेर नाय छोडि के मग शरीर को मास होत भय जे से प्रार सधुत लोक प्राप्ति हो है के से भरत जी
गवान वासुदेव तिन में अवरा मन न संकीर्तन प्राराधान स्मरण ईन मै जो प्रशानी ना को मग वाल क के पीछे वति जात
भयो २६ प्रे से गु प्र की पोते निर्विह जिने न भरत जी सो मगी माता है नाय छोड के मगवान को प्रेर से उ प सम सी ल मु
निगरा तिन कुं पारो पुलस्त पुलर को आश्रमता तिक लिंजर पर्वत ते आवत भय २७ ना आश्रम मे काल को पेडा है रे
हैं संग ते डर पत भय प्र के लेते सखे पतौ आन वीरु धन कर के हेर को निवीर करे हैं मग हेर को जो जो करन ता को जो

इत्येवं निगूढ निर्वहो विसृज्य मगी मातरं पुनर्भगवत स्वेन मुपसमसील मुनिगरा हयतं शालिग्रामं कालं ज
राग्रसाजगम २९ तस्मिन् प्रकालं प्रति साराणाः संगत्र भयामु दिज्ज आत्मसर चर उच्छपरीतरा वीरू
धिवर्तामानो मगत्वममिता वासान वेवगयायन् मग शरीरं तीर्थो द्रुलिन्त मुत्सर्ज २८ इती श्री मागवते
पंचम सूत्रे प्रथमो ध्याया ८ श्री शुक उवाच प्रथक स्य चित द्विज परस्या गिर प्रवर स्य सम दमस्त पात्वा
ध्याया ध्ययन साग संतोखत निष्ठा प्रस्य विद्यानु स्यात्मा ज्ञाना नंद युक्त स्यात्प्रशक्त चारु रूपो दय गण
नवसौ एषा प्रगजा पुमि धुन च पर्क यस्या भाष्याया ९

प्रंतता पी गिन तीर्थ के जल कर के नी जो शरीर को ताप छोड हेति भय २८ इती पंचम सूत्रे प्रथमो ध्याया ८ नवमें
जड विमल तस्य राग्य भावत भद्र काली पसत्वे पि निर्वीकारत्व मीपेते १ नो की प्रध्याय मे जड भरत जी को रागा दिव
के प्रभाव ते भद्र काली के पशु की पतो ऊ निर्वीकार रते यव वरो न करे १ पिता ते पा पोते आत्म ज्ञान जिने न प्रे से भ
रत जी प्राध कर्म के वेग कर के मग हेर पाई प्रंत मे जड हो सरा भय २ ता के प्रनत प्रगरा के गोत्र मे भयो तिन मे प्रवृत्त

महामत्स्याध्यायतागसंतोषतितिथाप्रिप्रियविधाप्रनुस्रयाग्मात्मज्ञाप्रानंदइनअरकैयुक्ततां सुरानमैश्वरता
 श्रीप्रपनेसमानहंसूरतिशीलप्राचाररूपगुराउदारताजिनकीप्रैसैनोवेदालोनभए १०० प्रारहुसरीछोरीभापीता
 मैरकअंन्यारकपुत्रतोतभयो तलापुत्रजोभयेसोपरमभागवतयजअविनमैश्वरछोडोहैमगदेलजिनने प्रैसैन
 रतजीतोतभए प्रतिकेसरीरअरकैहंस्रराहोनभए प्रैसैहैहै २ ताजन्ममैइस्यरजननकेसंगतेडरपैहैकर्मको
 नाशकरनवाहोहै अवरास्नानगुरानकौअथनजिनकौ रासोजोभगवानतिनकौजोचरनपुगलतापमनकरकैधा

[illegible]

रहा करत भये प्रपने जो प्रतिमान नाय संका करै तें भगवानुके प्रनुप्रवर करै नली भूली तें पविले जन्म की प्राप्ति हो
न की प्रपन पेव उन्मत्त जड प्रंध वलीरो निन को सोख रूप करै दिवा यहेन भरा ३ हांति रा जो तें सो एके से र भर

कौ० प्रारंभरेतुं देहतेतिनेपठायौचातेतुं सौपतिलेद्यात्तमीनकरवैसतिम उंकारसरितगायत्रीजापसिखावैतुं चारमरीना
वितीतरोयगेंपेतोउगायत्रीन० प्रा३५ प्रैसैप्रपनेपुत्रमैप्रनुरागकरवैमवेशकरोतुं चिंतजाकोरसोजावांस्नरासोपुत्रक
सोचप्रध्येनहृत्तनैमअरुःप्रणिनिनैसिखामैतुं कर्मतेनैडभरतजीलेलायकनलीतुं परिपतापितापुत्रसिखादेययह

सवापितृद्रुतिपितृसंनिधावेवासर्गमिव स्मरोति छंदस्य धाय यष्यन् सत् व्याहृतिभिः सप्रणावशिरास्त्री
ययं हीसा वित्री ग्रैष्य वा संतिका न्मासान धीमानऽमप्यसमवेत रूपं ग्रन्थमासी ५ रावंतनुज आत्मन्यं प्रभु
रागा वैशिचिनः सौचाध्ययनवृत्तानि यमगुर्वक्रनक्रशुश्रुषणा पौषु वीराणीक स्य कर्मात्मन भियुक्तान्यपि स
मनुसिद्येन भाव्यमित्यसहाग्ररा पुत्रमनुसास्य स्वयं ता विद्मधगति मनोररया कालेन प्रमतेन स्वयं ग्रह

सूरीयें प्राग्रज्जाके सो पुत्र को सिखावत न नोरथन कन प्राप्ति यो प्राप को ल करि कैं घर ही में मरत भयौ ६ छोरी जो
हा जरा की स्त्री सो अपने गर्भ में न यो कन्या पुत्र ताथ प्रपनी सो तब सो पकें प्रपधान के संग सीरी होत भयौ पिता के म
रे पीछे नो जो नैया ते कर्म विद्या लगी रें मति न की परम विद्या में न की रें मत जिन की भरत जी के मभाव उन ही जिन ई
न को पठा मै रें सिखा मै रें पर पढ़न ही सीखें तब कहें यत्न जड मत रें यत्न जान कें नैया के सिखाय के को बढता तो
निवृत्ति सो न भये ७ प्राज्ञ जन्म रूप प्रप्ति न नैं सो भरत जी उच्यत रें जड रें गूगो रें बहिरों रें प्रे सैं जव कहें तव

उनके अनुकूल जो वचन निने कृत भरा जब को उक्त कृपावत भयो तब उन्नी बधा कर के करत भरा वेदिवे में वेग से
मागवे में प्रकृतात जो प्रकृत मिल जा पयो रो वा बुरत बुरो मलो ता ही को भोजन करे तें वेवल रंहीन की प्रीत के लीपेन
ही करे तें नित्य ही निवर्ति तें निमित्त जतौ छुट केवल अनुभव सोइ हें आनंद रूप जो को प्रेसो जो आत्मा ता की हे प्राप्ति जन

प्रथवी पति द्विज सती स्वर्ग भजातं मिथुनं सपत्न्या उपमस्य स्वयमनु संस्थया पतिलोक मगात् पितृ परते
आतर्न एन मत प्रभाव विदस्त्र प्या विद्याया मेव पर्यवसित मत योन पर विद्यायां जड मति रिति भातरनु सास
न निर्वंधा न तत्त सन ७ सच प्राप्ति रं हि पद पशु भिरुत्सत जड वधिरस्य भिभाष्य मा रणो पहात रत्न रूप नी
प्रभासते कर्मा रा सच कार्य मा राः परे छया करोति विधीनो वा पा ज्ञ पा पद द्यया जो पसा दिति मत्स्य वडु मिष्ट कद
नं वा भवति परं ने द्विप प्रीत निमित्त ८ नित्य निवृत्त निमित्त स्व सिद्ध विप्र भानु भवानंद स्यात्तनाः माः
धिग्माः सुखदुःखयो द्विनिमित्त पार सि भा विन देहा भिमाना ९ शीतोष्ण वा वरं पुष्ट पशु वा नाहतां गपीना
संतन नागं स्थुडिलं संवे सना नु न्म हना मज्ज न जसा म्हा न रि रि वारा मिथ्य कृत्स्न वचसा उपरा सत क
दिरूप वीते नौ रुमी पिणा द्विजातरि ती स ज पा न ऊ ज ना व म तो वि च चारा १०

अस न मान प्रपमान सुखदुःख ई न मै न ली की यो हें हेतु को प्रमिमान जिने नें ६ शीत में गर्मी में वर्षा में बेल की सी
अस न मान प्रपमान सुखदुःख ई न मै न ली की यो हें हेतु को प्रमिमान जिने नें ६ शीत में गर्मी में वर्षा में बेल की सी

तिने प्रवृत्ता कीये विचरत भरा १० जब और चने प्राकार सों मै हें वै हें वेगार में जा हें तब मै यान नें प्रप न खेत न के
कर्म न मै ल गा य दीये तव सोई करत भये पर सा खे दे तें नी चो होइ गयो इहां मा दी डारें तें उचो होइ गयो यह खवरति न हें
नरी जब खेत विग र ग यों तव मै यान नें दीये चामर न की किन नी मी ही खादी नुष पुने उदरे दो कसी को जसे प्रेसो प्र न
दीयो तो ऊ प्रमत्त की सी नाई खा य लेत भये ११ और भरत जी के विचित्र जो चरित्र सो कहें हैं का हू स मे कोई स नून को राजा सो

यदा तु परत प्राहारं कर्म चेतन न ईह मानः स्वभार मिश्र मि के दार कर्मणि निरूपत तदा पिकरो मि किं नून सम विष
ममून मा धि का मि त वे द क रण पिण्या क प्रली करण कुत्मा घ स्थाली पुरी या दी न्य प्य मत्त व द न्य व त र ति ११ प्रथक
हा वित्क श्रि द्रुष ल पति र्म द्र का लौ पुरुष पशु माल भता पत्य कामः १२ तस्य हं देव मुक्त स्य य प्रोः पद वीत दनु चा चः
परधा वेतौ निशि नी प्री ध स मये त म सा वता या मन धि गत य धा वः प्रकृति के न विधि ना के दारान् वारा सने न
गुण वरा हा दि न्य सर स्य माणा मं गिरः प्रवर सुत म प प्रप न् १३ प्रथत एन मन व घल स ए म व म्प्य न र क र्म
निधति प्रम माना व आ र स न धा चं डि का ग ह उप नि मु र्मु ता विक स त व दे ना १४

भद्र काली देवी ता के प्रर्थ पुरुष रूप जो पशु ता य च टाय वे कृं इच्छा करत भयों पुत्र जी हे इच्छा जा के १२ एक पुरुष रूप
को सो देव की इच्छा तें छुटि गयो ता के डं ड वे कृं ता राजा के लोग राति में हो रत भये प्रधे रे वत पुरुष ना मिलो तव प्रकृता त दे
व की इच्छा तें छुटि गयो हिरन प्रकरा दि के न ने खेत न की रक्षा करे प्रे से जो ब्राह्मण के बाल क म रत जी ति नै देखत भये १३
ता के प्रवृत्त र निर्दू पित हें लक्षण जन के प्रे से जो ये ज उ भ रत जी ति नों विचार के हमारे राजा को कर्म या सं सि द्र होइ गो प्रे से मान

भा.पं.
२८

कैंडोरस्वाधिकें प्रसन्नहैं मुखजिन के ते देवी कों जो चरता के नि कटला चत मये १७ तापा छै छी छै चोरन के तुल्यने ग्रप
नीविध कर कैं त्मान करा य कैं नये वस्त्र पहिराय के गहनै पहराय के चंदन लगाय के माला तिल करन कर के प्रलंकन
की छैं छीर कों भोजन करा यों धूप दीप प्रलजल प्रकुरइन कर के प्रजा करी हिंसा की जो विचर के गीत गावत ग्रस्तुत करत
मदंग डोल इनै वजावत पुरुष रूप जाये श्रुताय मद्रकाली के आगे प्रवेश करत मये १४ सप्रन कों यो राजा ना के प्रहित

अथ पण्यस्तं स्वविधिना विधिचाहनेन वा सुसाग्राद्या धनपण्यत्वे पत्रकुंतिलकादिभिः उपस्तुते भुजवंतं
धूप दीप माल्यत्ताज किरालयां कुसुमैः पतारोयेत या वै प्रास संस्थं या महती गीतस्तुति मदंग पण्य वद्यो ये
एच पुरुष पशुं मद्रकाल्याः पुरत उपवेशया मासुः १५ अथ वृषल राज पाणिः पुरुष पशोर सगा सवेन दे
वी मद्रकाली यक्षमाणस्तदनिमंत्रित मसिमति कषाले निशिम मुण दे १६ इति तेषां वृषलानां रजस्तम
प्रकृतीनां धन मदरा उक्ते ममनसां भगवत्कला वीरकुलं कदयी कृत्योत्पद्ये नस्त्वेरं चितरता हिंसा विराणां
कर्मातिरासुण्य दुस्मनूतस्य साहा दुस्मर्षिस्तुतस्य निरवैरस्य सर्वजनसुहृदः स्तनायामप्यन उममता
लं मनंत दुपलभ्य ब्रह्मतेजसातिदुविषेरेण दंदस्य मानेन वपुषा सहसोच्चोऽथ सेव देवी मद्रकाली १७

होकर कैं रहैं चोर सो पुरुष रूप जो पशुता को जो रुधिर म दना कर कैं मद्रकाली की प्रजा करों चाहैं देवी मंत्र करि के मंत्रि
न जनि पनो मद्रकाल्याय नमः करि के १८ प्रेसी राजसी प्रकृत है जिन की धन कों जो मद सोई रजता कर कैं त्याग करी है म
मद्रकाली १९ अथ मद्रकाली २० मद्रकाली २१ मद्रकाली २२ मद्रकाली २३ मद्रकाली २४ मद्रकाली २५ मद्रकाली २६ मद्रकाली २७ मद्रकाली २८ मद्रकाली २९ मद्रकाली ३०
मद्रकाली ३१ मद्रकाली ३२ मद्रकाली ३३ मद्रकाली ३४ मद्रकाली ३५ मद्रकाली ३६ मद्रकाली ३७ मद्रकाली ३८ मद्रकाली ३९ मद्रकाली ४०
मद्रकाली ४१ मद्रकाली ४२ मद्रकाली ४३ मद्रकाली ४४ मद्रकाली ४५ मद्रकाली ४६ मद्रकाली ४७ मद्रकाली ४८ मद्रकाली ४९ मद्रकाली ५०

मयम मयरोषावेशर भसविलसत भ्रकुटिविकटकुटिल इयासुणे क्षणा रोपाति मयान कवदना हंतु कामे
वेदमहा दहाय मति सरभेण विमुचतीति तत अपपापीयतां दुष्टानां ते नैवा सिनाविव कषा क्षीगलास्त्रवत
मसगा सवमत्पुष्प सहगणे न निपीयाति पान मद विह्वलो द्यौस्त रास्वपार्थ देः सहज गो न नर्त च विज
हार च शिरः कंडू कली लया १८ एवमेव च तमहं निचारति भ्रम कात्स्य नात्मने प्रलति १९

पने कगणन सहित पी कर कैं प्रतिपान सो मद्र कर कैं विह्वल अपने पार्थ दन गों संग लें कैं गावत मई नाचत मई
सिरन की गे दवनाय कैं विहार करत मई १८ महांतन कों जो प्रप्राध सो प्रे सें प्रपनो तीना सकरै है प्रपने उ पररी
प्रलै है १९ देवि सुदतये प्राचार्य नही है जे प्रपने शिर कूं छे दन आप प्रापन यों तों हूं तों भरत जीया कुलन होत
नये नाय कैं है सो मेहें देसादिकन में प्रात्मभाव सोई हृदय की गांठि जिन नै सगरे प्राणी न के सुहृद प्रात्मानि वै

58

59

नवा रात द्विस्तु दत्त महद्भूतं यदा संभ्रमः स्वशिरः छेदने प्रापति तेऽपि विमुक्त देहाद्यात्मभावस्तु दृढहृदयं
मंथीनां सर्वसत्त्वात्सुरहात्मानां निर्वैराणां साक्षाद्भवतां निमिषादिव रायुर्धेना प्रमत्तेन ते स्तेनवैरभि
रक्षमाणानां तत्पारमूलमकुतश्चिद्भयमुपस्तानां भागवतपरमहंसानां २० इति श्रीभागवते पंचमस्कं
धेनवमोऽध्यायः ८ श्रीभक्तउवाचः अथासंधुसो वीरपतेरहगणज्ञ जेत इत्थुमत्पास्त देतत्कुलपतिना शि
विकावाहपुत्रस्यान्वेषणसमये देवैर्नोपसाहितः सद्भिजवरजपलब्धाः एषपीवासंहननां गो गोखरवपुरं
बोद्धुमलमिति पूर्वविधिगृहीतैः प्रसन्नमत्तदर्हउवाहृशिवक्रांसमहाजुभावेः ९

वद्योऽसमं इति सर्वज्ञता सिद्धे रह्य गण कथेरणं २ या प्रकारकों जो निर्विकार नियतत्व सौ सर्व में सर्वज्ञ समान है या स
मान या कारन करकों सर्वज्ञता की सिद्धि कैली ये रह्य गण की कथा कहते हैं २ श्री प्रभु देव जी कहते हैं हे राजा परीक्षित सिंधु
तुम जो राजा रह्य गण जाके नाम उस समुद्र में दी जो केपीर पेंच लौं जाय ता के पाल की मैं ते जानवा रे तिन कों स्वा

धार्मीसीनार्इवोऊलेचलवेओसमर्थुं श्रेयोविचारकैंपतिलैवेगारमैपकरैतिनकेसंगजोरावरीपकरलीयो यंतुजा
यवेलायकनलीरुं परमहानुभावजोभरनजीसोपालिकीलेचले १ हांस्तरानमैश्रेयएकजारमात्रएथीहेसलेत
वयामधरै यातेईनओगतिजवसमानभई तवविषमभावकोप्राप्तिभई एसीजोअपनीपालकी जायदेखकेपाल

यदाहो विजवरस्येष्टमात्रावलोकानुगतेर्न समातितापूर्यगतिस्तदा विषमगताश्च शिवक्रान्तरूपाधार्य
पुरुषानदिक्तीतः प्राहतेवोदारः साध्यनिहमतिमिति विषममुद्यतेयानमिती २ प्रयतेर्दृश्यवचसो
पालंभमुपाकरणोपायापुनरीयाद्यं कृतमनसस्तं विज्ञायां वभुवुः ३ न कं न रस्वेव प्रमता भवतं यमानुपथा
साद्येववतामः प्रपमधुनेदनिपुक्तोऽपि न द्रुतं हजतनाने न सत्तु वोऽमुत्तवयं पारयाम ईति ४ ४ ४ ४

श्रीकृष्णलैजानवारेपुर्वतिनैवलतभयौ हैकृष्णलैजानवारेपुर्वतिनैवलतभयौ २ राजा
 कोवचनप्राक्षेपसहितचौथोउपायजोहंदुनालेसंकितहैमनजिनकोरहैजेलोकराजतेकहतभये ३ हैनरहे
 वसावधानतुमारीप्राज्ञामैचलेजायजिजोतुमनैनपोवेगारीलगायेहुसोभलेनहीचलेहुयातेजाहेसंगरुम
 हमपालकीपालकीलैचलवैकोतुमसमर्थनरहिहैं ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४

आ.पं.
३०

एक होषनि प्रय करवैं सवरे संगी न को होवे को जो म्पहें येसे नि प्रय करवैं सुपशान को वचन सुनि कैं राजा लग
ण जानि न की उपासना की पोबहैं राज सुभाव करवैं परवस की पोहैं क सु अहैं को धजा कैं रजोगरा कस्के आहत है
म निजा की सो राष मेठ की म्पजि होय ते से न ही प्रधरतै हरन ते ज जि न को ये से भरत जी ति न सुखो लत भयो ५ हे मेया
वरो कय हे नूवतु न तारगुयोहैं प्रकेलो ही वात न हरण ल की ले आयो है नूल हो है ते रो प्रंगज वर नरी है बुरा पै नै म्पकुल व्योम की
योहैं हे सखे प्रारज ने रसंग के ते से न ही है ये से वेर वेर दीवान न करवैं ता सी बरी तो ज प्रवप करवैं रचे इ म्पग राव म्प आशय

सां सर्गको दोष एव नूनमेकस्यापि सर्वसां संमतिरां भवतु मर्तुतीति निश्चित्य निसम्पन्नपरावचो राजारुगणोऽप्य
सितो ह्येव द्वौपिनसर्गोरावलात्तमईषदुस्थितमनुरविशस्यहंस्मतेजसंजातवेदसमवरजसाहतमतिराह ५ प्र
हो ब्रह्मं भानव्यं कुरुपरिष्ठांतो दीर्घमध्यानमेकुरावउत्तिवानसुचिरं नातिपीवानसंभुनतां गोरजसाचौपदुजोभ
वान् ह्येनो एवापरराते संधदिन ईतीवह विप्रलब्धौऽप्यविधया विहित इव्यगुणा कर्मास्यस्य चरमकले वरेऽव
स्तुनिसंस्थानविशेषे संभनेत्यनध्यारोपितमीथाप्रत्ययो हं सभततस्मिं विविक्तो पूर्ववदुवाच ६ प्रथपुनः स्वसि
वकामां विषमगवतां यां प्रकुपित उवाच रतुगणा किवन्मरेत्वं जीवन्मृतो माकुर्यात्सभते सासनमती चरसी प्रमत्तस्य च
न करोति चित्रत्वारउपाशिरिविरजनिनायापथाप्रहतिं रचिभजीव्यसईती ७

मेनलीकीनीहें असतासुमता

रत्नजीवपद्म पेड़लेकीसीनर गलकी

अणकरकैवटोजोमदनाकरकैनिरसकोरकीयेतें संश्रामंगवाननेप्यारे प्राप्तेजाते पंडितमातीयेसे सुगगातासुहंस
भूतसगरेभूतनकेसुत्रदधात्तामैसांस्वराभरतजीनहीहैं ग र्भजिनकेतसतपहवचनवालतभय चरत्तगगातेनेजो
वचनकरोप्रमादिकनहीहैं सोवचनतेहीहैं यामैवचनानहीहोतें तेवीरजोभारमोकरोसि प्रोरचलवेकोमर्पीरोयः

श्रीशुक उवाच एवं ब्रुवन्मपि भाषमाणं नरदेवाभिमानं रंजसातमसानुविद्धेन मदिनतिरक्षताशेषभगवत्प्रिय
निकेतं पंडितमानिनं सभगवान्हांसभूतः सर्वभूतसुखात्मा योगेश्वर चर्यायां प्रतिच्युत न्नमतिं स्मृयमान इव
विगतस्मय इह मातु ८ हांसरा उवाचः त्वयोहितं व्यक्तिप्रविप्रलक्षं भर्तुः समेसाद्य दिवीरभारः जंतुर्यदि त्पादधि
गम्य मध्वापिवेतरासौ न विदां प्रवाह ९ स्थो ल्यं क्राशं व्याधय ग्राधय श्रुभूत नयं कलरिषाजराच निशारतिर्य
चतुरं मद्गुचौ हेहे न जानस्यसि मेन संति ११ जीवन्मृतत्वं नियमेन राजन् नायंति वधदि ह्युत स्पृष्टं स्वस्वाम्यभावो
घवरक्षय च तद्युतसो विधिस्तथा योगः ११

तो तेरो वचन निरसकार तोई सो नही तेने कही तू मेरो नही हूं सो पाहेत मैं जानवान न हूं वाहनही हूं मर खन को ते ६ यत्
स्थल हूं तू धरूं व्याधि प्राधि हूं भूषण सभय कलह इष्टा जरानि दारति को धप्रतंकार मर सो के सो देवा भजानी हूं ता
के तो हूं मैं तो निरनमान तो ता ते मेरे यत् प्रभिमान ही हूं १० तेने कही किं तु जीवत ही मरे हूं सो मोई को नही हूं सगरे विकर
हूं देवा हूं या ते विकार हूं या ते विकार हूं सो प्राधि प्रंतर के पुत्र हूं तेने कही मेरी अज्ञान ही करे हूं सो यत् त्यागी हूं यत् मेरो चा

भा.पं.
३१

यत्तु जो भाव सो सा चौ तो यतो अपनै सो तो है नही ऊरो तो जो ने रे राज्य कौ ना सरोई मो कुरा अपलो यतो सव विपरीत तो जा
ई १२ मै राजा तयत भूपते यत्तु जो मेह सो बुद्ध्यो होरते सै प्रत्यन नही लें को ई नई स्वर लें जो न भूत्य लें जो ऊन ली तो
हुतेरी पाल की ली जायते प्रोर कला करी तेने प्रवी के ते रोई लाज क रू गो मो तु म तो उन्मत जड डन की सी नाई अपने
स्वरूप को प्राप्ति लें ते वीरु मारे सी हा कर के हंड कर के नो कुल रा मिले गो जो वम मुक्त नही है मत लें तो तु मो कू सी स दे के

विशेष बुद्धे विचरं मना क पस्या मय न्नस्य वरा रतो न्यत् कै स्वरस्तत्र विमीशित व्यंतथा पिरा जन क ला मि किं ते १२
उन्मत मत जड वत्स संस्थां गत स्य मे वीर चिह्न स्य तेना अर्थ की पान भवता सि स्य तेन स्त द्र प्र मत स्य च पिय पे १३
श्री भू उवाचः एता वदनु वा ह परि भाष या प्र सु दी र्घ मु नि वर उप सम शील उप रता ना स्त्री नि मीत उप भोगेन कर्मा
र ध्वं य पवन यन राज यान म पि त थो वो वा १४ स चा पि पांड वे या सि दु सो वीर प ति स्त त्व जि ज्ञा सा या स म्प क सि द्धा
धि क्ता धि कार स्त त द्द य ग्रं थ वि मो च नं दि ज व च प्रा श्रु त व त् यो गि ग्रं थ सं मं त्र पा व रु द्र सि र सा पा ह मूल उप र ता
ह मा प य न वि गत यं यं न प ह व स्म य उ वा च १५

पी से कं पी स नो है १३ अन वा द रूप जो व च न ता कर के है कै मु नी न उप सम मे है शील जि न को ड र भ यो है हे तु मे प्र
जि मान भोग कर के मार ध को ड र कर त म र त सो रा ण ल घु ल त म ए १४ उ सं मे भ यो रा
ज म क न ल त म गू ह त म वि च र त रान क म ध्य क न न ड त म ज य

को प्राये सो के ह मारे क त्या रा कं प्राये तो को क तु क पि ल दे व तो न ही लो १६ मै ई द्र के व ज ते न ही ड र म त म हा दे व के त्रि सु ल सं त री
ड र म त य म के ह ड स न ही न ही ड र म त प्र णि स र्य चं दू मा व रु रा कु वे र ड न के स स्य ते न ही ड र म त ए क वां न रा कु ल के जो प्र प म न
ता ने ड र म त १७ तू म को न तो ज ड से वि च रौ लो धि पा यो है वि ज्ञा न रूप जो प्र भा व सो जि नें प्रा पा स्तें म पि मा जि न की र से जो तु ह मारे

अश्वं नि गूढ श्रर सिद्ध जा नं भं वि भ र्ष स्त चं क्त मो व भू ता क स्या प्र कु ज त र ता पि क स्मा त् से मा प न श्रे ह सि नो ति श्र ला १६
ना तं वि सं के स र रा ज व ज्ञा न्न व ह्म श्र ला न्न य म स्य हं डान ना य किं सो मा नि ल वि या स्मा धं के र शं हं स्त कु ला प मा ना त्
१७ त द्द स्य सं गे ज ड व न्ति गूढ वि ज्ञा न वी र्यो वि च स्य पा रा व र्चा सि यो ग्ग स्थि ता नि सा धो न न स मं ते न म न सा पि भे त् १८
प्र तं च यो स्वर पा त्त त्व वि दं मु नी नां पर मं गुरु वै ए व प्र व र्ते कि मि तार रा त सा हा त द्र रि ज्ञा न क ला व ती री १९ स वै
भ वा क्षो क्त री क्ष रा र्था म व क्त लिं गो वि च र त्प पि त्थ न् यो गे स्वर रा णां ग त मं ह व द्रि क थं वि च क्षी तु ग ह्म न वं ध २०

वचन योग ग्रंथ के संमत लें ति ने मे द कर वे कू म न कर के उ स म र्थ न ही तु ता ते तु म को न लो १८ यो स्वर आ त्त त्व के जा न न
वारे मु नि ति न के पर म गुरु ज्ञा न है वे के ली पे प्र व ता र ली यो प्रै से जो क पि ल दे व जी ति न सं या सं सार मे सर न क ता है य
स व वे के ली प्र व त भ यो १९ प्र प्र प तै रूप जि न को सो ई क पि ल दे व तु म लो क्त न के दे व वे के ली ये क व च र तौ है यो गे स्वर
र न की जो ग ति ता प ध र मे है चि त्त जा को प्रं द्रि डै वु द्रि जा की प्रै सो जो मे सो के सें है र व १० १० १० १० १० १०

वर ज न मे शि र के यं यं व च न को ल त म यो १५

भा.पं.
३२

कर्मते प्राप्ता कुं प्रमहेषी ये प्रोरभर्ता चलन वारे कुंतु मरुं मोरुं प्रमहो हें यव मानतु विव तार को जो मार्ग हें सांचो हें जैसे सांचे
ठर के जल आवें हें रुते ते नली आवें हें २१ चले पै घरी जो टोकनी तामे प्रजि को जो तावता ते रो किनी में जो दुध सोता तो होय हें ता
दुध के ताप जें चामर न कुं ताप होय हें ताताप के रमध के स्वीर हो जाय हें जासे पुष्य को देव जवत प्रहोय हें तव कुं डीन कुं ताप होय हें ताताप ते
मान न कुं ताप होय हें प्राणा के ताप ते मन कुं ताप होय हें रासे पाप पुष्य के देवादि के संग संताप होय हें सन्निकर्ष ते संसार होय हें २३ राजा हें
सो प्रजान को पालक हें सिंहादे हरि को किं कर हें सो पीसे कुं नरी पीसे हें तर जो राधन जो सधर्म ता य करत पाप के समस्त न नास होय २४

इथाः प्रमः कर्मता प्रात्मनो वै नर्तुः गतुर्भवतश्चानुमते यथा सतोदानपनाद्यभावात्समलदृष्टो व्यवहारमार्गः २१
स्यात्प्रजितायास्यसोभतापस्ततायतस्तंदुलगर्भरं धीः हेतुं द्रियास्वासयसन्निकर्षात्तत्संज्ञितिः पुरुषस्यानरोधा
त २२ शास्ताभिगोमानपतिः प्रजानां पः किं करोवेनपिनधिपियं स्वधर्ममाराधनमचुतस्यपरीतमानौ विजरासधो
ध्वं २३ तन्मेभवान्नरदेवाभिमानमहेनतुष्ठीस्तुतसतमस्य सुधीश्च मे वीदशपार्तवं धोपधातरे सुप्रमध्यानमत् २४
न विक्रियाविश्वसुव्रतसखस्य सामेनवीताभिमतस्तवापी मनु द्विमानात्सुसुतादिमादृकनंस्तदूराहो प्रलपतिः
२५ ईजी भागवते पचमे दशमोऽध्यायः १०

जाते मैराज होया प्रभिमान के मद कर के तिर सकार की रा हें तुम सार के साधु जानें प्रै सो जो मैना कुंतु मतेर युक्त जो दृष्टी नाय को
जैसे साधु न को जो प्रविज्ञा रूप पापतायत ह २४ विस्व के सुहृद सरवातुम तिन को कीयो प्रपाधु जानें तम तिन के विचार हें नरी

एकादशमं ध्यायेत्पुनरुद्गणमहानताः उपोद्गात्परमज्ञानसंयोगानि निगच्छते १ ग्यारह के प्रधाय मरह गण राजा
नैयछो योगी जो भरन जो सो परम ज्ञान को उप देश करत भये यह वर्ण निकरै हें १ भरन जो कहै हें हेरह गण नू मुख हें परि
पंडित न के से वाद न कहै हें याते प्रत्यंत पंडित न के मध्य मै तू प्रघन ही हें काहे ते ले कि क व्यवहार को साचो कहै हें याच्य
वहार के विवेकी हें ते तत्व विचार कर के स्मरित नरी कहै हें याते साचो नही हें १ हेराज नू वैदिक कर्म व्यवहार हें सो उसाचो
नही हें यह कहै हें गृह संबंधी जे यत्न तिन को विस्तार सो हे जिन मै प्रैसी जो विद्या तिन कर के अधिक बिलशत प्रै से जे वेद

अकोविदः कोविदवाद्वादान्वदस्यो नातिविदां वारिषः नसूरयो हि व्यवहारमेतंतत्वावमर्षणसहम
मंति १ तद्येवाजन्तरुगार्हमेधविनानविद्योरुविजनिनेषु नवेदवादेयुहितत्ववादः प्रायेण श्रद्धा नु च का
स्ति साधुः २ नतस्य तत्त्वगतेण यसाक्षाद्वरीयसीरपि वाचः समासन् स्वप्नित हत्व गृहमेधिसौख्य नयस्य
हेया नु भितं स्वयं स्यात् ३

वाद तिन में तत्व वाद है सोई सा देस कर के सून्य रागादि क प्रै सो बहुधा वी नही प्रकासे हें २ प्रै हूं जे वेदांत की वाणी
तेयो सारी जे पुरुषता कुं तत्व गृहण कर वे के लीयें सा सात नही हो हें गृहस्तन को जो मुख है सो सुपन की सी नाई आप
ही नष्ट हो या जायतें ३ या पुरुष को जो मन मन सोर जो गुरु गुण कर के सतो गुण कर के तमो गुण कर के वस कीयो हो हें
तव मन में हें सो निरंकुश होइ के जानें श्री कर्मे श्री कर्न कर के इन कर के उण पापति नो विस्तार करै हें वासना कर के उण प्रै

१०
६७
सो सा सा सा सो विवेचन कर के उण प्रै

भा.पं.
३३

गुणनकरिकें जसांत हांचलायमान कीयो हें विकार युक्त हें नूतन इंद्रिय रूप जो सोलें कलातिन में मुख्या हें अनेक जेना मतिन
कर कें रूप मेह मा पधारण करै हें और देह कर कें उत्कर्ष नि क्रिष्टिना पि विस्तार करै हें ४ सुख दुःख मोह तीव्र जो काल
ता कर कें प्राप्ति जो प्रलना हि सर्वत्र सर जै हें प्रपनो देह ता य प्रालिगन कर कें रचो हें जीव उपाधि जा कें संसार चक्र में
मन हें सोया जीव कें धूलें हें ६ तव हीता ईव्यवहार हें सौ प्रगट हें सदा क्षेत्रज्ञ रूप हो हें और स्थूल सूक्ष्म हें जाग्रत स्व
यावन्मनोरजसा पुरुष सप्तत्वेन वात मसा वात रुद्र चितो भिरा कृति भिरत नोति निरंकुश कुशल चेतनं वा ४ सवा
वासना त्मा विषयो पुरतं यण प्रवाहो विवृतः प्रोदण त्मा विनश्यत्वा मभिरूप देह मंत वीर हूच पुरेस्त नोति ५
दुःखे सुखं व्यतिरिक्तं च तीव्रं कालोपमं फल मायु नक्ति ७ प्रालिग्य माया रचितो तरात्मा स्वदेहिने संसृति वक्र
दः ६ तावान यं व्यवहाराः सदा विः से चक्षसा लो भवति स्थूल सूक्ष्मा तस्मान्मनो लिगम दो वदति गुण गुण स्ये
परावरस्य ७ गुणानुरक्तं य सना य जंतोः हो मायने गुण मयोः मन स्यात् यथा प्रदीपो घृत वनो मय न् शिखा स
भूमा भजति न्येदास्य ८

महें तातें मन हें सो लिं बा देह रूप हें गुणाभिमान गुणन कों छोटि कों पर प्रवर इन कों कारन मन ही के करै हें ७ गुणन क
र कें प्रनुरक्त ग्रै सो जो मन सो प्राणी न कें संसार के दुःख के ली ये हो हें निर्गुण जो गुण हें सो मोक्ष के ली ये हो हें जे से दी
प कधी वाती इन सवन करत धू आस तन जो शिखा तिनें भजै हें जव धी नही हो इतों प्रपनो श्रद्ध रूप ता य प्राप्त हो हें ८

गुण कर्मन करि कें वधों ग्रै सो जो मन सो प्रपस्थान जो वृत्ति तिनें प्राप्ति करै हें और रस में मंतत्व कों सेवन करै हें या
रे मन की वृत्ति होत भई पांच तों ज्ञानें श्री पांच कर्में श्री एक प्रभिमान ९ हेवी रमा त्रा कर्म तिनें प्रो रतिन कों पुर देहा
ता इज्जारत विषय करै हें कौन सो विषय हें गंध आरुत स्पर्श रस शब्द विसर्ग रति गति अभिजल्प सिसृषिये विषय १०
मेरो हें ग्रै सो जो स्वाकार हें ता य ग्गार हो करै हें कोई एक प्रहं कारता य वार हो करै हें द्रव्य भाव प्रास य कर्म काल इन कर
कें जार हो करै हें ये मन के विकार हें ११ परलैं सो काने भये फिर जार न भये फिर किरो रन भये परस्पर नही हो हें प्राप

पदं यथा गुण कर्म उवदं वृत्तिर्मनः प्रयतेऽन्यत्र तत्त्वं एका दसा सन् मन सो हि वृत्त य आरुत यः पंधि चै यो
भिमानः ९ मात्राणि कर्मणि पुरे च ता त्म वदंत ह्ये का दश वी र भूमी गंधा कृति स्पृश रस श्रवो सिं वि सृग रित्य
भिजल्पा शिल्पा १० एका दसं स्वा करणं समेति प्रायाम हं द्वादश मे क प्राहं द्रव्य स्वभावा प्राय कर्म काले रे का
दसामी मन सो विकारो ११ सहस्रं प्रा शान प्राः कौटि प्रा श्र क्षेत्रज्ञ तन तो ना मिथोस्तनः सुः १२ क्षेत्रज्ञ गता म
न सो विभूति जीव स्य माया रचित स्य नित्याः आविर्हिताः कापि रोहिता श्रु श्रु द्वे त्वि च ये स्व वि श्रु द्व कर्तुः १३
क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः साक्षात् स्वयं ज्योतिरज परेशः नारायणो भवान् वासु देवः स्व माये या त्म न्य वधी य श

तें नही हो हो हें परमेश्वर ते हो हें १२ जीव कें माया करि कें रचों ग्रै सो जो मन ता की ये ते विभूति ने प्रभा रूप कर कें नित्य हें
जाग्रत स्वप्न प्रमै प्रगट हो हें सु सु प्रमै तिरोहन हो हें तिनें सिद्ध जो आत्मा हें सो उदेखे हें १३ क्षेत्रज्ञ तो प्रकार कों कों एक
जीव हें एक ईश्वर हें जीव तों क हों प्रवर्द्ध श्वर कों स्वरूप करै हें क्षेत्रज्ञ जो ईश्वर सो सर्व व्यापी हें जगत जारण हें प्रणी हें
प्रपरोक्ष हें स्व प्रकासे हें जन्मादिक कर के अन्य हें जन्मादिक तिनें कोई श्वर हें जीव न कें प्राप्ति हें भगवान् वासु

प्रपनी माया करि कें जीव के विषय नि यं ता कर
स्थित हें १४

जैसे पमन है सो स्थावर जंगमन को गान रूप कर के प्रविष्ट हो के नियंता हो है ऐसे ही भगवान् वासुदेव क्षेत्रज्ञात्मा
या विश्व में प्रविष्ट है १५ देह धारी जो पुरुष जो ज्ञान के उद्देश कर के यह जो माया ता यन ही दूर करे है प्राप्ता तत्त्व कृन्ती
जाने तब ताई संसर में न है १६ जब ताई यह जो मन है सो जीव के उपाधि है संसार ते ता प को दैन वारों है ता यन ही
जाने है तब ताई न है जो मन शोक मोह रोग राग लोभ वैर ममता इनै करे है १७ ता नै वजो है पराक्रम जो उपासी सोई है
कर के अधिक वठा प्रपे नों वैरी मिथ्या धन प्रे सो जे यह मन नाहि हर ही जोग रूति न के चरन नै श्री जो उपासना सोई है

यथानिलः स्थावर जंगमाना मात्मस्वरूपेण निविष्ट ईशोत् एवं परो भगवान् वासुदेवः क्षेत्रज्ञात्मे
दमनु प्रविष्टः १५ नयावरेतां ननु मनरे द्विष्ट यमायाव पुनोदयेन विमुक्त संजो जित सद्रूप त्वावरा
तत्त्व भ्रमती हता वत १६ नयाव देन मनः प्राप्ता लिंग संसार ता पावन जनस्य यच्छोक मोह मय राग
लोभ वैरा नुबंधं ममता विधत्ते १७ भ्रातृ व्यमेतं दैतं दनवीर्य मुपेक्षयाऽधो धित मप्रमत्ताः गुरोर्हरा
रणोपासनात्प्राजतिव्यलीकं स्वयमात्ममोघं १८ इति श्री भागवते पंचम स्कंधे राका दशोऽध्यायः ११
रह गण उवाचः नमो नमः कारण विग्रहाय स्वरूप तुच्छीकृत विग्रहाय नमो वधूते दिज वंधु लिंग निरु

प्रसन्न जा के सावधान होइ के प्राप्ता को उरामन वारों जाय मार १८ इति श्री एकादशोऽध्यायः ११ द्वादशोऽध्यायः
संदेह नम ही भूता सयोगी सर्व संदेहानुपा नुद्दिती र्यते १ वार है अध्याय में संदेह कर है रह गण नै के र पछे जो योगी
भरत जी सो सब संदेह न कूट करि करत न ये यह वर्णन करे है १ रह गण कहै है कारण जो ईश्वर ता की सीना ईला कर सा
केली ये है स रूप जिन को स रूप कर के नु ह को दो जिन नै है प्रवधूत बा स्मरण के रूप कर के नु ह को दो नित्य प्रभु नव

जैसे ज्वर रोग करि के जो दुखी है ता कुं सुंदर प्रोख दिगर भी के मारे जो जरे ना कुं सीतल जल जैसे एसे है हां स्मरण कुं सीतल देव में जो प्र
भिमान सोई न यो सर्प ता नै डसी है दृष्ट जा की ए सो जो ता को नु मारो वचन सो प्रमत्त की सीना ई प्रोष्ट है २ ता नै प्रपुने संशय के लीये नु
मसं प्रपुनो प्रवसुं हरतै वो धजा को अध्यात्म योग करि के गुण्यो प्रै सो जो नु मारो वचन ता य कर मे रचित मे वडा जो को नु लल है ३ ते यो
गे खर ह स्पमान ए सो जो की या फल को तार को कारण सो सा चौ है नु मने जो जहो सो प्रना पा सत त्वा विचार कर वे के ली ये न सी जो प
हैं पा प्रथी में मेरो मन भ मे है ४ तलां हां स्मरण करे है ते राजा पर जो जन है सो एकी को विकार है सोई एक कारन ते एकी मे चल निज

ज्वरामयार्तस्य यथा गहंसन्ती दाधधस्य यथा रिमांभः कुहेतमानाति विद्वष्टे ह स्मरण च स्ते मत मौषधं मे २ तस्माद्
वंतं मन संशयार्थं प्रहृष्टा मिपश्चादधुना सुबोधं अध्यात्म योग प्रथितं तवोक्तया खाति को नु लल चेत सो मे ३ यदा
ह योगे श्वर ह स्पमान की या फल सत व्यवहार मूले न धंज सा जत्व विमर्श नाया भवानुपि न भ्रमे ते मनो मे ४ हां
रा उवाचः प्रयज नो नाम चलन एधि व्यापः पार्थिवः पार्थव कस्य ते नोः तस्यापि चांधोर पिगु लो जं या जानू षो मध्यो
रशिरो धरांसः ५ प्रसेधि दावी शिविका च यस्यां सो वीर राज्य पदं य प्राप्ते ६ ॥

रों सो जन प्रसिद्ध है जो नही चले वैं सो पाषाण ते प्रादिलै के वैं इत नो ती भेद है पाते या कुप्रमन ही और जो प्रम मानो तो तो
या एकी के विकार प्रै से चरन निन के उपर दक ना निन में पी डुरी घोडु जं धा न मर उर धाती नार कंधा उपर रचे है ५ कंधा पे का
ठन की वनी तेरी पाल की धरि जे पा ल की में सो वीर देश को राजातं य वुरै नाम मात्र जा को सो माटी को रा क डेल वे रो वैं जा मे ते
नै प्रभिमान की जो है मे वैं सिंधु देश जो है ना ती देष को मे राजातं प्रै से दुष्य नो म द कर के प्रं धित है ६

अधिककष्टकरके हीन सोच कर वेकं योग्य हैं ॥ प्रेसै जे जन निने वेगार में घुसै हैं जाते निरुद्ध हैं मैज न कोर सा करन वारो है प्रेसै
वने है वृद्धन की सभा मै सोभा को नही पावै हैं जाते निरुद्ध हैं ॥ जो एधी मै चराचर दिक्कन मै नास उपायता पजाने है तो एधी निमारे ॥
रव्योत्तर को कारन करार है सो निरूपरा कर जो प्रयत्नीया कर हैं सो चौक हो है सो निरूपरा कर ॥ तो एधी सा वीरो पगीत कर वारो है
एधी उरु हो है सरस्वती परिमाराति न मै एधी को नाश देषी है तो परमान सा चै है नरां कर है है ने परमान मन कर है रचे है निन के समू

यस्मिन् भगवान् कुरुनि जाभिमानो राजा स्मि सिंधु खत दुर्महांधाः ६ सो चानि मास्तमधिष्ठ दीना निष्पन्निरुणा नि
रनुग्रहो सि जनस्य गोप्राप्ती विवक्ष्यमानो न सो भिभसे वृद्ध सभा सुधुः ७ यदा सता वेव चराचरस्य विदामनिष्ठां प्र
भवं च नित्यं तन्नामतो ॥ सव्यवहारमूलं निरूप्यतां शाक्तिययानुमेयं ८ एवं निरुद्ध सतसद्वृत्तमसन्न धारात्परमा
णवोधे ॥ प्रविद्यमानसा कल्पतास्ते रसांसमूरे न तो विशेषः एवं सुस्थलमरा हृदय दसजसजीवमजीवम
न्यत्र इव स्वभावापकाल कर्मनाम्ना जपा वृत्ति सुतं दुतीयं १० ज्ञानं विशुद्धं परमार्थं मे कर्मनंतरं त्ववतिर्हससं प्रत्य
प्रसातं भगवच्छिष्यं यदा सुदेवकवयो वदतिः ११

हृदय के एधी वरी है ॥ प्रेसै री प्रौरजर चौ है हृदय लखो दो वडो व्याप्य कारणा चेतन ॥ प्रचेतन इव स्वभाव काल कर्म यतना मकर
कै मायाने इसरो की नो है १० सा चो कतु है जान है सो सा चो है प्रेसो जान है विशुद्ध है परमार्थ रूप है एक है भीतर बाहर भाव कर है
सत्य है प्रेरपर रीति सत्य है भगवान है नाम जा को पाही कृष्ण व है तै वास देव कतु है ११

हेरतु गणयत जो ज्ञान रूप वास देव है सौत पकर है नही मिलै है यज्ञ कर है नही मिलै है ॥ प्रन्नादि कके वाटे कर के नही मिलै
है गुरु ते नही मिलै है वेद कर के नही मिलै जल ॥ प्रजिन सूर्य ईन की उपासना कर है नही मिलै है एक महां तन की चरन रज को
जो प्रविशेषता कर है नही मिलै है १२ जिन साधुन के विषे ग्रामीन कथा को नास करण वारो ॥ प्रेसो जो भगवान को गुरा नुवा
द सो गाई है जा गुरा नवा द को दिन २ जो सेवन सो मुक्ति की जो ईषा करै ता की वास देव के विषे प्रेसो जो मति है ता य है १३

रतु गणों तत पसान पातन चै जपानिर्वपणा इत्याह ॥ नष्टं दसानैव जलाग्नि सूर्योर्विना मृत्या सार जो निषेकं १२
यजोतम प्रलोभगुणानुवादः प्रस्तुयते ग्राम्य कथा विधातः निषेध भारो नुदिन मुमुक्षोर्मतिं सती यच्छति वास
देवे १३ ॥ प्रहं पुरा भरतो नाम राजा विमुक्त दृष्टुति संगबंधः ॥ प्राराधनं भगवद्दुमानो मगसंगा द्रुतार्थः १४
सामां स्मृतिर्मगदेपि वीर सुस्मार्चन भवानो जराति ॥ प्रयो ॥ प्रहं जनसंगा दसंगा विप्रं कमानो वित्तन प्ररामि ॥
तस्मान्तरौ संगसु संगजातः ज्ञानासने हंच विहृक्त मोरु हरिं तं दीया कथन स्मृतिभ्यां लक्ष्मि निर्यात्प ति पार
मद्रना १६ ईती श्री भागवते महा पुराणे पांते पंचम स्कंधे द्वादशोऽध्याया १२

तेने एधी तुम को नही नरां कर है है पतिले मै भर्तनाम राजा सौत भयो छोड दीयो है देखा सनो संग जानै भगवान को ॥
जो प्राधानि नाय कर है मग के संगत मग होत भयो न स्व भयो प्रयोजन पाको १४ देवी रम्य देह मै श्री कृष्ण की पजाते भई स्मृति
सो मो को नही प्रेसो लो उ है जाते जन न के संगत संका करत नि संगत के थ के ले डो लतु १५ ताते नर देह है सो मतात्मन को जो संग
ता कर है गयो है मोर जाते ए सो होत संते तर की जो लीला ता को करी वीय स्मरन करवो ना कर है पायो है स्मर राजा ने सो संसार को जो

पारता हि मा प्रहोतैः प्रथवासंसारजोतरजैः हरिप्रामितोः १६ इतीश्रीभागवते मत्परापुं चमस्ते वाहरोध्याया १२
त्रयो ह्येता विरक्तो यत्तथा तत्तु निरूपरा इतीवैराग्यतया भवाटवी प्रवरयते १ ते रवकी प्रधामे विरक्तकृतत्वको निरूपरा
वृथाहं पाते वैराग्यमेव हृदयरवे के लीये भवाटवी प्रवरयते १ भूरत जीवतु गराते के रैहें १५ स्तर जो नागता मैता मै रजन मस
त्वगुणन कर के न्यारे २ कीये जे कर्म निवे कर वे के लीये हवैहें रासो जो यत्प्रसिद्ध जीव समस्त सो सरय के लीये भमन मायाने प्रवेश
बरी जो भवाटवी ताकं मा प्रहोतैः सुखतुं नही प्रामितोः जै सै वन जा रो रा डो ला हवैहें ते सै यत्तु डो लेहें १ या भवाटवी मै ये जो चार तेत

हो स्तरा उवाचः दुरत्ययेऽध्वन्यजयानिवेशतो रजस्तमः सुखविक्लवर्जं द्रव्यं सरास्यार्थं मपरः परिभूतं न
वाटवी याति न समर्पिहंति १ यास्यामि मेषगुणदेवदस्य वसापै विलुपंति कुलापुत्रं वः लात गोमायवौ पञ्चतुरंतिसा
पिं कं प्रमता न विश्वयथोरणं कका २ मभूतवीरुत्तरागुलमनूरे दोरदसे मेशा के रूप इताः अविनुगधव उप्र
पञ्चति क्वची चासुरयो लुक् अतुं ३

सिनहें नापक जा को रासो जो सार्थता पि पुलते लूटैहें या भवाटवी मै सारहें सो सार्थ मै स्थित जो वस्तु ता पर लैहें जै सै सारीहें
ते मै डको तर लै जायते २ वज्रत जेल ता तरा गुल्ल इन कर के गड ड जो डास मा धर इन कर के उपद्रव के प्राप्त हैं कभरा कगंधर्व
पुरतै ता प हवैहें राकव डोले वैग जा को ३ सौ जो स्तर को पिशाचताय हवैहें निवास जल द्रव्य इन मैहें सभाव जा को ३ सौ
है वही जा की ३ सौ जो जीव समस्त सो भवाटवी मै जल तता दोरेहें कभरा वधरैहें

७ रो जो धरता नै दिशान नी जानी रज कर के ड के रैहें नेत्र जा के ४ नही ही पैंहें ३ सौ जो क्लीति न को जो या हता कर के कान न मैहें सल
सोय जा मै उत्सून की जे वाणी तिन कर के डुबीत हैं मून जा को ३ सौ पुन जो हसति नै ३ सौ कर के भय कर के पीडित हैं कभर गत
स्त्रा के जल तिनै दोरेहें ५ कभरा कनती ते जल जिन मै रासी जे न ही तिनै जल पीवे के लीये दोरेहें कभर अन्त पासन नी रोहें तव ३ सौ
नते मा गैहें कवतु मन मै रोहै के ३ सौ जिन कर के न ममयो डख के प्रामितोः ३ सौ समय यजन मैहें प्राजा जैहें सो निर्वदुःख प्रामितोः ३ सौ
हु जो रावर नै तर लीयेहें ३ सौ जा को पाई ते डखी लोय हें चित जा को सो सो च करत मोत करत मर्षी को प्रामितोः ६ कभरा कगंधर्व पुर मै म

विना सुतो रिद्वरा मवु द्विस्तु सतो धावति भो प्रदव्यां क्वचि न्नुवा सो यत्तु यां भूमा दिशो न जानाति स्वलास ४ ३ सौ स्पति
लो स्वरा कर सुल उल्ल कवा भिष्यतो न रासा अपमृहसं ह्यते सुधा दितो मरी चितो याम भिधावत क्वचित् ५ क्वचि
दितो या सरतो भियाति परस्परं चालयते निरधा ३ सौ सा धिषा व क्वचि द्दमत मो निवी घते क्वचि यक्षै रत्ना सु सु रै रत्न स्वः क्वचि
निर्विशाचेताः शोचन विमुहीयत्तु पपात कश्चलं ६ क्वचि च्छगंधर्व पुरं प्रविश प्रवो हते निर्द्वत वल्लभ ७ चलन क्वचित्
कशक शर्करा धिर्नगा सरुधु विमना रवास्ते पिरे पदे म्पतर व विना दितो उद्वकः क्वचि तिर्वजनायाः ८

विष्टो कैं हो परी प्रानंद कूं प्रामितोः ७ कवतु राक कोटे कां कर इन कर के विधोहें चरन जा के पर्वत पैं चढो चावें जाई नही तव
विशरण योहें मन जा को ३ सौ रोहेंहें छिन छिन मै भूव कर के पीडत कुंडवीहें सो प्रपने जनन पैं को ध करैहें ८ श्री हरिः

23

विनवांधोपसरोरवितरन्विपत्तः १३

77

धनेक्षचित्तमाक्षाफिरनंदरणयत्त्वस्वीगृहीत्वागजभीतं प्रास्थिताः १८

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अतः कथंचित्सविमुक्तं प्रापदा पुनश्च सार्थं प्रमसत्परिंदम अध्वन्यमुष्मिन्नजयानिवेशितममनजनो
द्यापिनवेदकश्चन १८ रुग्णत्वमपि ह्वध्वनोस्यसंन्यस्तदंडस्यतमुमिमत्रः असज्जितात्मारिसेवयसीते
जानासिमादातरानिपारं २० राजौवाचः प्रलोन्जन्मासिलजन्मशोभनं त्रिंजन्मभिस्त्वपरैर्यमुष्मिन्न
नयद्विष्टीक्रेरापशः सुतानां सुतात्मनां वः प्रचुरः समागमः २१ नृस्यद्वतत्वचरणाच्चरेण निर्देतात्सोभक्तिरधो
सजेमला मर्तृक्रादस्यसमागमाजमेदुस्तर्जमूलोपरतोविवेकाः २२ श्रीराधाकृष्णभाननाः श्रीररिः १

साधुतिनकोसमागमवज्रतनलीतेतैं जोसाधुइंद्रीनकेइस्वरजोहरितिनकोजोसतानरवैंयुद्धकीयोतैं प्रात्माजि
 नैं २१ नुस्तारेचरणारविंदकीरेणुकरवैं हरगयोवैं पापजाकों नाकीभगवानकेविषैंनिर्मलभक्तहोईयत् प्राश्न्य
 नलीतैं जातुमारीहोपडीमात्रसेवाताकोजोसमागमजातैंबांधीतैंजइजानैं प्रेसीजोमेरोप्रज्ञानसोनखरोतभयोः २२
 जेनमसाधुबडेतोतिनकूनमस्कार छोटेनकूनमस्कार तरुणहैंतिनकोनमस्कार हंसचारीहूपलेतिनैप्रवधत

सोयएध्वीमैविचरोतोंतिनकंनतेनमुस्कारतुमतेराजानकंनत्यानलोय २३ शुद्धदेवजीकतेतें राजाउत्तरातेंमाताजाकी
 असेंहेराजासोजोहंसअखिलेवैरावडाजिनकोप्रभाव प्रपनेप्रपराधकंनलीगिनेतें असेंजोभरतजीबडोकतराकूरतें
 सिंधुदेशाकंनराजारतुगणतालेअर्थआत्मतत्वकोउपदेशाकरकेरजगणनैकतरासहितबंधनकीयेतेंचरनजिनके
 रनसमुद्रकीसीनार्निप्रलैतेंइंद्रीनकीलतरजामें असोलेआसयजिनजों सोयाएध्वीमैविचरतभरा २४ सोवीरदेश
 कोजोराजारजगणसोखजनजोभरतजीतिनतेपायोतेंपरमोत्ताकोनत्वजिनै आत्मामेंअविद्याकरकेआरोपितकीनी

नमोमहर्ष्योस्तु नमः शिष्यभ्यो नमो नृपभ्यो नमः प्रावदुभ्या ये ह्योत्तरागामवधत्तलिंगाश्चरन्ति तेभ्यः शिव म
स्तुराज्ञां २३ श्रीशुक्र उवाचः इत्येवमुत्तराभाताः सर्वैश्च स्तर्षिस्तुतसिंधुपतयेऽप्रात्मसत्त्वं विग्राहयताः परानुभा
वः परमकारुणिकतयोपादिभ्यस्तु गरीनसकलरागभिवंदितचरणाः परार्णवाव इव निभतज्जरीर्ष्याश्रयाध
रणाभिमां विचचार २४ सौवीरपीतरपि स्वजनसमवगतपरमात्मसतत्त्वप्रात्मसत्त्वप्रात्मन्यविधाधारापिताच
हे सात्मनिं विसृज्य २५ एवंहीनपभगवदश्रुतानुभावः २६ राजोवाचः योऽर्वा इतुवदुविदामरा भागवतत्वया
भिरितः परोक्षरावचसाजीवलोभवाध्यासप्राप्यमनोषिद्धया कृत्यतविषयेनाजसाप्रयुत्यन्तलोसमिधुगम

हेतु मैजो प्राप्ति ममिता यद्ये ड देत भयो तेरा जो भगवान् बुं प्राप्ति जो भूत निन को प्राप्ति जो रतु गरा ना को रा सो
मभाव तेरा जो प्राप्ति मला भागवत उवेता जो नुम निन ने जो या वन जारे के रूप कर के जीव लो क संसार रूप पव
न सो वरी न कीयो ऐसी विवेकी न की बुद्ध कर के ई जान वै मे प्रावेत प्रना पास मोर जो वित प्रत्त न लेना क पा को अर्थ

नली प्राप्ति हो है धोते या संसार मार्ग में जो संचार है प्रारम्भ
इत्यादि कथ्या योग्य प्रसार प्रालोक हो इती श्री भागव
त्रेपंचम स्कन्धे त्रयोदशाध्याया १

चतुर्दशो भवारूपरूपक्या ह्यतीक्ष्णता प्रस्तुते हस्यगोमायुमसकाधनुकल्पने १ चौदहवीं प्रध्यायमें भवारूपीको जो
रूपताकी जो व्याख्या सो करैतैं चौरस्वारमाधरइनते प्रादिले के जो प्रथम तिनकी जो रचना तिनकरके वरीन करैतैं १
जो परीक्षतनें प्रथी सो सुकृदेवजीवोले दे राजा पोयत प्रसिद्ध जीवलोके सो देहात्ममानी के सत्वादिगुणा विशेषसति
न करैतैं न्यारे २ रचे प्रेसे जे कुशल मिले प्रेसे जे कर्म तिन करैतैं रची प्रने कहेतु न की प्रावली तिन करैतैं जो विषय इन
करके प्रनाह संसारमें जो प्रनुभवा को धाररूपछे इंद्रि न की वर्गता करैतैं दुर्गमार्ग की सीनारी सुगमनरी प्रेसे जो संसार

श्रीसुके उवाच: यद्यदेहात्ममानिनां सत्वादिगुणा विशेषविकल्पीतकुशलासमवतारविनिर्मितविविधि
देहावलभिर्वियोगसंयोगाद्यानाहिसंसारानुभवस्य धारभूतेन सृष्टिं द्विषवर्गणातस्मिन् दुर्गध्ववधसुग
मेध्वन्यापतित ईस्वरस्य भगवतो विस्मोवसवर्तिना मायया जीवलोको यं यस्ववशिष्यार्थो धीपरः स्वदेहनिष्ठा
दितकर्मनुभवः स्थानवहं शिवतमायां संसारादव्यागतो नाद्यापि विप्रलवतुप्रतियोगे तु स्तनापोपसमनी
हरगुरुचरणा रविंदमधुकरातुपहवीमवरुंधे १

मार्गतामें ईस्वरभगवानुवसवर्तितैं प्रेसी जो मातानें या संसारमार्गमें डारैतैं जे सैंवन जारे को समुत्तधनके लीये डारो
डोला दे डोलैतैं प्रपने देह करैतैं सिद्धकीये रासे जे कर्म तिन कीये प्रनुभव जाके समान की सीनारी प्रमंगल एसी जो संसा
रादवीतामें परोतैं बुतन जे विप्रतेतैं जामें प्रेसी तैं चैथा जाकी प्रवभूनाई संसारके नापन की नास करन वारी हरिगुत्
तनन के चरणारविंद के जो राजे साधन तिन जो जो पदनायन लीया प्रिले तैं या भवारूपी मेछे इंद्रिना माधरके चौरते १

जे सैं चौरधन कंतु रलैतैं जे सैं जे इंद्रि साक्षात्परलोक को साधन धर्म के योग्य वतन कहेतैं मिलो तरिके प्रागधन को करन
वारों प्रे सो जो धनताय जे इंद्रि दर्शन प्रवरा प्रात्याद प्रवधान संकल्प ईन करैतैं वरमे जो भोगना करके कुबुद्धी प्रजिता
त्मा कंतु रलैतैं जे सैं सावधान नलीवन के जायता को चौरतरिलैतैं २ जा भवारूपीमें कुरं ववे जो लोकनाम करके स्त्रीपुत्रा
दिकते ई कर्म करैतैं लारी स्वार सैंतैं कुरं ववे की ई छानरी करैतैं तो ३ पुत्रादि कहेतैं तरिके को तरलैतैं जे सैं लारीने
इकलै जातैं ३ जे सैं वर्ष वमें जो जो नली वारैतैं वीज जा को प्रे सो जो रेत सो वधी के सैंमें गुल्लन रा लता ईन करके गहर सो

यस्यामुत्तवारनेयद्विंदियनामाना कर्मणा हस्ववारावते १ तद्यथा पुरुषस्य धनं यत्किंचित्साक्षात्कर्मोपयकं वतुषु
प्राधिगतं साक्षात्परमपुरुषाराधनलक्षणा यो सो धर्मस्तु सांपराय उदाहरं नितद्वर्धनं दर्शनस्य दर्शनप्रवरा
स्वाहना वधारा संकल्पव्यवसायग्रत्यामोपभोगेन कुलायस्याऽजितात्मनो यथा सार्थास्य तथा जितात्मनो विले
पति २ प्रथमवयवकोटुं वीकादारापत्यादयो नास्ता कर्मणा वक्रशृंगालायेव प्रनिधतौ पि कर्ष्यस्य कुटुंबिनि उर
राकवत्सरसमागमिष्यतो पितुरिति ३

हो जायतैं प्रे से गता प्रमकर्मन को रेतैं जापरमें कर्म तैं उच्छिन्न नली तैं जाते यत घरतैं सो काम रूपी रिपारी तैं जे सैं
करकी डि कीया में ते कर उड जाय परंतु संगंधन ली जाय एसे घरमें ते सवासना नली जायतैं ४ तामार्गमें परो जो जन
सोडा समाधरन की तुल्य नीच लोक तिन करके प्रोरी डी पंथी चौर मसे ईन करके नास कीयो तैं वातर को प्राधन जा
को या संसारमार्गमें भ्रम प्रविधा का मकर्म ईन करके उपर तें जो मनना करि के गंधर्वपुर के तुल्य नर लोक नायसा चौ

जानें दे रहे हैं भिन्ना हैं इच्छा जाकी ५ कवत मग्न तस्मात् जो जलना के तुल्य विषे जिने दोरे हैं पान भोजन मे युग्म ई
सादि जे विसन जिन में चंचल हैं ६ कवत राक प्रसेख होय जो स्थान प्रणि विषा प्रे तुल्य लाल हैं वरी जा को जो
गुरा कर रहे रची है बुद्धि जाकी सो सुवर्ण को गुरा कर रहे की इच्छा करे हैं जैसे प्रणि काम कर रहे जातर सीत के मारे का
पै हैं सोवन में प्रणि की नाई जरे हैं जहां तहां उधरत डोलें है पि सा चनाय प्रणि जानि के दोरे हैं नाय प्राप्ति नरी हो हैं

यथा तनु वत्सरं सुष्म माराम यद्दुग्धं जंक्षेत्रं पुनरेवावपन काले तुल्य मत्स्य गो रुद्रिर्गुरमिव भवति १
यमेव ग्रहा प्रमः कर्म क्षेत्र यस्मिन् तस्मिन् कर्म एतत्सीदती पदं काम मकरं दराय प्राव सधः ४ तत्र गतो है ?
सकस माप सदैव सनु जैः सत्त्व भसकंत तत्स्वर भूषिकादि भीरु परुध्य मानवति प्राणाः क्वचित् परिवर्तन मा
नोस्मिन्त ध्वन्य विद्या काम कर्म भिरु परुक्त मनसानुपपन्नार्थं नर लोके गंधर्वनगर मुपपन्न मिति मिथ्या
दृष्टीरनुपपत्ति ५ क्वचिद्वात पोदिक निमान विषयानुपधावति पान भोजन मवाया दिव्य सन लो लुपः ६ कि
क्वचिद्वायो यदोष निवहनं परिष विषोषत दृष्टी गुरा निर्मित मतिः सुवर्ण मुपदिस सग्नि काम जातर सत्सु

प्रार जो प्राप्ति होय तो नाय पि सा चने न क्षरा की यों सोई मरे हैं ७ प्रसेली जो सुवर्ण दोरे हैं सो मरे हैं ७ कात समें निवास
पानी इव्य प्रपनी जीव कतिन में है चित्त जाकी सो या संसार टवी में इत उत दोरे डोलें है ८ क भूरा क भूरे की
सी है उपमा जाकी एसी स्त्री तानें प्रजे मे प्रारोपन की यों ता समें भयो जोर जो गुरा ना कर रहे व्याप्ति हैं नेत्र जा के प्रसाध

हैं मर्यादा जाकी प्रे सो जो जन सो दिसान में पुण्य पाप के साक्षी जे देव तानि ने नली जानें हैं ९ कात समें प्राप ले एक
वेर जानो है विवेक को रूंगे भाव जानें प्रे सो तं है परंतु देव में अभिन्त वेराता कर के अष्टोय गइलें मति जा की ता स्मृति के
भूषा तें मग्न तस्मात् के तुल्य विषे जिने दोरे हैं ९ क भूरा क भूरे की सी नाई प्रति कुरो सो उत्साह ता को जो
संभ्रम जै सै वाय तै सै प्रत्यक्ष वेरी राजा तिन को जो कुलना को जो कि प्रकृति र बोता कर रहे प्रति दुरवी है कांत दृष्ट जा को १० सो

प्रथम द्वाचिन्त वास यानो यद्दुग्धं घने ककामोपजीवना भिनिवेश एतस्यां संसार टव्या मित स्तनः परधावति ८
क्वचिद्वातौ यम्यया प्रमदया रोतु मारो पिता स्तत्काल रजसार जनी भता इवासा धुमयी दौर जखला सो दिदेव
ता प्रति रज खल मतिर्न विजानाति ९ क्वचित्सुदृढ गति विषय वेत ध्वस्यं पराभिधाने न विभ्रंसित स्मृतिः
स्तयैव मरी चितो य प्रायास्ताने वाभिधावति १० क्वचिदुल्लङ्घित्वा स्व नवदनि पुरुष रषत भसारो यं प्रत्यक्ष वा
रपुराज कुल निर्भिर्त्सितेनाति व्यथित करण मूल दृष्टया ११ सयदा दुग्ध पूर्व सुकृत तदा कारस्तर का कतु गध
पुण्य दुग्ध मलता विषो दयानवड भयार्थ सन् ईती विरान् जीवन्मत्तान् स्वयं जीवन्नीय माण उपधावति १२

जव भोग कर ली यो है पतु लो गुरा जानें ता समें विवेक जे हृक्षलता विष के को प्रातिन की सी नाई देखो प्रयोजन ना कर
रके सत्य प्रे सै जे इव्य तिनें प्राप जीवन मृत कतिने लेवे कं दोरे हैं १२ एक समें प्रसाधु के प्रसंग तें वंचित करी हैं मति जा
की सो पा लो क पर लोक में दुख को है न वारो रा सो जो पाखंड नाय प्राप्ति हो है सै विना जल की जो नरी ता के गहला में जो
रुं है ता को तत्काल सिर फुटे पीछे वेदना प्रामि हो है १३ जा समें प्रार न हूं वाधा है प्रे प्राप हूं प्रलन नरी मिले हैं नव पिता

एव तिन को तन मा चतुर्जो कालु पें दे रहे हैं

भा.पं.
४९

84

तिनलो कनक बाधा है १४ कनक प्यारे जो प्रथम निरकर र हित र सो जो प्रपनो घरता य प्राप्तो य के जैसे कोई दो में
ज रहे ते से सो के रूप प्रगिन कर के जरत निर्वेद कं मा मितो १५ कवतु काल कर के विषम कीयो १६ सो जो राजकुल सो
ई मयो रास सता नै हरलीयो १७ प्यारो धन रूप मारा जा को गयो ते जीवल ह्यरा जा को सो मन न सोर है १८ कल
स में मनोरथ में प्राप्त भयो ते पिता मल निन नै प्रादिलै के ते गूदे है परसा चे से अनुभव करे है जैसे सप्र के देव वंसा
चो माने है १९ कवतु अरा प्रम बुं जो कर्म को न व्यात का जता की जो प्रेरणा ता को जो बडो विस्तार सो इन यो पर्वतता

एक हास सत्संगा दिष्टु तम तिर्ह्यु द क प्रोतः सवलन बहु भयतो पिदुर वरं पा वंड म भियाति १४ प हातु पर
बाध पाधा प्रात्मने नो पन म नित हाति पितृ पुत्र वर्ति कतः पितृ पुत्रा व्याख्यतु म सयती १५ कचित्काल
विधि मितिराज कुल रस सा पद न प्रियतं म धना सुः प्रसन्न क इव विगत जीवल ह्यरा प्राप्ते १६ कदाचिन्म
नोरथो पगत पितृ पितृ मला ध सत्स हि ति स्वप्न मि वत ह्यरा मनु भवति १७ कचित्काल प्रम प्रमे चो दता ति ना
र गिर मारु ह्य मा रणो लो क व स न क धित म ना कं र क श क र ह्ये त्र म विद्या न्ति व सी द ति १८ कच ड स ले न का या
भ्यंतर व घना गरी न सारः स्व बु दु बा य कु द ति १९ सरा व पु न जी हा ज ग र अ ली तो धे न मु ष म ज्ञा प्र त्पार ण ड
पंचद वे की दृष्टा करे लो क न के जो विस न ति न कर ड र वी है मन जि न को जे से कां दि कां कर न के जो खेत नामे प्रवेश को
ने ड र व लो है जे से या सं सार व न में ड र व प्रा मि लो है २० कवतु एक ड स त प्रे सो जो सरी र में ज ड रा जि न ता कर के अ तु
ए को यो है सार जा को सो भू र व के मारे प्रपने क ड व पे जो ध करे है सो इ नि द्रा क प जो य ज ग र ता ने गृ ह रा की यो है

सब इवा प वि द २०

कात स में दर्जनरी जो सर कर ति न नै तोरी है मान रूप डाह जा की नरी पायो है नी ह जों प्रवसर जानै दु धित जो बुरा ना कर
कै न व भयो है विज्ञान जा को सो ड र व मे गि रे है जे से प्रां ध रे प्रां ध रे के प्रा गि रि रे २१ कवतु वन में जे से स रित नार वे
हं जा पत व मा री प्रा प ल गे जे से य रा प रा इ स्त्री प रा यो द्र व्वा ना की दृष्टा करे है ताल तो मि ले न ली प्रार जो मि ले तो रा
जा के लो क न कर के वा प रा इ स्त्री ना के स्वा मी नै प कर के मारो न व प्र पार ड र व रूप न र क मे गि रे है २२ पाते प्रे से ले ता
ते पा लो क पर लो क मे सं सार को से व क र्म ता य करे है २३ जो वं ध न ते धुरो द्र व्वा स्त्री रा ध ल ग ग र्द सो ता नै जो जो रा व र

कदाचि द्वा ज न मान दं दं दर्जन दं द स कै र ल ध नि द्रा ह्य रणो म यी त र द ये ना नु क्षी य मान विज्ञानो ध क पे
धा व त्त ति २१ वर्ति स्म चित्ता म म धु ल वा न्वि चि न्व न य हा य रा पर हा र पर द्र व्वा ण व रुं धा नो रा ज्ञा स्वा मि
भि र्वा न ह तः प त स पर नि र ये २२ अथ च त स्मा द भ य था पि ति क र्मा स्मि न्ना त्म ना सं सारा व य न मु हा द रं ति २३
मु क्त स्त नो य दि वं धा दे व द्र त उ पा धि न त न स्मा द पि वि त्तु मि त्र इ त्प न व स्थि ति २४ क्व चि त्सी त वा ता घ ने का
धि दे वि क भो त क स्त्री या ना द शानां प्रति नि वार णे ड क लो रं न धि या वि ष र ण प्राप्ते २५ क्व चि त्नि धो य व त र
नू य किं चि द्द न म मे भ्यो वा का किर ग का मा त्र मु ष प र नू य किं चि वा वि दे ष मे त वि त वा द्या त् २६

है सो छि डारि के लै जा है यत भोग कर के को समर्थ नरी तों है २७ कवतु एक सीत वात ई न ते प्रादिलै के प्र ध्या त्त प्र धि
भूत प्र धि दे व इ न की जो द शानि न के ड र व के प्र स म र्थ ते ड रं त चि ता कर के वे द यु क्त र है २८ कवतु ओर न स्त
र सार धन यो तार करे है जो धन मे वी स को डी मा त्र तुं वा नी र रि जा प न द य तो वे र करे है २९ या सं सार मार्ग मे ये ड र व है

जोन से सख ड र ग दे ष म य प्र मि मान प्र ना ह २५
मा द यो क

भा.पं.
४२

मोहलो नमस्तर अपमान भय व्यास प्राधियाधि जन्म जरा मरणा इनेते प्रादिलेक हैं २० अवतर की माया स्त्री
ताकी जो भुजाते ई भईलता जिनको प्रातिंगन करै हैं जान जाको नयरो यग पोरें स्त्री के विहार के लीए परवना पवें को
प्रारंभता करैं व्याकुल है हों जाको परमें भये बेरा वेरी तिनकी तो तिली वो लन चितवन बेधाति नैतरे हैं हृदय जाको
मरी जिसे रें मन जानें सो अपार जो प्रधन मताते प्रापुं जा रें २० काल समें इस्वर जो भगवान तिनको जो चक्र पर

प्रधन्य सुस्मिन्ति मनुष्य सर्गस्ततः सुखदुःखरागद्वेषभयाभिमानप्रमादोन्मादसौकमेतलो नमात्सर्व
व्यावमानस्य यासाधियाधि जन्म जरा मरणादयः २० अपि हेव मायया स्त्रीया भुजल तो पिग्दाः प्रसक्त
न विवेक विज्ञानो यद्दीगार गहारं भाकुल हृदयस्तदा प्रपावशति सुतदु रित्र न लित्र भाषता वलो क विः
चेष्टता यद्दय प्रात्मान मज्जतात्मा परिघेति मसि प्रतीरोति २० कदाच हीस्वर स्प भगवतो विस्मो भूजास
रभार वादि द्विपरा द्वाय वर्ग पुल्लसणा सरि वर्तिते न वय सारं त सारत प्रा संस्तरा वादिनां भूतानां मनि
मिषतो मिषतां विस्तर हृदयस्तमेवेस्वर काल चक्र निजा पुद्गसा सा भगवत यज्ञपु मना हस पाव ड देवताः कं
ग्रध वल वर प्रायी प्रायी सम य परता सां के सेना भिधते २५

मान जाकी प्रादिने परा द्विजा के प्रंत में ताते डरे हैं जो चक्र प्रपने वेग करैं हं ताते ले हैं तिन का पयंत भूत है तिनैः
हरे हैं नास डरे हैं हृदय जाको काल चक्र हैं प्रापुद्ग जाको ऐसे जो सा सात भगवान् यज्ञपुर्ति नैः प्रनादर करैं
आव नय लाव न की धन न के लया जो पाखंड देवता तिनै पाखंड हैं प्रागम करैं सेवन करैं १५ श्रीरः १५

जास में तिन पाखंडी न करैं वुरत वंचीत की यो प्राप करैं ठगो गपों न वहां स्तरा कुल में प्रवेश करैं तिन हो स्तरा को सो पज्ञो प
वीता दिक्कृती स्मृति इन के जो कर्म तिन को जो प्रनुयानता करैं यज्ञपुर्ति जो भगवान् तिन को जो प्राधन नापनरी रुचि करत
सूद कुल को सेवन करैं जो वेद के प्राचार ते प्रश्रु हूतें जा के स्त्री पुरुष को भाव कुटुंब को भरण यरी गो पारतें जैसे वदरोन की जात में

पदानुपाखंड भिरात्म वंचतै सैरु वंचतो ह स्त कुलं समावसंते यांशी लमुपनयनादि प्रौत स्मार्त कर्म नुयाने
न भगवतो यज्ञपुरुष स्या राधन मेव तदरोचयै सृष्टिकलां भजते निगता च रे शुद्ध तो यस्य मिथुनी भावः कुटं व
भरणं यथावानर जाते ३० त जापि निरवरोधः स्वेरेण वितरन्ति सुपराग बुद्धरमो ममुख निरीक्षणादि
नाग्राम कर्म रौ व विस्मन कालावधि ३१ क्वचितु मवै है का ध्ये पु गते पुरस्य न्यथावानरः सुत हारवत्सः
लोव वाय सरणाः एवम ध्वन्य वरुंधानो म सुगज भयात् मसि गिर कं हर प्रायेः ३२ श्री राधा ह स्मा यनः

तासं द कुल में मति वंधर तीत यथेष्ट विहार करत प्रति क परातें बुद्धि जा की स्त्री सरव कुं पय हे रें हैं पुरुष के मुष कुं स्त्री हे रें
हैं ता कर के भुल गई हैं काल की प्रवध जा की ३१ अवतर क हृदय न की सी नाई या लो क में है प्रथं जिन को रा सो जो परता मे रें हैं
जैसे वदरा प्रपने वेरा न मै वदरी यान मै पीत करैं मैथुन करैं तै सै ईयत करैं प्रै सै सुख दुःख में प्राप्ते हैं ३२ जैसे वन में राधी को

प्रयती ई तै सै म सुरी राधी तै सै ली पते पवन की बं दरा चर

भा.पं.
४३

४४

वडे रोगादिक प्राप्यतामै परे हैं ३३ कवत एक सीतवाने अनेक देवता भूत नहैं भये दुःखतिन को जो निवारण ताके कर
वेमै असमर्थ दुरंत जे चिंता निन करै दुखी रहै हैं ३४ कवत एक बोलार करत धन की वचना करै धन नहै नाप प्राप्ति होई
कवत एक धीन भयो जो धन जा को सेवा प्रासन भोग इन करै तोन और ते मागे हैं मिलै नही तब अपमान को प्राप्ति हो
है ३५ ऐसे धन के संग वडे वैर जा को पाली वासना करे परस्पर जो बोलार जा जाय करै ३६ पास सार मार्ग में ना
प्रकार के जे लेश उपसर्ग निन करै बांधित है आपस कूं प्राप्त होई मरो ते नाय तरां छोड़ै और भयो जो वात क नाय ले कर
कचि च्छीत वाता धनै कहै विक भौत्ता मीयानां दुःखानां प्रति निवारण कस्यो दुरंत विष विषरा आस्ते ३३
कचि निथो व्यवहर नृपालिं चिं दन मुपया नि विन साद्यो न कचि नृही राधनः सेवा सनाद्युपभोग विलीनो
याव ह प्रतिल ध्वम नौरयो पगत स्या दाने व शिवत म तिस्त तस्ततो वमानादि निजनादि भिल मते ३४ रावें
विनय निधंग विद्वद्वै रानुबंधो पिरव वासन पा मिथ उद्धृत सथा पवति ३५ एत स्मिन् संसारा धनि नाता
लेशोपसर्ग बाधिकत प्रापन्त विपन्नो यस्तु मुत्वा वेत रस्त विस्मय तं जात मुपाय शो धन मु धन वि म्पद
विनहन संरूप गायन्ती पमानाः साधु वर्जितो नै वावर्तते पापयत आरध्व एव नर लोक सार्थस्त मे धनापारमु

कैवल्यो जायौ जैसै वंजरो ते सै सो च करत मोर करत डर पत विवाह करत विहार करत कवत रोवत कवत सत कवत गावत डो
लै हैं प्रवृत्ता इया संसार मार्ग में भटकै हैं या मार्ग को जो पार नाय नरी प्राप्ति होई ३६ जो योग को अनुसासन नाय नरी सेवन करै
साग की घोरे जिन्हें उपसम मै हैं सो लजिन को आत्मा राम प्रेसो जो मुनि ते जाय प्राप्ति होई नाय तर लोक नरी प्राप्ति होई ३८ पद्ये
उमानि नृहा अरु ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

पाप धी को यही छोड़ै मरै केवल सोवत भए ३८ कर्म रूप जो लता नाय आश्रय करै नर कल्प जो विपति नाते के सेंदु जो छु
टै हैं तोर प्रे संसार मार्ग में वर्तमान नर लोक न के समुत्ति नै प्राप्ति होई तर कूं स्मरण नही करै ऐसे ली जो उपरस्वर्ग भोग सो जा
नर लोक ली को प्राप्ति होई ३९ निन भरत जी को कर्म नाय प्रलो कन कर के गमै हैं राज कर धि भ देव के पुत्र उदार हैं मन जिन को रा सो जो
भरत जी निन को मार्ग नाय और राजा पाप वे कूं योग्य नरी हैं जैसै गरुड के पीछे मार्ग कूं माखी नरी पावै हैं ४० सो भरत दुस्सज मनो तर
जे स्त्री पुत्र सूर हराम निनेत रूपा प्रवस्था मै पाग करत भए जैसै मल को ताग करै हैं काते उत्तम हैं यस जिन को रा सो जो भगवा

यन्तस्त दंडा मुन य उपसम शीलानु परमात्मानाः समवगच्छंति हत वैरानुबंधायां विस्मय स्वयमुप संरुता ३७ ३८
धर्म वली मवलं व्यततः प्राप ह कथं चिन्तर कादि मुक्ता पुनरप्येवं संसाधन वर्तमानौ नर लोक सार्थ मुपया
निरव मुपगी तो पित स्पे ह मुप गायंती ३९ आर्ष भ स्पे तरा ज ये मन सा पि म ला त्वना नानु वर्माः इति नृपो म स केव
गुरुत्मनाः ४० पो दुस्सजान दारो नृमर्षा श्रयं सवरेः स हया व लो कं नै धन्त पत्त ड चि तं म लु नौ म धु दि ह सेवानु
रक्त मनसा भवानु पि प्राणुः ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

न निन की हे लाल सा जा के ४१ जो भर्त जी उपे न छुटै न छोड़ै जाय ऐसे जै पृथ्वी पुत्र स्वजन वंधु इव स्त्री देवता न करै इष्टा
करी हैं नाय नरी इष्टा करत भए सो भर्त जी को उचित हैं जिन को तर की सेवा तें प्रनुरक्त मन हैं निन कूं मो हत छुटै यज्ञ रूप ध
मै के पालक धर्म के करन वारें योग रूप जान के इस्वर प्रहृती प्रे इस्वर नारायण निन के प्रर्थन म स्कार हैं ऐसे उच्चार करत भए

रक्षा की होइ हेत भए ४३ भगवान में समान कीये उक्त

गुराकर्मजिनके प्रेसैं जो राज करी भरतजी तिनको जो चरित्र मंगल को है नवारो प्राय को है नवारो धन को है नवारों पशुं
देय स्वर्ग मोक्ष पुं देय नाय जो सुने करैं प्रादर करै सो गरी जो प्रास कनिने प्रापने प्राप्ते हैं प्रारमे कछु इच्छा नही करै ॥
इती श्री भागवते पंचम स्कंधे चतुर्थो ध्याया १४ एवमथ भिरध्याये भरतस्य नमो ततः पचदशोत्सकी रते वसजानपः ॥
एसै प्राठ प्रध्यायन करै भरतजी को चरित्र कछो प्रार पंद्र की प्रध्याय मे भरतजी के वं सके जे भरा राजा तिनै करी न करै ॥
श्री प्रवृद्धे वजी करत है राजा भरजी वेदा समतना माक हो जा समजि कों कोई एक पाखरी नही वेद मे कछो प्रेसैं जो देवता ना

यज्ञाय धर्मपतये विधि नै पुण्याय योग्य सांख्य सिरसे प्रकृति खराय नारायण पहरये न मद्रस्य हारता स्पनं
मृगत्यमपियः समुत्तर जहार ४३ इहं भागवतं समाजिना वदात् गुराकर्मणो राजर्षि भरत सानुचरितं सुस्प
यनमापु सधनं यस्य स्वर्ग पवर्ग्य चानुश्रुणोत्तारया स्य तमिने इती च सर्वा रावा सिय प्रात्मन प्राप्ता स्तव
कांचन परत इति ४४ इती श्री भागवते पंचम स्कंधे चतुर्थो ध्याया १४ श्री प्रवृद्ध उवाचः भरत स्यात्सुजा सु
मतिर्नामा भित्तो यमुत्तवावके चित्ताखंडिनः कथं भिपदवी मनुवर्तमानं चानार्थ्यं प्रवेद समाप्ता देवता
समनीयया पापीयशः कलोकल्पनियं १ तस्माद् द्रसेतायां देवता जिन्नाम पुत्री भवत् २ अथास्त्या तत नयो देव
धि प्रपती वृद्ध करै पापी कलजुग के वीच मे रचे गैं जो समत कथि न देवजी की जो पदवी जीवन मुक्ति मार्ग नाय वर्तमान है य
हवृष्टी साक्षात् प्रवतार लीयो है प्रेसैं मानै गैं १ ना समती सिंह द्रसेन नाम देवता जिन्नाम पुत्रोत्तम भयो २ ताके पीछे प्रास
मे के विधि देवता जिन को वेदा देव धर्म भयो ताते धन मती मे परमेष्ठी नाम पुत्रोत्तम भयो ताके सुवर्चला मे एती नाम पुत्रो

मरां पुर्व जो दरी तिनको स्मरन करत भयों ४ प्रतीत ते सुवर्चला मे प्रतीते प्रादिलै के तो न पुत्रोत्तम भय यज्ञ करवे मे निपुण न
यो प्रमिहती की स्तुती जो स्त्री नाम प्रज भू माए हो तो तनरा ५ भू मा के ऊर धि कुल्या मे उदगीय भयो ताते देव कुल्या मे प्रस्तावुत भयो
प्रस्तावते निपुत्ता मे विभूत नाम पुत्रोत्तम भयो विभूत के रत के विधि एधु से न तो भयो ताते प्राकुज मे न कुलोत्तम भयो न कुते इतको
वेदा गय तो भयो सो राज कर धिन मे ध्वरे उत्तर जा को ज सरे जगत को रक्षा के लीये अत्रा की पोरे सत्त्व जिनें एसैं जो भगवान् वि
ययात्म विद्यामाख्याय स्वयं संश्रद्धा मता पुर्व मनुसस्मार ४ प्रतीता सुवर्चलायां प्रतीतर्ता दयस्त्रय प्रास मित्त ज्वा को
विदा सुवर्चः ५ प्रतीतर्तुः स्तुत्या मज भौमः नाम जनिषा नाम ६ भूक्त ऊर धि कुल्या या मुद्गीय स्तन प्रस्तावा देव कुल्या
यां हृदय ज प्रासी दिनुः ७ विभूरत्यां च एधु पेशा स्तस्मान् नक्तं प्राकुत्ता जमे नक्तान् इति पुत्रोत्तम राजर्षि प्रवर उवा
रश्रवा प्रजायत ८ साक्षात् भगवतो विस्मोर्जगद् विरक्षिषया अतीत सत्त्व स्य कलात्मवत्वा हिल क्षणो न मता
पुरुषातां प्राप्ता ९ सर्वे स्वधर्मैरा प्रजापालन पोषण प्रीणो पलाल नानुशासन लक्षणो नेप्पादिना च भगवती
मता पुरुषे परावरे हं क्षणी सर्वात्मनाः रित परमार्थ लक्षणो न हं स विचरणानुसंव्यानिहित भगवद्भक्त योगे न
चाति ह्वाशः परभावी तविश्रुद्मतिरूपरतानात्पमिस्वयमुपलभ्यमान हं स्वात्मानुभवोऽपि निरभिमान ए

स्मृतिन की कला है प्राप्तावाने प्रादिलै के ते लक्षण तिन करै मता पुरुषता कु प्राप्ता भयो ९ सो गय प्रजान को पालन पोषण प्री
णान उपलालन प्रनुमासन है लक्षणो को प्रेसैं जो प्रपनो सधर्मता करै यज्ञादि करै भगवान मता पुर्व पर प्रवर रूप हं स
तामे सवात्मा करै प्रपन की पोषण र मार्थ लक्षण धर्मता करै यज्ञादि करै प्रार हं स वेतान के चरन की जो सेवाता करै सि

मिहं भागवतं समाजिना वदात् गुराकर्मणो राजर्षि भरत सानुचरितं सुस्प
यनमापु सधनं यस्य स्वर्ग पवर्ग्य चानुश्रुणोत्तारया स्य तमिने इती च सर्वा रावा सिय प्रात्मन प्राप्ता स्तव
कांचन परत इति ४४ इती श्री भागवते पंचम स्कंधे चतुर्थो ध्याया १४ श्री प्रवृद्ध उवाचः भरत स्यात्सुजा सु
मतिर्नामा भित्तो यमुत्तवावके चित्ताखंडिनः कथं भिपदवी मनुवर्तमानं चानार्थ्यं प्रवेद समाप्ता देवता
समनीयया पापीयशः कलोकल्पनियं १ तस्माद् द्रसेतायां देवता जिन्नाम पुत्री भवत् २ अथास्त्या तत नयो देव
धि प्रपती वृद्ध करै पापी कलजुग के वीच मे रचे गैं जो समत कथि न देवजी की जो पदवी जीवन मुक्ति मार्ग नाय वर्तमान है य
हवृष्टी साक्षात् प्रवतार लीयो है प्रेसैं मानै गैं १ ना समती सिंह द्रसेन नाम देवता जिन्नाम पुत्रोत्तम भयो २ ताके पीछे प्रास
मे के विधि देवता जिन को वेदा देव धर्म भयो ताते धन मती मे परमेष्ठी नाम पुत्रोत्तम भयो ताके सुवर्चला मे एती नाम पुत्रो

ब्रह्मियों भगवान् में भक्तियोगता करके निरंतर रहें सुदृढमतिजीजी जाती ते उपरामकं प्राप्ति है देहादिकमें प्रहंकार जाके विषे प्रैसे जो
अपना चित्तनाम प्रपती प्राप्ति नर भगवान् नित नम अनुभव जिनको निरभिमान होय के पृथ्वी को पालन करत नर १० तपोडुवं
समें भए राजा गयकी गाथा है नायपुरा रावेतागामें है कोन सो राजा कर्म न करके गयको अनु करी करे है जो राजा यज्ञको अभिमानो
देवतवेता है धर्म को रक्ष करे मा प्रभई वल हमी जाको सभा को पति है साधुन को सेव करे तरकी कला है प्रैसे जो गपता विना जो

तस्येसां गथां वां डवेयपुरा विद उपगयंति गयं नृपः ११ प्रतिकर्म नीर्यज्याभिमानो वदु विधर्म गोप्रासमातात श्रीः
सहस्य सति सतां सत्सेवकोऽन्यो भगवत्कलाम् १२ यमस्य धिज्वन परयासदासीती सतासियो हसकं गासरदिः
यस्य प्रजानां दुदुहे धरा सिधो निरापी को गुणवत्सस्तु नो धाः १३ चं हास्य कामस्य च यस्य कामानुदुद राजदुरयो व
लीन पापत्य चिता पुधि धर्म रावि प्रायदा सिधा यष्ट मंशं परेत्य १३ यस्या ध्वर भगवान् ध्वराऽन्नाम धो निमाधः
सुरसो मयी ये श्रद्धा विश्रद्धा चल भक्तियोग समर्पिते जा प्रलमा जहार १४

राजा को नहें कोई नदी ११ जा गय कुं परमानंद करके सत्सु १२ प्रविष्ट करत भई जा गय की प्रजान कं पृथ्वी है सो जैसी इष्टा
नई नहें सैंई मनोरथ न कं परन करत भए १३ युद्ध में धर्म करके जीते प्रैसे जे राजा ते नेट देत भए हां सरा है ते जा के धर्म को
प्रलन को धरो प्रसताय परलो कमें अतुरा करत भए १३ वृत्त सौ है पान जामें रा सो जो गय को यज्ञ नामें इंदु मकुं मा प्रसोत
अथ अष्टाकर के विश्रद्धा जो अचल भक्तियोगता करके समर्पन को यो यज्ञ नाय भगवान् अतुरा करत भये १४

जिन भगवान् के प्रसन्न भये ते यज्ञ में देवता पशु पक्षी मनुष्य लता तरु वृक्ष ते लै हैं सब जीवत काल प्रसन्न होत है सो सब
के अंतर जामी गय पं प्रापती प्रसन्न होत भये १५ गय ते गयंती मै चित्रय सुमति प्रवरोध नये नील पुत्रोत भए चित्रय
ते उरणा में संभार होत भयो भाते उत्कला में मरीचोत भयो मरीचो विदु मती मै विदु मान होत भयो जाते सधामें मधुनामा
होत भयो १६ मुष्टा है विरोचना मै वीज भयो वीरज के विसृष्टी मै सत जित अष्टजित प्रैसे सो वेदा भये रा कं न्या भई ता वि

यत्प्रीताना हर्षिषि देवतिर्यक्त्यनुष्यवीरतरुणा विरंचान् प्रीयेत सधंसरु विस्वजीवः प्रीतिः स्वयं प्रीतमगा इयस्य १५
गया जायंतां चित्रया सुगतिर्वरोधन इति त्रयः पुत्रावभुवुः चित्रया दुर्गायां संभारु जनिषा १६ तते उत्कलायां
मरीचिर्मरीचेर्विदु मतां विदु मानुदयः धर्य तस्मात्सरयायां मधुनामा भवत मधोः सुमेन सीवीर वृत्त सतो भोजायां
मंथुज जाते मंथो सतायां भोजनस्ततो दुषणायां त्वष्टा प्रजिनिषा १७ त्वष्टा विरोचनायां विरजो विरजस्य सत
जित प्रवरं पुत्र सतं कं न्या च विष्टयां त्रिलजातं तत्राप्लोकः प्रीय हतं वंश मिमं विरजश्चर मोद्वः प्रकरो हसलं
क्रीत्वा विस्तुः स्वरागरा मथा १८ इती भागवते मरा पुरा रो पंचम स्कंधे पंचदशोऽध्याया १५

रज को यत्प्लोक है अंत में भयो जो विरज सो प्रीय हत के वंश कीर्तन करके प्रलंकृत करत भयो जैसे जैसे विस्तु है सो
देवतान के गराति नें प्रलंकृत करे है १८ इती पंचम स्कंधे पंचदशोऽध्याया १५ प्रवीतं दीप सिंधादि मानं चिह्नं
स्वरूपता स्पष्टं प्रवक्तु मारध्व पंचाध्यायीत परं १ षोडसेधस्तथा चोर्ध्व परितः शनि वेष्टितः मेरोः स्थितिर्मलीकं ज

अरिं नोपवर्णते २ पतिले कते जे धीपसम इति न को जे प्रमारा चिह्न स्वरूपति नै स्पष्ट क्रतिवे के लीये च प्रधायन को
प्रारंभ करै १ सो ले की प्रधायन में उपरनी चे चारों ओर सुमेरु की स्थिति जो एष्वी रूप जो ब्रह्म लता की कली की सी नाई वरीत
करै २ राजा एषै लें तुमने भूमंडल को विस्तार विशेष सो जरा नाई सूर्य प्रकास करै ३ जरा नाई जो तिगै गान करै सलीत च
इमादिखाइ देयन लता नाई करै १ तहां प्रिय वृत्त के रथन के पैमान की साथ धर के सात समुद्र चले भगवान जिन समुद्र नये या

राजो वाचः उक्तस्वया भूमंड लाया मविशेषो यावदास्ति सप्त पत्रयत्र चासौ ज्योति सांगरौ श्रुं इमा वा सत इत्यते १
तत्रापि प्रिय वृत्त रथ चत्वारि पारिवाते समभिः समसिंधु व उक्ता ॥ यतरा तस्या समधीप विशेष विकल्प स्वया म
गवानुखल सचिता एतदेवा रिलमान तो लहरा म च सर्व विजिज्ञासाम २ भगवतो गुराम ये स्थूल रूप ध्या
वे सितं मनो ह्यगुरो पिसु सतम आत्म ज्योतिष परे ह्यसि भगवत वा स देवा ये क्षम मा वे क्षितुं न दुर्ते न दुरो ह्य

एष्वी के सात धीप विशेषति न की जो रचना सो तुमने संक्षेपते दिखाई पारी कूं मैं प्रमारा तो चिह्न ते सव जानवे की इधा ब्रह्म २
भगवान को जो गुराम ये स्थूल रूपता ते प्रवेश की जो मुनि सो स ह्म रूप में प्रवेश करवे कूं सप्त धीपें जो स ह्म रूप निर्गुरा
आत्म ज्योति रूप हैं ह्म रूप भगवान वा स देव ते नाम जा को जाने पुर गुराम बरी व करवे कूं जो गुरो ३ राजा एषै लें नव श्री
अ के व जी मरा राज कृत न भरा ले मरा राज भगवान को मा पा गुरा विमृता के जे स्थान विशेषति न को जो नाम रूप ज्ञाते जो का

रिजें ड को व समर्थ हैं ता जें संक्षेपते भगोल धि धें को नाम रूप जो धल न नें व्याख्या करै ४ जो यरु जें व धीपें सो भूमंडल को
भयो ब्रह्म लता के जे को शासना धीपति पतिन मै वी च को को शवे सो लाघ यो जन को विस्तार हैं जे से कमल को पत्र गोल को पत्र
तै से गोल हैं ५ जें व धीप मै नो रें ड हैं ते नो नो तजार हैं विस्तार जिन को प्र सैं ६ प्राहु मया रा के जे पवत निन करवें मारे २ की नें हैं
इव प्रा रो त के मध्य में इला हत ना म रें ड हैं ता के वी च मै सो ने को सु मे र पर्वत हैं सव पर्वत न को राजा हैं लाव यो जन को विस्तार ६

अथ रुवाचः नवे मरा राज भगवतो माया गुरा विभूतेः स्थान विशेषाणां नाम रूपताः कायां वचताम न सावा
धिगंतुम लं विबु द्धा पुषा पिपुरुष तस्मात् प्राधान्यो ने व भगोल धि विशेषे नाम रूप मान लहरा तो व्याख्या सामा
४ यो वायं धीपः कुवल य कुवल य ब्रह्म ल को शा भ्यां तर शो श नि पुन यो जन विशालाः समवर्त लो यथा पु स्तर यत्र ५
यस्मिन् नव व धी ए न व यो जन सरा प्रा पा मान्य धु निर्मयी दा गिरिभिः सुविभक्तानि भवंति ६ रायो मध्ये इला हतं
नामा भ्यंतर व र्ध यस्य ना सा म व स्थितः सर्वतः सौवर्गाः कुल गिरिः राजो मेरु धीपों पा म स मुत्ताराः अरि का भूतः
कुवल य ब्रह्म ल स्य मूर्धनी दा त्रिंशत् सरस्व यो जन विततो मले घो ड श सत प्रा ता व तां न भ म्पा म विधा ७ उत्तरोत्त
रे गो ला हतं नीलः स्वतः श्रंगवानि ति त्रयो ह्म कृतिरप म य कुल र्णा व धी र्णा म यी दा गिरि यः प्रा गा यत उभयतः द्वा
रा वा व धं यो दि सरा प्र एथ वा र के कः श्वे स्यात् सर्वे स्या ड त र ड ज र ह शो शा धि मा से न दै यीः एत द्वा संती ८

रहैं भूमंडल की भयो ब्रह्म लता की कली हैं ७ माये सेवती सर आर यो जन को विस्तार हैं जड मै सो लै यो जन भूम मै विस्तार हैं
सो एय हैं चौरा सी तजार वा तर ही से रें इला हत रें ड के उत्तरोत्तर प्रोर नील स्वत श्रंगवान ये ती न पर्वत हैं नेर म्प कृतिरप म य
कुरु पे ज र व ड ति न की भयो रा कृ तें प्र व प्रोर कुल वैं ८ दो उ प्रोर नेर वारे समुद्र में ध सर हैं दो तो तजार यो जन के मेरे हैं राजा व

प्रमृतापमनवचनकरे गिनवे देवान की प्रपुत्र
नवराष्ट्र
मिती ३

एवं हसरोनलाहृतं निबधोते मकुठो विमालय इती मगापतानी लाह्योः पुतपोजनोत्सेधारिवर्षं
 पुर्वभारतानां यथासंभवं ६ तथैवेलाहृतमपररापूर्वेराचमात्यवकुंधमादिनावानीलनिबधायतीति
 सत्तुत्तंप्रथतुः केतुमालभद्राश्रयोः सौमानं विधाते १० मंदरमेतसुपार्श्वकुमुदत्तापुतपोजनविस्तारोनाला
 मेरोश्चतुर्दिशमविष्टं भगिरपउपल्लताः ११ चतुर्वेतिषु चतुर्जंरुद्रहंमयोधाश्चत्वारः पाहयः प्रकाः पर्व
 तज्जेतवईमाधिसत्तुत्तपोजनोत्तात्तावद्विदप्रवितपः सत्तपोजनपाररणा १२ तदाश्चत्वारः पयोमधिहुर
 समष्टजलायदुस्पशिन उपदेवपरणायोऽग्रेष्वाभिविकानि भरतर्षभधारयंति १३ देवोपानाविचम
 वंतचत्वारनंदनंचैचरथं वैभाजकंसर्वतोभद्रमितीयेत्यरपरहृदा सत्तुत्तुदललनाललामद्यपतयउपदेव
 चितनमैचारदेवतानब्रेहस्पतेः १४ प्राग्मकोजामनकोब्रह्मवकोवरकोयेचस्पनमेप्रेथर्वे पर्वतनकीध्वजासैतं
 अधिष्ठतो सोऽतजारयो जनके उंचैतुं सोऽतजारपोजनमेऽतारसायानकोविस्तारुं सोऽपोजन उंचैतुं मोदतुं १३ चारोपतेन
 चैचारत्तुं एवमप्येवमसदितको एवमप्येवमसको एवमीडेजलको जिननेजलपीमनबादे उपदेवतानकोऽराहते

तहां देवतान के चार बाग हैं नंदन चैत्र धवै आ जल सर्वतो भद्र ये उन के नाम हैं जिन बाग न में देवतान की स्त्रीति न में जे प्रेयति
न को जो यथा प्रेयति गंधर्व नगर के गइतें मति माजिनी की प्रेयति देवतान में प्रेयति विचार करै १४ मंदर जो पर्वत ता के मध्य
में गपारै सैं योजन उंचो देवतान को आस लौ वृक्ष ताते पर्वत के शिखर तुल्य मोटे प्रमत्त से मोटे प्रल गिरै १५ ते प्रल जव प्रैतैं तब
प्रतिम धुर गंधत वडो लाल रस सोइ भयो जल जा नर के प्रल गोदा जा को नाम रसी न ही तौ भई सो मंदर गिर के सिधर ते गिरी इला

मं हरोत्संगराभादशाशतयोजनोत्तुंगदेवचूतसिरसो गिरिशिखरस्थूलानिप्रलान्तमृतकृत्यानि निपतंति १५ ते
शांविशीर्यमाणानामतिमधुरसुरभिसुगंधवज्रलारुणरसोदेनारुणोनामनदीमंहर गिरिशिखराभ्युपतंति
प्रवेष्टोलाहृतमुपप्लावयति १६ यदुपजोषणा इवाभ्याप्रनुचरीणां पुन्यजनवपनामवयवस्पर्शसुगंध
वातोद्दृशयोजनसमंतादनुवासयति १७ एवं जंघप्रलानामसुच्रनिपातविशीर्णानामस्थिमायाणा
मिभक्रायतिभ्रानंरसेनजवनामनदीमेरुमंहरसिखरास्थितयोजनानहवनितेलेनपतंतिहस्तिरोनात्मानं

हृत्खंड पर्व की ओर को वलैं १६ पाजल के सेवन ते भमानी की प्रनुचरी पक्षन की वधुंतिन के जे प्रंगतिन को जो स्यरीतान
र के सुगंध प्रै सो जो यज्ञवन सो दश योजन ताई चारो ओर देसन को सुगंधित करैं १७ प्रै सेई जामन की वृक्षता के जे प्रल
ते प्रति उचैते गिरैं जे जानै फर जाय वं वृक्षत छोरी तें उठली जिनमें ताथी के सरीर के १८ वरोवर मोरौ तें तिन के रस कर के जं
वृना भन दी भई सो दस हजार योजन उचै मेरु मंदिर को सिखर तातें पृथ्वी तल मै गिरी इलाहत खंड के दस दश ओर दो के वलैं १९

तानसीके हो। उ. प्रो. र. जो न रतिन में जो माटी सो जा मुन के रस कर के मिले तें पवन सूर्य इन के संग जो ग कर के प्रो. र. त व जं व न
नाम सो नो तो तें सो देव तान के लोक न कं ग नो तो तें २० जा सो ने को देव ता तें तें स्त्री स रित मु क र क ड ला को धनी इन ते प्रा
हिले के ग न ते ति नै व नाय के धार रा कर तें स पा सा प व त से व डो क देव ता के जे खो त र ति न ते नि क री पो च प्रायाम को रे वि स्ता
र जि न को प्रै सै या च न धु की धारा तें स पा स के सि ख र ते नी चे गि र तें ते इ ला ह त ख ड के प श्चि म प्रो. र. क व तें २१ जि न धारा

१४

ता व ड भ यो र पि रो ध सो र्पा म त क्रा त इ से ना नु वि घ मा ना वा प र्क सं यो ग वि पा के न स रा म र लो भ र रां जो व न हं
नाम सु ध रं ग भ व ति १५ य इ त वा व वि व धा र्पा स र पु व ति मि मु क र स ज्ञा धा भ र रा रू पे रा र व लु धा र पं ति २
प त्तु म ता क हं व स पा र्थ नि रु ट स स्य के र रे नो वि नि स्म ता पं चा पा म य रि रा ता पं च म धु धा रा स पा र्थ सि
ख रा स त तो परे रा त न नि ला ह त न न मो हं ति २१ या धु प पुं जा ना नां मु र्व नि र्वा स तो वा यु स म ता ध त पो
ज न म नु वा स य ति २२ र वं डु मु द न रु टो या स त व शो ना म व ट स स्य सं धे यो नी ची ना प यो द धि म धु ध त
गु र्गा न्ता पं व र सै या स न भ र रा र्पा स र व क म म ड घा न हा उ म हा ग्रा त प त त स उ त र रे रा ला ह त मु प यो ज

न कृ जे से व न करे तें ति न के मुख की स गं ध कर के स गं धि त जो प व न सो चारो ओर सो यो ज न ता ई हे स कं स गं धि त करे तें २२
प्रै सै री कृ स र प व त पे व ठों स त व ल स ज को ना म प्रै सो जो व र ता के गो दे न ते नी चे कं व तें इ ली ड ध म धु ग ड प्र न्ना दि क
व स्र सै या प्रा स न प्रा भ र न इ न ते प्रा दि लै के स व क म र र न क र न वा रो जे न ह ते कु म र गि र ते गि र त इ ला ह त र वं ड के उ त र

२३

जि न ह न कुं जो से व न करे तें सी जो प्र जा ति न के दे ह में गु ज ल क स पे ह के श रे व द प सो मा दु र्ग ध ज रा रोग म स ज्ञा हों ग र मो क र
न उ प स रं प्रो. र. ता प क हा चि त न री तें त व ता ई जी वे य र य न य ता ई ति न कुं नि र त स य स व री तें २४ क रं ग उ र र के स र कुं स भ वे क
क त्रि क र शि शि र प तं ग रू चि क नि सि ह स नी वा स क पि ल सं ख वें डु र य जा क ह लं स कृ धि भ ना ग कालं ज र इ न ते प्रा दि लै के
जे बी प व त सु मे र वी जो क ली ता के के स रा से म ल हे श ने चारो ओर र चे तें २५ ज ड र दे व कं र तें प्र रा रें र जार यो ज न के ल वें हो

या नु य जु या णां ना न क हा चि ह पि प्र जा नां व ली प लि त अ म खे द हो र्ग ध ज रा म य म सु शी तो ह म वें व र पे प स र्ग
ह य स्ता प वि रो धा भ वं ति या व जी वं स खं नि र ती श य मे व २६ क रं ग क र र कुं स भ वे क क त्रि क र शि शि र प तं ग रू
च क नि श ध सि त वा स क पि ल सं ख वें डु र य जा क ह लं स कृ धि भ ना ग कालं ज र ना र हा द यो गि रियो मे री क री का
या इ व के स र भ व म ल हे शो प रि त उप हा सा २५ ज ड र दे व कं र तें मि र र व र णा या द यो ज न स र स्र पृ थु तें जो भ व
तः र वं म प रे रा प व न पार पा न्ना ह र ण न के ला स क र वी रो प्र ग प तो रा व मु त्त र त स्त्री शं ग म न्न रौ प्र ण भि र तें प रि

२६

ह जार यो ज न के मो रें प्रो. र. उ चे स मे र के प्र क प्रो. र. क वें प्रै सै य श्चि म प्रो. र. कं प व न प त्रि तें द क्षि रा प्रो. र. को के ला स क र वी
र हें उ त्त र प्रो. र. कं त्रि सं ग प्रो. र. म क र दो प व त तें ये जे प व त प्रा दि न क र के वा स वी च मे प्र जि न सो सो ने को प व त स मे र सो प्र जा
स करे तें २६ सु मे र के मा ये प्रै भ ग वा न हं ना की म ध्य में पुरी र ची तें इ स ह जार यो ज न की चो रू टी तें स व सो ने ती की तें हं
ला की पुरी ते पी छो प्रा रो दि सा न में प्रा गै लो क पाल न की जो दि शा जे सो जा को रूप ते सी प्रा ट पुरी ठा इ यो ज न के प्र म रा र ची तें २८

२७

प्र. ४८

हिसंईलावतेचरुदेहासंकर्यणनिसेवनं १ सत्रेकेप्रधामैचारोदिष्टानमैगंगाकौगमनवरीनकरैहैं ॥ ओरइला
वृत्तमैमहादेवकरकेसंकर्यणकोजोसेवनसोवरीनकरैहैं १ तहांसमेरमैसाक्षातजोयत्ररूपभगवानवासनजति
नकोवांयोचरणताकेप्रगूढाकोजोनखनाकरकेपुरेहैं उपरकोभागजाकौं ॥ प्रैसोजोप्रंडकरातनाकोजोधिइतामे
होकेनीतरप्रविष्टभइएसोजोजलधारासोस्वर्गमेसाथेपेंउतरभईजामायेकुंविस्तपइकरैहैं जोजलधाराभग

मेरोमूर्तिभगवतः प्राप्नोयनेर्मध्यत उपल्लासांपुरीमपुनयोजनसारस्वतीसमचतुरस्त्रां शातकोनीवदंति २०
तांमनुपरतोकोलोचपालानांमयानांपथादिसं यथारूपंतुरीयमानेनपुरोद्यावुपल्ला २८ इती श्रीभाग
वतेपंचमस्तंथेशोडसोध्याया १६ श्रीशुक्र उवाच तत्रभगवतः साक्षापन्नलिंगस्यविलोर्विक्रमनोवाम
पदांगुष्ठनखनिभिर्नोद्ग्राह्यकदाचिवरेणानप्रविष्टायावासजलधारातत्ररणापंकजावमेजनाकराकिज
लकौंपरंजिताः खिलजगदधमलापहोपसृष्टाजामलासाक्षाद्गवदीसुनुपलासितवचोभिधीयमानाति
मलुतकालेनयुगसत्स्त्रौपलसरोनदिबोमूर्धन्यवततारः १

वानकेचरणमलतिनकोधोयवौताकरकैप्रकराजोकेशरशोईभयेकेसरानिनकरकेरगीहैंयाहीनैंप्रखिलज
गतकोजोपापनाकोनासकरनवारोस्पर्शजाकोप्रापनिर्मलहैं भगवतपरवीहैंनामजाकौंउजारयुगवरकैंजखो
प्रैसोजोवडेकालुताकरकेउतरभईकोनसोविस्तपइहैं नायकरैहैं तहांइहैंसंकर्यजिनकोपरमभागवतउजान
याहकेवराजनाकोप्रकारेकालुताकरकेउतरभईकोनसोविस्तपइहैं नायकरैहैं तहांइहैंसंकर्यजिनकोपरमभागवतउजान

होजाकौयाहीनैंउत्कंठाकरकैंविवसमधोनेत्रयुगलसोईभईकलीगिनकरकेगिरांनिर्मलप्रांतनाकोजोवलाताकरकेस
हितप्रघरभयेहैंरोमांचनकोसमूतजाको ॥ प्रैसैप्रवकरकैंपरमप्राहरवरकैंसिरकरकैं ॥ प्रवताइधारनकरैहैंनातेनीचैमागं
गाकेप्रभावकैंजानैहैंप्रैसेजेसप्रकर्यधनेरुमारतपकीप्रासंतकीसिद्धीकरैहैं एसैंजानकेभगवानवासदेवमैनरीउपरा
मकौंप्राप्रभयोभक्तियोगताकेलाभकरकैंउपेक्षाकीयेहैं ॥ ओरएकीथाप्राप्तज्ञानजिननेजेसैमुक्तकीइष्टाकरैहैंप्राइसुक्ति

यतविस्तपइमलुं २ यत्रहवाचवीरहृतप्रोत्तानयादिः परमभागवतोत्पत्तकुलदेवताचरणारविंदोदक
भित्तियामनुसवनमुःख्यभाराभगवत्क्रियोगेनदृष्टं किंचमानांतहइलुप्रोत्तमविवसामलितलोचन
युगलकुंडलविगलतात्मलवायकलपाः निवज्यमानारोमपुलकक्रेधुनापिपरमादरेणशिरमावि
भक्ति २ ततः सप्रकर्ययस्तत्तमावाभिजाययंननुतय ॥ प्रासंतकीसिद्धिरेतावतीतिभगवतिसर्वात्मनि
वासुदेवेनुपरतिभक्तियोगलाभेनैवोपेक्षितामार्थात्मगतियौमुक्तिमिवागतांमुमुक्षुवइवसवुमानव
द्यापिजराजरेहृत्ति ३ ततोनेकसत्सक्रोदविमानानीकसकुलदेवयानेनावतरतोडमडलमावीर्यसहने
नियतति ४ तत्रचतुर्धाभिद्यमाचतुर्भिर्नामभिश्चतुर्दिसमभिसंहतीनहनह्यतिमेवामिजिपातसीतालः ५
कुंधारनकरैहैंसैवुरतसमानसं ॥ प्रवताइजटानकेसमूतनिनकरकेगंगाकोवरीनकरैहैं ३ तातेनीचै ॥ प्रनेकरजारनकोर
नविमाननकोजोसमूतनाकरकेसकुलजोप्राकासमागताकरकेउतरईजोगंगासेचंडमाकौमंडलतापलावनकरकैंहैंजाके
केधरमैहोरतभईतलाचारप्रकीरकेभेदकैप्राप्तिलैंचारभामनकरकैंचारोदिसानकौंवजतसमुद्रमैप्रवेशकरतभई ५

कुंधारनकरैहैंसैवुरतसमानसं ॥ प्रवताइजटानकेसमूतनिनकरकेगंगाकोवरीनकरैहैं ३ तातेनीचै ॥ प्रनेकरजारनकोर
नविमाननकोजोसमूतनाकरकेसकुलजोप्राकासमागताकरकेउतरईजोगंगासेचंडमाकौमंडलतापलावनकरकैंहैंजाके
केधरमैहोरतभईतलाचारप्रकीरकेभेदकैप्राप्तिलैंचारभामनकरकैंचारोदिसानकौंवजतसमुद्रमैप्रवेशकरतभई ५

सीतानुहं सुसहनात्केसराचलादिगिरिसिखरेभ्योऽधोऽधः प्रप्रवन्ती गन्धमादनमर्द्धसपत्नित्वाऽन्तरेण
भद्राश्रवर्वे प्राच्यां हि सीसारसमुद्रमभिप्रवसती ६ एवं मात्स्यवच्छिखराद्युत्पत्तंतीति उपरतवेषाङ्गे
तुमालमभीवक्ष्यमिति च्यां हि सीसरित्प्रविष्यति ८ भद्राचोत्तरतो मैसुगिरिसिखरसो निपतन्नायगिरि
सिखराद्विरिसिखरमतिरायप्रगवतः शृङ्गाहवृत्तं दमाना उत्तरास्तुलुनभिति उदीच्यां हि सीलवराणां
वमभिप्रवशति ९ तथैवालजनं दहसिरोनलससहना दजनिगिरिकन्यनिकम्पवेमकटहिमकुटावति
रभिसतदररतुसालुपन्ती भारतमभि वषं हि सिरास्यां हि सिजलयमभि प्रवशति १० श्रीराधा कृष्णभ्यामपु
रनमर्द्ध ८ प्रसेती प्रलजनं रातैसो हि सिरा प्रोत्तुल्लं स्नाके परमेवोत्तजो पूर्वतै सिखरति नै चोडकै तै मगरहि
मकुटनि नै चोडकै प्रतिवेगकरकै भ्रमंडलभरतखंडमेलोयकै हि सिरा हि सामै सो समुद्रताप प्रवेश करतमर्द्ध ९ जा
जगामै स्नानके लीरा जलकीव के लीरा जावै रासो जो पुरुष ना कृपेडपेडमै प्रस्थमे धराजसृष्टादिक इ न को फल सो डल

अनेचनदानघञ्जवर्षेवर्षेसंतिवउत्तमेर्वाहिगिरदुतरः प्रातः तत्रापिभारतमेववर्षेवर्मसेत्रमन्या
यवर्षाणिस्वर्गीणांपुरणसेधोपभोगस्यानानिभौमानिस्वर्गपदानव्यपरिसंति १२ राखुपर्षाणामयुतपर्षा
युषायुवर्षाणांदेवकृत्यानांनागायुतप्रमाणांनांवज्रसंहननागवलवयोमोहप्रमुहितमतासौरतमिथुन
व्यवायापवर्षभजेकगर्भकलत्राणांचैतायुगसमः कालोवर्तते १३

हंते त्रेता युग के सामान काल वर्तते १३। जिन खंडन में प्रपने रसे वरुन में जे मुख्य तिन करवैं की यौतें रजन जिन में प्रे
सैं जे देवतान के पति पथे छ बिहार करवैं जिन खंडन में सगरी कृतन में र फूल फल पवइन की जो सो भाता करवैं प्रति की
चे प्रे सैं जे गो देति न में लिपरी प्रे सीतुलता जिन में प्रे सैं जे दृष्टातें तिन करवैं सो भायमान रासैं जेवन प्राश्म पर्वत की
जे वहरानि मल जे सरोवर तिन में फूलेना प्रकार के फूल व्रमल तिन की जो सुगंध ना के महर के प्रानं हित जे राजतंस

श्रीभगवानकहैं सवगुरानकीसंख्यातैयाते अनंत प्रवक्तृ महापुरुषतिनहूँनमस्कार १७ ते भजनकरवेकं जे
सरनहैं चरनक मलजाको संपूर्ण एव चर्या दिक्कं प्राप्ते भक्तनमें प्रसन्न प्रघटकीयोतैं स्वरूपजिनैं भजनके पालक
प्रभक्तिनके नासकरनवारे एसे जे इत्यरनुमहों नायमें भजतुं १८ सवकहेरवत जो तुमना की जो इष्टी मायाके गुराजे
विधैंतिनकरवैं चितकी वृत्ती जिते डीतिनकरके तुनकरुं नही लिमहोतैं कारेके लीये देखोतैं सवके तो मनकरवेने लीए
नही जीतोतैं जो धको वेग जिनने एसे जे तुमतिनकी जो इष्टी सो लिमहोतैं नै से तुमारी नही होतैं जो इष्टीनकी जीतवेकी इ
ष्टाकरैं प्रे सो कोन पुरुषतैं जो तुमको प्रादेरनकरैं १९ इहैं इष्टजाकी ए सो जे पुरुषनाहूँ जो तुम प्रपनी मायाकरके मतसे दि
यत्प्रवेष्टुः स्त्रीभावस्तत्पश्चादक्षामाः १६ भमानी नार्थे स्त्रीगरारतुहसतुस्त्रीरवरुध्मभानो मंगवतश्चतुर्हि
मूर्तेर्मता पुरुषस्यतुरीयांतामसीमूर्तिप्रवृत्तिमात्मना संकसरा संज्ञामात्मसमाधिरूपेण संनिधायैतदभिगृह्ण
एान्भवउपधावति १७ श्रीभगवानुवाचः उंनमो भगवते महापुरुषाय सवगुरासख्यानायानतायव्यक्तायनमः
इति १९ भजे भजे न्यारणपादयकज भगस्पष्टतस्तस्य परपरा परा भक्त खले भावित भक्त भावनं भवापरं त्वाभति
स्वायदेवो जेतुममधु प्रार प्रासवइनकरवैं लालतैं नेत्रजिनके चरननको जो स्पर्शनाकरवैं मोहिततैं मनजिनको ए
सीजेनागवधुने जलजाकरवैं प्रजादिकरवेकं नही समथे होत भई २० जाकं याविस्ववे स्थित जन्मना सइनके करन
वारे कहैंतैं जो तुम स्थित्यादिकनकरकवेकं नही नरोजाते करधिरैते तुमहारेनाम अनंत कहैंतैं जो तुम तुजारे माथेन पंरा
क्रमार्थ पंराघोसरस्याकी सीनाई नायनही जानोतो २१ जिनको गुरानिमित्तमहानजाको नाससत्त्वतैं प्राप्ते जाको प्रे
सो विप्रतुतोत भयो जो इ भगवानहं स्नातोत भयो जाहं स्नाते मेरोत भयो जा मेव गुरा जो प्रपनाते ज प्रहं कारना कर के

देवतावर्गभूतवर्गइंद्रीवर्गसैरजैतं २२ येजेतममृतदाहिकसगरेनुसारेवसमैस्थितं जैसैडोरकरवैवांधोपक्षीसमैवैतं
तुमारंप्रनुग्रहेनमृतत्वप्रलंकारभूतइंद्रीदेवतातेसगरेयत्तजोविस्वतापसजैतं २३ जोनुमनेसजीजोमायाकरमन
कीमाप्रकसनवारीताकुंगरासर्गकरकैमोरितजजननेनरीजानैतं तोमायातरवैकोजोउपापतापकतातेजानैतोविस्व
कोउपजामनवारीप्रलयकरनवारीतं आत्माजिनकोएसेजेतुमतिनकेअर्थनमस्कारकरैतं २४ इतीश्री

नयस्यमायागुणचित्तवृत्तमिर्निरीक्ष्यतो ह्यरावपि द्रष्टुं शक्ते इसे यथा नोजमनु रंसांकस्तं नमः नो वि
तजिगीषुरात्मनाः २९ असद्रूपोयमतिप्रातिमाययाहीवेवमध्वासवतामलोचनः ननागवध्वो
र्त्तुर्गार्दसरेत्नीयायसादयोः स्पर्शनधर्षितेन्द्रिया २२ यमातुरस्यस्थितिजन्मसंयमंविभिर्विहीनंयमनं
तमृषया नवेदसिद्ध्यर्थमिवक्वचित्स्थितंभूमंडलंमुद्गसत्स्थानमसु २३ यस्यापसासीदुराविग्रहोमहा
न्विज्ञाधिसोभगवानजकिलयत्संभवोत्तंविद्यतात्वनैजसावेकारसंतासमसमैन्द्रियैरजै २४ रावेवपं
यस्यवसेमरात्मनास्थितासकंतायवस्तत्रयंत्रितामलानुर्वेद्युततामसैन्द्रियाः स्रजामसर्वेपदनुग्रहादि
२५ यन्विमिताकृष्टपिकर्मयवैणीमायांजनोयंगुणसर्गवोहिताः नवेदनिस्तारयायोगमजसातस्मेनमस्तविल
भागवतेपंचमस्कंधेसप्तमोऽध्याया १७ प्रधाक्षोततोमेरो प्रवादिभूमतस्त्रिषु चोतरवर्षेषु सेव्यसेवकवरीनः
प्रधरैकेप्रधायमैसुमेरकेप्रवाहजोहूमतातेतीनतीनखंडनमैसेव्यसेवककोवरीनकरैतं १ ततोश्रीसुब्र
ह्मजीमवाराजकरैतं राजामहास्वरंउमैभद्रस्ववाजाकोनामधर्मकोवेरा सोओरुताकेसेवकनमैउच्य

जोमनुस्यतेसाक्षात्भगवानवासुदेवतिनकीप्यारीकृतीधर्ममयतुयग्रीवजाकोनामतायपरमसुमधिकरकैइहे
मैलायकैयामंत्रकोसेवनजपकरैतं १ प्रवमद्रप्रवास्तुतिकरैतं धर्मरूपकोचितकेसोधनकरनवारे एसेजोभगवा
नतिनकेप्रर्थनमस्कार २ भगवानकोजोविचेष्टीतसावडेविचित्रैजोपरजनप्रापकोमारैतं प्रैसोजोमसुता
देखैतं परनतीदेखैतं तुष्टजोविषयसुखतायसेवनकरवैकोविकर्मजोपापतायध्यानकरैतं पहिलेपुत्रमरोपे

श्रीशुकउवाचः तथाचभद्रप्रवानामधर्मसुतस्तत्कुलपतयः पुरुषामहास्ववर्षेसाक्षात्भगतो
वासुदेवस्यप्रियांतनूधर्ममयीहयसोर्षाभिधानांपरमेणसमाधिनासन्निधायेहमभीश्रान्तंउ
पधावति १ भद्रप्रवसउचुः उंनमोभगवतेध्वर्मायाऽमविशोधनायनमइति २ प्रतोविचित्रंभ
गवद्वेष्टितं प्रंतंजनोयंहिमयन्तपस्पती ध्यायन्तसद्यर्तिविकर्मसेवतुंनिहृत्पुत्रं पितरंजिजी
वशति ३ वहंतविश्वंक्रवयः स्मनश्चरपस्यंतिचाध्यात्मविदोविपश्चितः तथापिमुह्यंतितवाजमाय
मजयतास्मितं ४

रपितामरोतिनैजरायकेहोनोनकेधनकरकैप्रापजीवेकीइष्टाकरैहैं कविजोहैतेउपध्यामकेजानन
वारेज्ञानवानतेजोविस्वकोसासुतेरुंठोकरैहैं तोउतुम्हारीमायाकरकैमोरितहोतै यत्तुम्हारेचे
ष्टितवडोविचित्रहैं यातेहैप्रजसास्त्राहिकनकोजोप्रमतायथोउकैतुमकंनमस्कारकरैतं ५ करै
हैंप्रावरीजिनकोप्रकृतीप्रैसैजोतुमतिनकोविस्वकोउइवस्थानयाधरतहोमामायाकरकैसर्वस्वरू

पतौ याते प्राक्तनत्व प्रेरानवतत्त्वमुभयैर्योऽर्थे ५ प्रत्ययमैहैत्यरूपजोतुमिति नैहरीयेवेदति नैरसातलनेलाय
जैकोहयग्रीवरूपधारणकरतभरवेदनुभौमागै ५ प्रैसोजोहंसाताके प्रथेहेतभरा सत्यवे संजुत्य जिनको रसेजोतुम
तिनके प्रथेन मस्कारहै ६ त्वर्वयेखंडमें भगवाननसिररूपकरके रतैरैतात्पर्यकगतु नकरके जो निमितताप प्रागेस
प्रमस्वधमेकहै गै मत्तापुर्षनने जे गुरातिनके पात्रमत्ता भागवत है तप दानवको जो बलताको पवित्रकरन वारों सील प्रा

विश्वोद्भवस्थान निरोधकर्मते स्वकर्तुरंगकृतमप्यभावतपुजंनचिचंस्वयिकार्यकारणो सर्वात्मनि धतिरि
जैचवस्तुनि ५ वेदानुगुणंतेतमसातदस्त्वतान्नरसातज्वाधौनरंगविश्वतः प्रसादहै एकवये निपाचने
तस्मै नमस्ते वितथे हिताय इति ६ त्वर्वयेचापि भगवान्नरवररूपेणास्तेतवगुणानि निमित्तवाभिदास्ये =
न द्वीपतं रूपं मत्तापुर्षगुणभाजनो भगवान् भगवतो है तप दानवकलतीर्था कुर्याथीला चरतः प्रसादो यवधा
नान नृभक्ति योगेन मत्तापुर्षपुत्रैरुपासते इह चोदातरति उंनमो भगवते न सिंहापुन मत्ते जस्ते जसे प्रावि
शमिववेजनसवजदंष्ट्राकमीसयान्दधयतमो अमर्त्यस्य प्रत्ययमभयमात्मनि भूनिभयथा उं हों ५
चरणजाको रसो जो प्रसादसो यवधान करके सत्य प्रचन्य भक्ति योगता करके ताखंड के जे पुरुषतिन के सरित प्रा
पुं पारों रसो जो न सिंहापुन ताप उपासना करके ७ प्रैरुजामत्रकं जपैतुं भगवान् जो न सिंहापुन तिनके प्रथेन मस्कारव
जै सत्तन खजिन के वज्रसे रं डाट जिन की रसो जे तुम सो मो भै प्रवेश करे भगवान् प्रथेन मस्कार है तिनके प्रथेन मस्कार है ५
यह उं प्रज्ञान के प्रसो प्रात्तामै प्रभय करे जे जके ते जतम तिनके प्रथेन मस्कार है ५

हे भगवान विस्वको कल्याणो प्रैरुद्भुजो रं सो कुरपने कोत्पाग करे प्राणी तैते परस्पर मंगल कंधान करे तिन
प्राणीन को जो मनसो उपसमादिक न को भजो रमारे न मस्कार जो मति सो नीचै रं इंद्रीयन को ज्ञान पाते प्रैस जे तुम
तिनमें प्रवेश करे १० तमारो जो संग सो कवत मतरो जो के सेतु संग तो यतो स्त्री परपुत्र धंधु इनमें संगरो यक वंशो
इतुमारे पारो जो भक्ति तिनमें होय तुमारो भक्ति प्राणमात्र को जो वैजिकाना कर संतुष्ट है ज्ञानमान है सो वेग सिद्ध है
ते इंद्रीय पारीना को रसादिक में प्राप्त सो सिद्ध नही है ११ जिन भक्तन को जो संगता मे पाये जो प्रसाध्य वीर्य प्रभा

स्वस्त्यस्तु विस्वस्य खिलाः प्रसीदतां ध्यायंतु भूतानि शिवं मिथो धिया मून अभद्रं भजना ह्यो ह्यजे प्रावेस
तां नो मतीरयते तुकी १० भागारहारात्मज वितबंधु प्रसं संयदिस्या इव त्रिये पुनः य प्राणा ह्यत्पा परिमुयः
प्रात्मनि सिपुत्पदरान्न तथे द्विप्रियाः ११ यत्संगलध्वं निवीर्यवै भवं तीर्थं मुहः संस्पृशतां रिमान संतु रस
जातः श्रुती गंतो जं को वेन सेवेत मुकं रविक्रम १२ यस्यास्ति भक्तिर्गवया किंच नाः सर्वगुरोस्त न्न समासते सुरा
ः इराव भक्तस्य कुतो महाङ्गण मनोरथेनाशति धावतो हरिः १३

वजाको प्रैसो जो तीर्थ गंगारिकता पजे वेर २ सत संग करे तिन के सरीखो मल्लें ताप देव लरै रं प्रैरुनुमारों यं हों सो
ज्ञान न कर के सो नो सो भीतर जाय के मन को मलनाय करे ताते मुकं हनु मारे यरा क मक को न सवन करे १२ जा की भग
वान् मों निस्त्राम भक्ति तैना में सकरे गुण न कर के सतिन देवता निस्त्रास करे प्रैरुजा की हरु में भक्ति नही तैना में मत्तातन
के गुण ज्ञान वेरा ज्ञादिक न कर ताते जो मनोरथ न कर के रूठो जो विषय सुखता में होरै १३ तदिहै सो सरीर धारीन के प्रा
प्तातें जै स मत्स्य कं जल है सो पारि सो पारि प्राप्तातें तिन हर को छोड कर के प्रतिप्रसिद्ध जो लोभ सो परम जो प्रास

हे भगवान विस्वको कल्याणो प्रैरुद्भुजो रं सो कुरपने कोत्पाग करे प्राणी तैते परस्पर मंगल कंधान करे तिन
प्राणीन को जो मनसो उपसमादिक न को भजो रमारे न मस्कार जो मति सो नीचै रं इंद्रीयन को ज्ञान पाते प्रैस जे तुम
तिनमें प्रवेश करे १० तमारो जो संग सो कवत मतरो जो के सेतु संग तो यतो स्त्री परपुत्र धंधु इनमें संगरो यक वंशो
इतुमारे पारो जो भक्ति तिनमें होय तुमारो भक्ति प्राणमात्र को जो वैजिकाना कर संतुष्ट है ज्ञानमान है सो वेग सिद्ध है
ते इंद्रीय पारीना को रसादिक में प्राप्त सो सिद्ध नही है ११ जिन भक्तन को जो संगता मे पाये जो प्रसाध्य वीर्य प्रभा

तातेर स्या रागस्वेह क्रोध अभिमान ईषा भय डन कौकारन जन्म मर्त्य निन कोन हीरे रेव दजाते प्रेसो जो परताप छोड केन
ही कातुने है भय जामें जो न सिर चर रागाय भजो १५ केतु माल खंड में भगवान लक्ष्मी के दुव प्रिय कर वे के लीर काम देव
स्वरूप प्रर भै र है तस प्रजापति जो संवत्सर ता की वेदी रात्रा भि मानी देवता प्रोर पुत्र जे दिविसा जे पुषन की प्रापुता क
र है ती ससु जा रहै सस्या जिन की तिन प्रिय कर वे के लीर रहै जिन प्रजापति संवत्सर की वेदी न के ग भै तौ वर्ष प्रो गी

हृदि सा सात भगवान सरीरणा मात्मा उ सारणा भिवतो यमी क्षितं तित्वा मरा स्त्वं यदि सज्जते गते न दाम
तत्वं वयसा हं पती नां १६ तस्या द्विजो राग विषाद मनुमान सखा भप हत्या धि मूल तित्वा गतं संसृति चक्र वा
लं न सिर पाहं भजता कुनो भयं १७ केतु माले तु भगवान काम देव स्वरूपेण लक्ष्मी प्रिय चिकीर्ष या प्रजापते
द्विजं नृणां पुत्राणां च तद्वर्ष पत्नी नां पुत्रस्य पुत्रा ज्ञो रा जी परिसख्या नां पासां भामता पुरुष मता श्रुते जसो द्वि
जित मनसा विव्यस्ता व्यसवः संवत्सरांते निपतति १८ प्रतीक्ष सुललित गति विलास विलसति रुचिर
रास लेखा वला कली लया किंचिदुतं भित सुदर भूम डल सुभगव ह नार विह प्रयार मां रमय न द्विपारि रम
र पर है चो गिर है के भगवान को जो चक्र ना के ने ज कर के ग रहै प्रा रा जा के चक्र के डर ले डर है मन जिन के जाते गिर है
प्रसय कर के ललित जोग ना कर के विलास वा कर के सुदर मं ह जो स्मित चितवन सो ड जो लीला ना कर के क धुरा क
उ चो रा सो भवता मंडल ना कर के सुदर जो मुखार विह ना की सो भगव न लक्ष्मी को र मा वत प्रानी इंद्री पन को र मा वत
ह १९ लक्ष्मी देवी संवत्सर की वेदी जो रात्रा तिन के भर्ता जो दिन तिन के संग लेने पर समाधि योग कर के सो भगवान को प्रा

पामय जो रूप तप उपसना के है जामें

कों जप है १७ इंद्री न के इस्वर सगरे जे गुण तिन कर के लये हैं प्रात्मा जो को जीने द्विय के भी द्विय चित इन के नर विषे पतिन के प्रधि
यत लो सो लै है कला जिन की वेद मय प्रन मय प्रन मय सर्व मय सात प्रोजवल रूप प्रे सै जो मेरे कात काम देव तिन के प्रधन मस्का
र ८ इंद्रीयन के इस्वर जो तुम जिनै प्रा रा धना कर के लो क में प्रोर पत को स्त्री है ने प्रा सा कर है ने जे पति है तिन स्त्री न के पारे पुत्र धन
प्रापुति नै न होर ह्या कर कर स है २० जाते ते वे पतिन होर जो प्राय प्रकुतो भय कर के प्रातुर जो जन ता की चोरो प्रोर ते जोर हाक

तद्गुणवतो माया मयं रूपं परम समाधियोगे नर मा देवी संवत्सर स्पर्षा विषु प्रजापते इति त्रिभिस्ते ता भू स्सु चत इति भि
रुपा स्ते इहं चो दा हरंति २१ उहां ही तुं उ न मो भगवते हरी के पाय सर्व गुण विषे यो विवृ स्तना मेने प्रा कृती ना चि
ती ना चेत सां विशेषाणां चाधियत ए शोच ड सकला यष्ट हो मया यान्त मया या मृत मया य सर्व मया य सत्से प्रोज से वला य
क्रांता य कामा पन मस्ते उभयत्र भूयात् २२ प्रियो वतै स्त्वां ह्यो के श्वरं स्वतो ह्यार ध्य ले के पति मा सा सने न्युना सां न ते वे प
रियांति प्रियं धना य धियतो स्वतं २३ सर्वे पतिः स्याद कुतो भयः स्वयं समंततः पात भयातुरं जनं सरा कर वेतर था मिथो भ

दे सो पति हो है यसै पत तो नु मरों प्रोर न ही है जा को प्रोर के प्राधीन सुप है ता को स्वतं वन ही है जरां स्वतं वना न ही तस पर स्पर भय है
जाते नु म प्रात्मा लाभ ते न ही माने लो २४ जो स्त्री तु ह्यारे चर रागार विह की जो प्रजा ना की काम ना करे प्रोर प्रल को काम ना वरी
कर है सो सगरे काम न को प्रा प्र हो है जो प्रोर प्रल के लीये नु मारी प्रजा करे सो इतु म दे उरों प्रल भोग के पीछे डर भयो है

भागो प्रथम जाको सो स्त्री इरवती को प्राप्ति होतै २१ ते इस्वर इंद्र की न के सख में तै वृजिन की प्रेसै जेहं स्त्रादिक ते मेरी प्राप्ति होली ॥
नय करैतै परंतु नृपार चरणारविंद को तै प्राप्ति जिन को तिन विना और मो को नती प्राप्ति होतै जाते तुम मेरी इह पजा को प्रेसी
में तै प्रजीत जे तुम को सेवैतै तिन को मैं देवत २३ जिन के भजन विना को इपुष्य सार्थ नती सो तुम प्रपनी जोरु स्तुत मलना
दि मेरे माथे मे धारन करैतै प्रचुत जोरु स्तुत मलनु मनै भक्त के मापै धरोतै जोरु स्तुत मल सब काम करैतै पात साधन

यात स्युते पाद सरोरु रारां विकामयेत्सा खिल मलं पटा न देवरा सीमित मीमितोर्चितो य इज्जयां च भगवन्
मसमते २२ ममाप्रिये जेषा सुरा सुरा हयस्तपंत उग्रंत पुरे द्रिये धिपः अते भवत्पाद परायणा नामा विहंत्य तु
त्वष्ट्रया यजो जितः २३ सत्त्वं ममाप्यच्युत मीरु वंदितं करं वज्रं यत्वं दधापित्वा सात्वतां विमर्षमालक्ष्य वरेण्यमा
यया कइस्वरस्य तित मुहितिं विभुरिति २४ रम्यं च भगवता प्रतिमं मात्स्यमवतार रूपं न दृष्टुं पुरुषस्य मनोः प्राक्
महर्षितिसंयुता नीचपि मत्तता भक्तियोगे नारायती हं वो दाहरति २५ उ न मो भगवते मुखत मायनमः सत्वापप्राणा
वैष्णवैः सत्सेवलापमहा मत्स्याय नम इति २६

स्तुती को होतै ते वरे इ मो कं वस स्थल मै धारन करोतै इस्वर जो तुम तिन की जो चेष्टा जाय जा निवेकं कौन समर्थ होतै २४ रम्यं च
उमै सत्त्व तत्पु विलै दिष्टाय भगवान को मत्स्यावतार रूप प्राप कं पारो तापि सो ई राजा पास में मनु होतै २५ उ न मो
योग करके प्रा राधन करैतै यामं च कृजपैतै २५ सत्त्वं प्रधान जो मैं प्राण रूप प्रोज सत्त्व रूप वल रूप रा सो जो भग
वान मत्स्य रूप तिन के अर्थ नमस्कार २६ लोकपाल न ने न हो देव होतै स्व रूप जिन को वैद रूप होतै नाद जिन को प्रेसो

जो इस्वर तुम सब के भीतर वार विचरोतै जिन तुम ने पर विश्व हां स्त्रा दिक नाम कर के वस की पोतै जै से का की पुत्र रीवा
जीगर नै वस की नीहें २७ मत्स्य स्त्री जे वर जिन के प्रेसै जो लोकपाल ने तुम मे छोड के ग्यारे मिल कर के पल करतै परियावि
स्व के पाल वेकं समर्थ नती होतै हो पाव के चार पाव के स्थावर जंगम प्रेसो जो विश्व सातु म मे दिखाय दैतै २८ लहर न
कीतै माला जामें रा सो जो प्रलय को समुद्र नामे तुम प्रोषधी लता दिकन की निधिरा सो जो एष्टो ता य पालन करोतै ते
प्रजित प्रोज कर के सतिन वल कर के सतिन प्रलय के समुद्र में डोलौतै जगत के प्राण रूप होतै प्रेसै जो तुम मत्स्य तिन कं

अंतर वहि स्त्रा खिल लोकपाल के रह्य रूपो विचर सुरु स्वनाः सइस्वर स्त्वं य इहं वशे नयना भ्रां यथा दारुम
यी नरः स्त्रियं २९ यं लोकपाला किल मत्सर ज्वर तित्वा यतं तोपि पथ कस मे स च पातुं न शो कुरिद्वि पद प्रनु स्या हा
सरी सपस्था गुय द्रह स्यते २८ भगवान पुगां तारो वकुर्मि माल निहरी मीमा मोष धि वीरु धां निधी मया स
हो रुक्म ते ज प्रोज सात स्मै जगत्प्राणा गुणात्मने न गइति २९ हिर निरा परा व भगवान वसति कुर्म तनु विभ्रा
सास्त स्यत प्रीयत मां तनु मर्त्य मास्त्व वर्ष पुरुषै पितृ गणा धियति रूप धावेति भव मिमं वानु जयंति ३० श्री हरिः

नमस्कार २९ हिर राम य खंड में भगवान कछु पुरुष धर के वसेतै सो जो कुर पारी मूर्तताय प्रथ्य माना म जो पितरन को राजा
लोखंड वासी जे पुषति नै संग ले के सेवन करैतै प्रौर यामं च कृजपैतै ३० संपरी सत्त्व गुण सोतै स्वरूप जिन को नली लव्योतै
स्थान जा को कल कर के नलीतै नास जा को सर्वगत सब कं आधार प्रेसै कछु रूप जो भगवान तिन के अर्थ नमस्कार ३१

प्राप्ति माया कर के प्रसास की पोचतुन रूपन कर के निरु

पराकीयों जाकी संख्या नही ऊँटो इतने उपलंभन जाको जानेयस जो एधि बाहिर है सो याही को स्वरूप जाने मारों नही हैं नही बसि
कहि वे मैं आवें प्रे सो जो प्रपंचे सो है आकार जाको ए सो जो मत्स्य रूप सो है तिन के प्रर्थन मस्कार है ३१ जरायुज से दज प्रदज उ
इज चर प्रचर देवता कृषि पितर भूत इंद्री स्वर्ग आकास एधो पर्वत नदी समुद्र दीप गगन नक्षत्र यज्ञ जो नाम है सो सब न
मती एक हों ३२ प्रनंतरे विशेष जिन के ऐसे हैं नाम रूप प्राकृत जाके ऐसे जे तुम तिन के कवच संस्कार चीरें सो संख्यात
स्वज्ञान करवें डर करीए सो जो साख के सिद्धांत रूप तिन के प्रर्थन मस्कार है ३३ उत्तर कुरु खंड मे भगवान पञ्च पुष्प

ऊँ नमो भगवते प्रहृ पा राय सर्व सत्व गुण विशेष गुणानुपलक्षण स्यात्ताप नमो वध्नो नमो भूस्ते नमो वस्था
नाय नमस्ते ३१ यदुपतेत निज माया पारिणाम्य स्व रूपं बल रूप रूपतं संस्थान यस्यास्य पथो पलं भनात स्मै
व्यवहार रूप सो ३२ जरायुज से दज मंड जो द्विदं च राचरं देव धि पितृ भूति मै द्वि य द्यो यं क्षतिः सैल सरि स्यु
द्वीप गगन ह्येति ध्येय एकः ३३ यस्मिन् संक्षेप विशेषता मरु पा हतों विविध कस्यते रयं संख्या पया न त्वदशाप
नोपतेत स्मै नमः सांख्य निदर्शना य इती उत्तर पुच कुरु सं भगवान यज्ञ उक्तयः द्युत बाहुरूप प्राप्ते ५

पकर कर है हैं ३४ यज्ञ जो देवी एधो सो कुरु खंड वासी जे एध तिन कुरु के सहित बडे भक्तियोग कर के सेवन करै हैं यज्ञ जो परम
उपनिषद् ताप जपै हैं ३५ मंत्र न कर के तत्व कर के जानवें मैं प्रायो यज्ञ रूप हत रूप यज्ञ ली हैं प्रग जिन के कर्म कर के सुधती
नयुग मे प्रधर एसे जो भगवान तिन के प्रर्थन मस्कार ३६ जो के स्वरूप को निपरा जे कही हैं जे देह इंद्री पादिक न मै वी के कस
ऊँ नमो भगवते प्रहृ पा राय सर्व सत्व गुण विशेष गुणानुपलक्षण स्यात्ताप नमो वध्नो नमो भूस्ते नमो वस्था

समान नही ऐसे जे तुम तिन के देव के कीर्त्तन कर के मथन मै प्रधर कीयो है स्वरूप जाको तिन के प्रर्थन मस्कार है ३७ इव को पाते तु प्रपन इस कती
ऐसे जे माया के गुण तिन कर के देवो आत्मा जिन को विचार कर के नै भाहिर कर के निशेवर्तित बुद्धि जिन की तिन निरस्त कीनी हैं प्राकृती जिन
ऐसे जे तुम तिन को न मस्कार है गुण न कर के विस्व को जो स्थित संगम उदे ताप करों हैं प्रविष्टा जे तुम तिन को जो देवों सो जीवन के प्रर्थन मस्कार है

तनु देवी दया भः सर कुरु भिर स्व लित भक्तियोगे नोपधावति इमां च परमा मुपनिषद् भावार्ति यती ३६ ऊँ नमो भ
गवतं मंत्र तत्व लिं गाय यज्ञ कृत वे मरा ध्वरा वय वाय मरा पुरुषाय नमः कर्म शुक्राय त्रपुणाय नमस्ते ३७ यस्य स्वरूपं क
वयो विपश्चितो गुरो पुद्गल स्वज्ञात वेद संमध्रति मथामनसा हि दिक्षु वी गुरु क्रियार्थे न मद्रतात्मने ३८ इव को
पाते त्वय नेश कर्तृ भिर्माया गुरोर्वस्तु निरीक्षतास्तानि प्रवीक्ष्याद्वा निसया ज्ञ बुद्धिभिर्निरस्तमाया ह्युत्तर नमान
नमः ३९ करोति विस्व स्थिति संप्रमोदयं यस्य सप्त मीक्षतु गुरो माया यथा यो मम ते गरा प्रयग्मा मोन मस्ते गुण
कर्म साक्षिणो ४० प्रमप है तं प्रति वारं मध्ये मां साया जग हादि प्रकरा कृत्या ग्रहं ये निरगाड इव्वता ४१
नित्ये भुः प्रणा ता स्थितं विभु मिती इति श्री पंचमे १८

अपने प्रर्थन ही ऐसे चुंबक पथर तै लो लो भ मै हैं ऐसे तुम तै माया परै हैं गुण कर्म के साक्षी जो तुम हो तिन के प्रर्थन मस्कार
र है ३९ जो जगत पको कारन सो इव्वार लो के मै एधो ताप डाद के उपर धर के रसातल तै के समुद्र तै निकसत भ
ये प्रार दे सन के मारत मरा श्री गुरु तस स्थित तान मरा ऐसे निकसतै सै जल मै तै हाथी निकसै हैं ऐसे जे प्रभु न
मति नै न मस्कार करै ४१ ५ ती भागवत भगवत उपाख्यान पंचम स्कंध नाम प्रथा दशाध्यायाः १८ श्री हरिः १८

उन विंशो किंभारते चोपवर्णते सेवसेवक भाव प्रभारत श्रेय मेव चः १ उन ईसकी प्रथाय मे किं पुरुष खंडु मे सेवसेवक
भाव सेवर्ग न करैतुं २ प्रोभरत खंडु की सेवता वर्ग न करैतुं १ श्रीशुक्रदेवजी कहै राजा किं पुरुष खंडु मे भगवान
आदि पुरुष लक्ष्मण के वडे भैया सीता जी के कांततिने परम भागवत श्रीराम के चरं रान के निकर रतिव कहै प्रीत
जिन की ऐसे जेनु मानते कि पुरुष खंडु के जे पुरुष तिव कर के सुखित उपासना करैतुं भक्ति जिन को गंधर्व न कर के सति
न प्रभु से न नै गह परम कल्याण की करन वारी ३ अपने स्वामी भगवान जिन को जो कथा नाथ आपतु उमान जी सुनेतुं

श्रीशुक्र उवाचः किं पुरुष वर्धे भगवतं तमादि पुरुषं लक्ष्मणाग्रं सीताभिरामं मम तच्चरणं घनि कर साभि
रतः परम भागवतो हुनु मान सर किं पुरुषै र विरति भक्ति रूप से १ आदि वर्णन सत गंधर्व रनुगी पमानो प
रम कल्याणी भर्तु भगवत्प्रसाद मुपः श्रुणोति स्वयं चेद्गायति २ उं नमो भगवते उक्ते मप्रोक्तं नम आर्य
लक्ष्मणासील वनाय नम उं पसी सीतात्मने उपासित लोकाय नमः साधु वाद नि कं धरा पन मो वृक्ष रण देवाय
भरा पुष्प मल्लारा जाय नम इति ३

प्रोभ आपयत गावैतुं २ भगवान जो श्रीराम तिन के प्रथे नमस्कार उक्त भवैतुं यस जिन को तिन के प्रथे नमस्कार प्रेयुतुं शीत व
तलक्ष्मणा जिन के उपसिद्धतुं ३ आभाजा की प्रनु करी की योतुं लोक जिनै साधुता की जो प्रसिद्धता के क सोही सीनाई निर्धार न
कर के कल्याण वृक्ष रण देव मरा पुष्प मल्लारा जिन के प्रथे नमस्कार ३ जो वेदांत नमै प्रसिद्धतुं विशुद्ध भन भवतुं स्वस्व
जाको राक के अपने ने ज कर के डर करी जाग्रादि क प्रवस्था जिनै इस्पते न्यारे दो प्रसांत लो न की नाम रूप जा के सं हतुं

ब्रह्म जिन की तिन कर के प्राप्ति

होतुं निरतं कारीर स जो श्रीराम तुम तिन की मे सरन आयोतुं ४ तुमारे जोय प्रवतार सो मनुष्य न की सीक्षा के ली रातै राक्षस जो राम
राता के नारवे कहै केवल यही नरी तो कथा या ससार मे सी सजा दिव को करै जो डः ख सो डर वारतुं यतु मनुष्य न क सीक्षा के प्रथे तु
प्रो प्रकार प्रपने स्व रूप मे र मौं जगत के प्रामाद स्वर तिन तुम को सीता के विरत कर के कीयं ऐसे जे डरवते के से जोतुं ५ धीर न के प्र
मा सुवृद्ध न मे प्रे भगवान वा सुदेव से जे तुम सो त्रिलोकी मे आसत नरीतुं सी को की यो जो डरवता पन ली प्राप्ति तै लक्ष्मण जो
भैया ता पछो ड के नरी यो पवोत राय साक्षात है श्रीराम सं मंत्र करत जो देव डत ता नै यत करी जो त्या प्रवे सो तुम कर के नारवे क्यो

यत हि श्रद्धानुभव मात्र मे कं स्वतेजसा ध्वस्त गुरगवस्थं प्रसक्त शांतं सधपोपलं मनं स्वनाम रूपं निरतं प्रपद्ये ४ मत्पीव
नारस्वित मर्त्य शिष्य रण रक्षो वधा पेवन केवलं विभौ कुतोऽप्यथा स्यादमृत स्वप्नात्मनः सीताक्षुतानी वसना नील
रस्य ५ नवै स आत्मा प्रवतां सुहृदि तमाः सति स्थिलो क्य भगवानु वा सुदेवा न स्त्री कृतं कश्चन लवीत न लक्ष्मण
चापि विराति मर्ति ६ न जन्म न मृतौ न सौ भगवानु न बुद्धिना कृतस्तोषते तु तैर्यद्विस्थान पि नो वनो कस्य
आसं सेवत लक्ष्मणो गजाः ७

अतुं ताइस मे धार पे स्थित जो लक्ष्मण जी तिन सुडुवा सावो लो भीतर मे रीख वर करै नवल लक्ष्मण जी क रिवे कंगरा तव मा
रवे कं उदित मरा नव वसी छ जी के वचन ते लक्ष्मण जी को सा ग करत मरा ६ तुम कुं वडे कुल मे जो जन्म सो अप सं न नरी करै
संदरता कहै सो तुम कुं प्रसन्न नरी करैतुं वानी बुद्धि जे प्रसन्न नरी करैतुं जातुं सो प्रसन्न नरी करैतुं जन्मादिक नर के
हित प्रे से जे विराति ने लक्ष्मण के वडे भैया सो तुम सो सखा करत मरा ७ देवता प्रसुर वानर नर जो कोई स्वर अपने भक्त
के यो रे भजन बुतन कर के मानो मनुष्या व प्रवतार प्रे से जो राम तुम तिनै सव काम कर के भजे जो तुम प्रयाधा वस

नक्रं प्रपने धाम मै प्रामि करत भए ८ जो भरत खंड मै नर नारायण जो भगवान सो वडे जे धर्म जान वैराग्य प्रवर्ण उपसम ड
न कर के परमात्मा की प्रामि को है न वारों प्रपने न करत पैं प्रनु गुरु कर वे के लीर कल्प पर्यंत न पतै नापतै नापकतै नित न भगवान
नारायण जी कं नारद जी सौ वारों प्रम कर के पुत्र सी जो भरत खंड मै प्रजा निन कर के सति न भगवान करे रस जो सांख्यो
गति कर के भगवान को प्रभावति न कर के सौ वारों न करे है जा कर के प्रेसी जो पचरात्री नाय सावर मुनि ता कु उप देस करत परम भ

सरोऽसुरो वायु धवानरोऽनराः सर्वात्मना यासु कृतज्ञ उन्नतं भजेतरामं प्रनु जा कति रं य उ त्तराय न नयः को सिला
दिवमिति ८ भारते पिवर्षे भगवान् नारायणाय प्रालतांति उपचित धर्म जान वैराग्यै स्वर्गो प स मो परमात्मा पलं मन
प्रनु गुरु या त्मवतामनु कं पयात पो वक्त गति प्रवृत्ति ९ तं भगवान् नारदो वारों प्रम वती भारतिभिः प्रजाभिर्भगव
प्रोक्ता भां सांख्ययोगा भां भगवन्नु नावो पर्वणी रूप देख जाना परम भक्त भावे नौ पसरतौ इहं चाभिप्रस्तुतिः
उनि मो भगवते उपसम सीला पो परताना त्मापन मो किंच न विनाय कृषि कृष भाय नर नारायणाय परम तं सप
रम गुरु वैया त्मारा माधि पतये न भ इति शापती चेदं ९२

न भाव कर के जा भं वक्तुं जपै ९० उपसम मै है सील जिन को नही है प्रे तं कार जिन मै र सै जो भगवान निन के प्रर्थन म स्कार है
नि किंच न न के धन कृषि न मै प्रे प्र परम तं सन के परम गुरु प्राल्ता राम न के अधिपति र सै जो नर नारायण को न म स्कार है ९१
या विस्व के सर्गो दिख न मै कर्ता तवै परम वं धन कं नरी प्रामि होत है हेतु मै हो हेतु के धर्म न कर के परा भवन नही कीये हो इष्ट
है हो परत स्मारी इष्ट गरा न कर के ड धीत न ही है प्राल्ता सक्त

प्रारयतु गामे ९२

दृष्टाक्षी प्रे सै जो तुम निन के प्रर्थन म स्कार है ९३ हे योगे स्वर तिरण प ग भे जो हो ज्ञाने योग को कोशल करत म यो सो पतै है प्रंत
काल मै निगुण जो तुम निन मै हेतु को प्रनिमान थो डिके न कर के मन को धारन करे ९४ या लोक पर लोक के जे काम निन मै ल
पट पुत्र न मै स्त्री न मै धन मै योग हो म की चिंता करत उ सत हेतु को मत्पता तै स स्कार करे सौ विधान संतु है परंतु जितने ज्ञान
सो केवल प्रमरी है ९५ जाते ज्ञानवान की पतु हिसा तै ताते प्रमु इंद्री ज म ज्ञान कर के रित न तुम्हारी भायाने कृति तै तै प्रपन

कर्ता स्य सर्गो दिषु यो न वध्यते न तु मते देह गतो पि देहि कैः इत्यु न दृग्पस्य गुरोर्विडस्य ते तस्मै न मो शक्ति विवि
क्त साक्षरौ ९३ इहं हि योगे स्वर योग नै पुरां तिरण प ग भो भगवान जग हयत पदंत काल त्वय निर्गुरो म यो नौ
भक्ता दधितो फित दुष्कले वरः ९४ यथे हि कामुक्छि म काम लं पटः सते पुदारे पुधने पुचिंतयन् संक्रेत विधात्तु
कले वरा राया धास्त स्य यत्नः प्रमण्य केवलं ९५ तन्न प्रभो त्वं जल ले वरार्पितं त्वं मापया हं म मता मधो हर जा
मि धाम ये नाश्रवयं सु दुर्नि हां विधेय योगं त्वपिनः स्वभाव मिति ९६ भारते या सिवर्षे सरिच्छेलाः सति वरुव ९७

करी प्रेसी जो प्रतंता म मता नाप जान कर के म काटी डारें ज म ग्गान कर के र सौ जो योग तुम मै सत मै न यो नाय त म कुं दे
उ जो म मता प्रार उपाय न कर के न ली करे ९६ जा भरत खंड मै पर्वत वत त है ९७ मलय संगत प्रस्थि मै ना कची
कंठ कृषि म कृ कं कोल क सतु हे व गिर कृषी मु क श्री सैल वै कुंठ म रे इ वार धार विधि मुक्त मान कृषि गिरि पार
जात द्रोण चित्र कुंठ गो वध न र वत क कु म नी ल गो कामु क इंद्रीर काम गिरिये तो मुख है प्रार पर्वत सै करान र

पर्वत

प्रार नैति न पर्वत न के पर न नै न भू न हो प्रार न

ने प्रसंक्षातैं १८ जिन नदी न के जे जल निनै हें कर के जे स्पृश करे ने आपस पवित्र करे १९ चंद्रवशात मपरी प्र
वरोहा कृतमाला वैरायसी कावेरी वेंनी पयस्वनी शर्करावती तुंग भद्रा कृष्णा वेंनी भीमरथी गोदावरी निर्वंध्यापय
स्मीतापरेवा सुरसा नर्वदा चर्मव सिंधु प्रंधु सोनप होनद मवानदी वेदस्मृति अषि कुत्ता त्रिशामा को सक्ती मंदाकिनी
यमुना सरस्वती द्विसहस्री गोमती सरजू औधवती सत्यवती स्वसोमासत दुचंद्रमागा सरस्वती व्यापनस्ता प्रसकिनी:

मलयोमंगलप्रस्थो मैनाकस्त्रिकुटऋषिभः कुटपः कोट्यकासध्वो देवगिरिः ऋषिभूतः श्रीसैलौ वं कटो वैमलं
द्रौवारधारी विंध्याः मुक्तमानऋष्यगिरः पारिषाजो होरा श्रित्रकूटो गोविध्नो नैव नरः कज्जो नीलो गोकाचुर
इंद्रकीलाः कामिगिरि तिचा मेच सतसुत्सः सैलास्तो नितं मप्रनवानदानश्रुतं संसंख्याता १८ राता समापो
भारताः प्रजानामधरे धपुनंती नामात्मना चोपहासती १९ चंद्रवशात मपरी प्रवरोहा कृतमाला वैरायसी
कावेरी वैरायसी पयस्वनी शर्करावती तुंग भद्रा कृष्णा वेंनी भीमरथी गोदावरी निर्वंध्यापय स्मीतापरेवा सुरसा नर्वदा
चर्मवती सिंधुः प्रंधु सोनप होनद मवानदी वेदस्मृतिः अषि कुत्ता त्रिशामा को सक्ती मंदाकिनी यमुना सरस्वती
द्विसहस्री गोमती सरजू औधवती सत्यवती स्वसोमासत दुचंद्रमागा मरुद्वी विनस्ता प्रसक्ती विष्टत महानयः २०

विस्वाये मवानदी २० पाभरत खंड में पायौ जन्म जिनें सै जे पुर्वात नै सात्वत राजसता मसरूप से जो प्रारब्ध करमना कर के आप
के देवता मनुष्यन कर रस जो गति ने कुत क मरुद्वी सक्ती सब नर विधान करी रहें २१ जो क्री को विधान मो सक्ती प्रकार
सम्पासादिकतायनरो प्रतिवृत्तन कर के पाखंड में मनुष्यन को मो सक्ती २२ जो सत्त्व रूप करे जे सगर भूत न के आत्मा रागादि

हिं नै वानी कं २
५९

प्रजोचर प्रनाधार प्रै सो जो परमात्मा वास देवतिन में अहित को जो नहि योग सो ईतें स्वरूप जों सो मोक्ष करवें के सैं रोतें नाना गतिन की
निमित्त जो प्रविधा की गंठना को जो धैर्य नता द्वारा कर के मरा पुरुष जो भगवानतिन के जे पुरुष भक्तिन को जव संग सैं २३ परमनुष्य
देह ही पुरुषार्थ को साधन रै प्रतोइन मनुष्यन नै करा सो मन की पोतै जा सैं इन पैं आपतर प्रसन्न भवतें जितें भरत खंड में मनुष्यन में
मुद्रं दक्षी सेवा के योग्य सो जो जन्म सो पापोतें पाजन्म की रमचार करै २४ दुकर जे जन्मतिन कर के करातें तपवत दान इन कर के

प्रस्मिन्ने ववर्ष पुरुषे लधजन्मभिः शुक्ल लोरित कृष्णवर्ण स्वारधेन कर्मणा स्थिमानुष नारक गतयो वरि
प्राप्सन् प्रनुर्वर्ण सर्वा देव सर्वेषां विधीयते यथावर्ण विधानमपवगश्च भवति २१ यो सो भगवति स
वैभूतात्मन्यनात्म्य निरुक्तेऽनिलयने परमात्मनि वासुदेवे न्य निमित्त भक्त्योगलक्षणो नाना गति नि
मिना विद्या ग्रंथ रं धन दारेण यदाती मतापुर्व प्रसंग २२ एत देव हि देवा गायंति २३ प्रतो प्रमीयां क्रिमका
रिप्रोभने प्रसन्न एषा स्वदुन स्वयं हरिः ये जन्मल धं न्य भारताजिरे मुकंद सेवो पय कं स्थलीतः २४ हिंदु क
रेनैः कलुविस्मयो हतै दीनादि निर्वीधु जपेन फल्युणा नयत्र नारायण पाहयं कं जं स्मृति प्रमुखाः ति शयं द्वियोत्स
हमारो स्वर्ग जीतो नुष्टा कर के करातें या स्वर्ग मै नारायण के चरणारविंद को जो इस्मरण सो नहीतें असें इंद्रीन को जो उत्सनाते जो इ
स्मरण नुष्टेति नपो २५ कल्प पर्यंत वै प्रायुजिव कीतिन के स्थान के जीवने मो सजुतें अत्यंत प्रायुजिन कीतिन के भारत
भूम को जो जीव जीतिवों सो प्रवृत्तें यामनुष्य देह कर के क्षण मात्र जो कालता कर के कीयो जो कर्मता पयोऽके हर के पस्तं

भा.पं.
६०

प्राप्तिहोहैं २६ जालोकमें भगवानकी कथा मृतकी जो नही नही हैं कथानही कथाओं में से जे साधु भगवत ने नही हैं जहां भगवा
न के प्रजनादि कम हो सवनही हैं तो वंसाहुकों लोक नही सेवन करवे कों पो गहैं २७ जान किया इव इन के समूह कर के एण
एसी जो मनुष्य जाति नाय जे प्राप्ति भएहैं ते मो सुकेली एय इन नही करहैं ते प्रेर वं धन ती कं प्राप्ति होहैं जे से पक्षी वधिकते
छुट के प्रेरवाही के हा थ वं धन को प्राप्ति होहैं २८ जिन ने प्रधा कर के यज मै विधि मंत्र वस्तु ते देवता न को दीयो वह मेरो नही

कसा युवां स्थान जया तु न भवा एण पुषां भारत भूज पो वरः ह्यरो न मर्त्य न कृतं म नि स्थितः सत्य स्य सया त
भयं पदं हरे २९ नयत्र वे कं कथा सुधाया गान साधवो भागवतास्त दाश्रयाः न पत्र पत्रे सम रवा मरो
न सवाः सुरे सलोको पि न वे स से वतां २७ प्राप्ता न जाति त्व दूये च जंत वो जान की पा इव कला सयं भूता
न ये पर रत्न पुन र्मता यते भूयो वनो काय व पांति वं धनं २८ वे प्र द्या व र्हि की भाग सो ह वि नि र्म म मि थं वि
मंत्र वस्तुतः एकः एथ प्रत्नं म भिरा ततो मुहा प्रः कृति एणः स्वय मा शि धां प्रभुः २९ समं हि सत्य र्थ त म र्थितो न
एणं ने वा र्थ हो य तु न रा र्थिता यतः स्वय वि धिते भजता म नि धी तामि ध्या पि धानं निज पा द प द्म वं ३० य द् व नु
स्व र्ग मुखा व से यतं स्वय स्यु क्त स्य कृत स्य शो धनं तेना जना मे स्मृत म ज न्म ना स्या द्ध र्म हरि र्प इ जना पात मो र्ति
ए से जो ह वि प्र जि मे डारों ता प प्रा सी न कर के ए न ए क र्ण जो भगवान नाना नाम कर के बुला ए सो ध्यान द कर के गतरा कर हें २५
धना की ए जो भगवान सो मनुष्य न के चार प्र जो वे स्तुता य हें हें यत सांच हें तो ए मो र्थ के देन वारें नही तो हें जाते प्रेर ड चारु हो हें जो
निष्काम भजन कर हें हें तिन की इच्छा न को ए न कर न वारी अप नो चरन पद वता य हें हें ३० जो द्वा स्व र्ग स वता को से धर हो हें इव को व
चन को कर्म को जो पु न्प ते ता कर के तर के स्मर न कर हें हें पु क्त ए सो जो ज ब सो तु मारो न त व ड के वि धे तो ए जाति तर के भजन कर न वारें न कर हें

जो भगवान नाना नाम कर के बुला ए सो ध्यान द कर के गतरा कर हें २५

श्री सुक देव जी कहें राजा जं व दी प के प्राद जे उप दी प हें तिनै एक कहें हें ३२ सगर के जे वेरा तिनै पो डा के द दे के ली ए चार ओर यत ए यी वं को
हैं हें तिन कर के र वे हें तिन के नाम कहें हें स्वर्ण प्रस्थ द्रु म् प्रावर्त म ए न मं दि र्ति र न पा च ज न्य सि प ल लं का ३३ भरत वत्स मै भ वेरा
जा प री क्षत ते रं प्रा गे जं व दी प के जे व ड तिन को जो भाग सो जे सो सुना तो सो व र्ण न की यो ३४ इती श्री भागवत पंच मेरा को न विंशो ध्याया १९
वीस की प्र ध्या न ल क्ष ते प्रा दि ले के जे दी प तिन की जे स्थित नाय समु द्र न कर के सहित कहें हें ओर भी बा वुर भा ग्या दि क को जो प्र मारा

श्री सुक उवाचः जं व दी प स च राज नु प दी पानु यो रें क उप ह सं ती स ग रा त्म जै र स्वा न्वे ष रा इ भां म री पर तो नि
स्वनः द्रु प क ल्प ता नु ३२ न घ यो ३३ स्व र्ण प्र स्थ द्रु म् प्रावर्त नो र म रा को म ह ह पि राः पा च ज न्यः
सिं ह लो ल के ति ३४ ए वे न व भा र ते न म जं व दी प प स वि भा गो य धो प हे रा म नु व र्णि त इ ति ३५ इती श्री भा
ग व ते पंच मे स्त्रं धे र को न विंशो ध्यायः १९ ॥ अथ रु वा च अतः परं प्र द्या ता दी नां प्र मारा ल क्ष रा सं स्था म
नो व र्षे वि भा ग उप व र्ष १ जं व दी पो य पा व प्रा मारा वि स्ता र स्ता व ता क्षा रो धि ना पर वे र्षी तो प धा मे रु जं

ताते लो कालो क पर्वत की जो स्थित सो व र्ण न कर हें हें १ श्री सु देव जी कहें हें पाते परे प्र द्य तें प्रा दि ले के जे दी प तिन को जो प्र मारा ताते लो
कालो क ल क्ष न सं स्था न ताते खंड न को जो भाग सो व र्ण न करी ये हें १ य द् जं व दी प तिन प्र मारा को वि स्ता र करो ताते तिन ने इ प्र मारा को
लाघु पो जन को वारी समु द्रा कर के वे धित हें जे से स मे रु जं व दी प कर के वे धी त हें खारो जो समु द्रा ताते धनो वि शाल ऐसे जो स
क्ष दी प ता कर के पर वे धित हें जे से वा हर उप व न कर खा य वे धित हो हें २

जामनके प्रमाण पील खल को वृक्ष है सो दीप के नाम को कहें हैं अता हिरण्यप्रभु उठी हैं सोर होतें सात हैं श्री भजों के ता दीप को राजा
प्रियव्रत को वेराइ धन जी है सो अपने दीप के सात भाग करैं जो खंडन के नाम सो पुत्रन के नाम तिनै देकरैं आप्राप्तात्मयोगक
रत्न उपराम कं प्राप्ति भयों ३ शिवपवसस भद्र शांति होम प्रभुत प्रभुत ये खंडन के नाम हैं तिन खंडन में पर्वत नदी सात हैं ४ मरिाकुख
अक्रंद इंदु सेन जो तिसमान स्परन हिरण्यप्रभु वने घमाल ये मर्यादा के पर्वत हैं ०५ प्ररुणा नका प्रागिर सावित्री प्रभारत भगपे

124

लवणो हधिर पित्तो विगुण विमो लण प्रक्षारणेन परिहृयथा परिखा वाद्यो पवनेन उपलसो जं प्रमाणो दीपाख्या
क्रोहिरण्य उस्थितो यत्रातिरूपा से सप्रजिहः ४ तस्या धिपतिः प्रियव्रतात्मज इन्द्राजिह्वस्त दीप सप्तवर्षाणी विभज्य
सप्तवर्षा नाभ्य आत्मजेभ्य आकलयस्व यमात्मयोगेनोपराम ५ शिवयवं संश्रु भद्रं शांत होम ममत्त मभय मिती वधी रिद्धि
तेषु गिरयो नद्यश्च संप्रैवा भिक्षाता ७ मरिाकुखे वज्र उर इंदु सेनौ जो तिसमान स्परणो हिरण्यप्रभु वने घमाल इती
सेतु सेत्वा ८ प्ररुणा नका प्रागिर सावित्री सप्तता अतः नरा सप्त भरेत मरानेयाः ९

नदी हैं ५ जिन नदीन के जल को सूर्य ना करे डर भरे हैं रजतम जिन के ऐसे जे प्रसपतंग उद्यन सत्पांग ये नाम जिन के
ऐसे जे चारो वरुण हजार वर्ष की हैं प्रापु जिन की हेवतान को सो हे दर्शन जिन को उपजा पवो सो जिन को ते विद्या करैं भगवान
स्वर्ग को चार भयी मय आत्मा सूर्य ना की उपासना करे १० पुराणा पुर्व जो विष्णु तिन को जो रूप सप्त अविह सु प्रभुत मसु
इन को अधिष्ठाता ऐसे जो सूर्य ना की रम सराण प्राप्ति भरे ११

६९

लक्षादि जे पांच दीप तिन में प्रायु इंदु की सामर्थ्य प्रोज सहवल वृद्धि पराक्रम स्वभाव की सिद्धि सो सवन रंग क सो वर्तें १२
लक्ष दीप है सो अपने समान इख कर स को जो समुद्र ना करे वेधीत है ऐसे नाते डनो साल्मल दीप है सो अपने समान महरा को जो
समुद्र ना करे वेधीत है १३ जा दीप नै पिल्ल खल को वरो वर से भर को वृक्ष है जा वृक्ष में पक्षी न केरा जो वेदन करैं भगवान की स्तु
ती करे हैं ऐसे जो गरुड तिन को स्था है सो साल्मली दीप के नाम के लीये लघि है ता दीप के राजा प्रियव्रत को वेराय जा वाड है सो

125

पांसां जलोपसर्जन विभूत रजस्तम सो हंसपतंगो द्यन सत्पांग संज्ञा श्रवणो वरुणः षट् स्नायुषो विबुधो पसमं दर्श
प्रजननाः स्वर्ग चारं त्रय विधया भगवतं त्रयं सूर्यमात्मात्मानं यजंते प्रतनस्य विष्णोरुपयस्य स्यर्तस्य वृक्षराः प्र
मत्तस्य च मत्सोश्च सूर्यमात्मानमीमहीति ११ लक्षादि युयं च युपुरुषाणां नायुरिद्रियमोजः सहो वलं वृद्धिर्विक्रम इति
च सर्वेषां मोक्ष की सिद्धि विशेषेण वर्तते १२ लक्षासु समाने ह्युर सो देना हतो यथा दीपो पिशात्मलो विगुण विसा
लाः समानेन सुरो देना हतः परिवर्तते १३ यत्र वै साल्मली लक्ष्यायामा १४

सात पुत्रन के अर्थ पुत्रन रुं ही हैं नाम जिन को ऐसे सात खंड करैं वांरहेत भयों सरोचन सो मनस रमनक देव वर्ष नारभइ
आप्राप्तापुन प्रविज्ञात ये नाम हैं तिन खंडन में पर्वत नदी सात कहें हैं स्वर सत संग वा मदेव कं ह मुं ह पृथ्वी सह
स्ता सय पर्वत है प्रनुमती सिनी वाली सरस्वती का हरजनी ये नदी हैं नाखंड मे शुती धर वीर्य धर वसुंधर ये देना मना मजि
न के ऐसे जे पुर्व ते भगवान आत्मा जो चंद्र माता पव ह कर के रज न करे हैं अपनी किरन न करैं शुक्ल लक्ष्मण मे दे

देवमानसं सवप्रजानां प्रन्नत्रो भागहेतु चंद्रमाजो राजा सोहमारे सन्मुखो य एसे मंदराके समुद्र तैवाहरता ते इ नो
प्रपने समान कीयो समुद्र ता करके वेष्टित कुश दीप है या दीप में देव को की पो कुश को स्तव है सो वा दीप को नाम करे है उस
सरोमानो प्रजिनी है प्रपनी को मल कांति करे है दिसान में प्रकास करे है जा दीप को राजा प्रियवत को वेरा दिरण्य रे नाना म
हैं सो प्रपने दीप के सात खंड करे है सात पुत्रन को यथा भाग वां टि करे है आपन पकरे है वसुदान रुद्र रुचिना मिश्र सप्त सप्त

यस्यां वावलिनी लयमाहुर्भगवतः स्वं हस्ततः पवराजस्य १५ सा दीप इतय उपलक्षते १६ त दीपाधिपतिः
प्रियवतात्सजो यज्ञवातः स्वसुतेभ्यः समभ्यस्तन्नामजित्समवर्षाणि व्यभजत १७ सुरोचने सोमनस्य र
मराज देववर्षेणारभद्रमर्षाय नमविज्ञानमिती १८ सुरसाः शशजो वामदेवो कुमुदपुत्रवर्षः सवस्य
स्तुतोरिति २० अनुमतिः शनिवाली सरस्वती कुतुरजनी दाराकेत २१ त द्विषपुरुषाः श्रुतधर वसुंधर
धरे सुधर संज्ञा भगवतं वेदमयं सोमनामानं वेदनयजंते २२ स्वर्गोभिः पितृदेवो भो विभजन ह्यमृ
विवक्तनाम देवयेव गन के नाम है १९ तिन पर्वत न में सीम के पर्वती न ही सात है २० चक्रचतुश्रंग कपिल चित्रकूट
हेवानीक उर्ध्वरूपा द्रवराय ये पर्वत है २१ वसु कुल्या मित्र विंदा श्रुती विंदा देवर्षी धन्युता मंत्रमाला पेन ही है २२
जिन के जल न करे कुश दीप की जे मजा बराल को विध प्रविपुत्र कुल कल ए है संज्ञा जिन को प्रजित्स्व रूपी जे भगवान् त
कर्म को शल करे सजन करे है २३ हे जात वेद पर ह कुं के सा सात तुम हव्य के वरुन वा सो भगवान के प्रगजे देवता तिन

सर्वो सो राजा सोमनाम प्रविपुत्र कुल कल ए है संज्ञा जिन को प्रजित्स्व रूपी जे भगवान् त

के यज्ञ करे पुरुष जो हरितिन को सजन करे २४ कुश दीप ते वा तिरता ते इ नो को च दीप है सो प्रपने समान सीर समुद्र करे
वेष्टित है जे सें कुश दीप की के समुद्र करे वेष्टित है २५ पासे को च नाम चर्वत है सो ई दीप के नाम है तिन के करे है २६ जो पव
त त्याम काती क के प्रायुद्ध करे जो र डार है तिन भ कु मजा के खार समुद्र में सी चो वरुण ने रसा की नी पाते निर्भय होत मर २७
मा को च दीप में प्रियवत को वेरा धन प्रयुना मराजा है सो प्रपने दीप में सात खंड करे सात वेरान के दे के पर म ब्रह्मारा है

एवं सुरोदाह हि स्तदिगुणः समानो नाऽऽहतो धृतो देन यथा सर्वः कुश दीप २४ यस्मिन् कुशस्तं भो देव
कृत दीपाख्य नोज्वलन इवापरः स्वशस्यो चिपादिशो विराजयती २५ त दीपपतिः प्रियवतो राजन हिर
णारेतानां मं दीपं सप्तभ्यः स्वपुत्रेभ्यो यथा भागं विभज्य स्वयं ता य प्रासीद्यत २६ वसु वसुदान रुद्र रुचिना मि
श्र सप्त सप्त विप्रनाम देवनामभ्यः तेषां वर्षे युसी मा गिरयो नृधम्रा भिज्ञाता सप्तैत्र विंदा श्रुति विंदा देव
दर्भी धन्युता मंत्रमालेतिः २९

यश जिन को प्राप्ति भूत प्रै सो जो री तिन के चरणार विंद कूं प्राप्ति होत मर २८ आमोद मधु रुद्र मेघ एष्ट सधा
मा भाजिष्ट लोह तारन वनस्पति ये धन एष्ट के वेरा है तिन खंडन के पर्वत न ही सात सात है २९ श्रुत व
मान भोजन उपवर हन नंदो नंदन सर्वतो भद्र ये पर्वत है ३० प्रभया प्रमत्तो घा आर्ष काती र्थवती प
वित्रवती श्रुत्या पेन ही है ३१ जिन न ही न को निर्मल जो पे जल ता य जे सेवन करे एसे जे पुरुष अ विभ

भा.पं.
६३

नामाधियतिः स्वर्दीपे वर्दीपणीसमविभज्यतेषु पुत्रनामसमरिष्यादानवर्षीयान्निवेत्यस्वयं भगवन् ५

128

इवराहेवकये हैं संज्ञाजिनकी ऐसे जैखंडके पुरुषने जलमय जो देवता जलकी जे घूर्णी प्रजलीतिन कर कैं प्रजून क
रैं ३२ हे जलहैं मुम भगवान के वीर्यने भरलो भूर्लोक भुवरलोक स्वर्गलोक तिने पवित्र करैं तें मुमहमें सपरीको
हमारे हे इनको पवित्र करो ३३ ऐसे हीरसमुद्रने परें सावदी परें सोवती सला सजो जनको विस्तार हैं अपने समा
नही स्त्री के महा को जो समुद्रता कर कैं वेष्टित हैं जमै सात कजाम हृष्ट है सो वा दीप के नाम कुर हैं वडो हैं सुगंधजा

वासां पयोभिः कुशालके दीपो कसः कुशालको विहा भियुक्त कुलक संज्ञा भगवंत जात वेदः स्वरूपरां कर्मको
सलेन यजिते ३० परस्य हृस्वराणां साक्षात् जात वेदो सरववाह देवानां पुरुषानां पत्नेन पुरयजेत् ३१ तथा च हिः
कोच दीपो विष्णुणा समानेन ह्यीरोन परिता उपरत उप त्वमो ह्यथा पथा कुशदीपो प्रनो देनो ३२ यस्मिन्
कोचो नाम पवतः राजो दीपनाम निवर्तमास्त ३३ यो सोऽगुसमतरणो मथत न तं वरुजो ह्यीरो देना सिच्यमा
नो भगवता वरुणो वा भिगुमो विभयो वभूवः ३४ तस्मिन् पन्नमी पवतो घृत एवौ गवतः परमकृत्पाण पशस
प्राप्त भूत सतरे श्वरणा रविंद मुपजगाम ३५

क्रीसगरे दीपन हें सुगंधि करैं ता दीप को राजा मी पवत को वे रामे धाति थी हैं सो उसात खंड कर कैं सात वेदान कुर
र कैं जो खंडन के नाम सो पुत्रन को नाम हैं पुरो जवम नौ जव पवमान को ध्यानी कचि जरे कवत रूप विद्ययें हैं नाम जे
न कैं ति न खंडन के राजा राजा कर कैं आप भगवान में देवपति प्रवेश कर कैं त पकेली पें वन में जात भये

६३

इन खंडन की मर्यादा के पर्वत नही सात रहे ३७ अनथा प्रायुही उने सूर्य अपराजिता पंचपदी सरस्वति निज घृत ये नदी
हैं ३८ इसान अरु सिंतु वल भद्रात के सर सर श्रुत देवपाल मरान सये पर्वत हैं ३९ तिन खंडन में पुरुष हैं अत वन सत्य वतः
दान हत अनुवृत्त ये हे नाम जिन के प्राणा पान कर कैं रजत मजिन के ने परम समाधि कर कैं पवन रूपी जो भगवान को रजन करैं ३५
जो सब प्राणी न के नीतर प्रवेश कर कैं प्राणा दिक् दक्ष कर कैं पालन करैं अंतर्यामी इस्वर हैं जा के वस पर जगत हैं सो हमारे ही

129

प्राप्ते भधुत हो मेघ एषः सुधा मा भ्राजिये लोहितो र्णवनस्पति ध एष सुतास्ते यागिरयाः सप्रस्तै वनद्युश्चाभिज्ञाता ३६
शुक्लो वर्धमानो भोजन उपवर्ति र्णो नंदो नंदनः सर्वतो भू इति ३७ अभूपा मृतो याः प्रार्थु मातीर्थी रवती रूपवती
श्लेति ३८ प्रासामं भयवित्रममलमुपयुज्जाना पुरुषं भद्रविश देवक सजावये पुरुषी प्रापो मये देवमपां परोतिताः
जालनायजते ३९ प्रापः पुरुषी र्यास्थ पुनं तीभर्तव्यरः जानः पुनीता मी वप्री स्पर्शता मात्मना भुव इति ४० रावंपर
ज्ञात ह्यीरो दासरत उपवेशिता सावघात्रिसलक्ष्यो जनायाम समानेन च दधि मये हो देन परीता ४१

रां ४० रासे दही के महा के समुद्रने परें पुरर दीप हैं जाने हुनो हैं चारो ओर रचो हैं अपने समान मीरे जल को समुद्रता कर कैं बाहर
ते वेष्टित हैं जामें वडो कमल हैं प्रणि की जे सिखाते सै निर्मल सो नो से पतो प्रातिन के दशा हजार तिन कर कैं पुते हैं भगवान्
कमलासन ह स्नाता को प्रासन रचो हैं ४१

तादीयके मध्यमें मां सोतरना सयर्वत हैं। पूर्वाचीनपरीचीनजे खंडतिनकी मर्यादा कौ हैं दशहजार योजन कौ उचौ प्रोर लंबो
है जा में चारो दिशान में चार लोकपालन कौ इंद्रादिजन की पुरी हैं जाके उपर समरके आसपास प्रि हैं ए सो सूर्य नारायण क्रोर थ
ता कौ संवत्सर रूपी जो चक्र श्री सीनाइ मरै तादीय कौ पालक मीय हत कौ वेरा वीत हो उनाम हैं ताके हो वेरा हरे मरणक

यस्मिन् हि साको नाम महीरुहः स्वसेत्रवपदेराजः यस्य हि महासुरभिगंधस्तं दीपमनवा सुयतिन सापि प्रियवत्तवा
धिपतिर्नामाने धाति धिसोपि विभज्य सप्रवर्षाणि पुत्रनामानि तेष्टुत्वात्मजान् परोजव मनोजव यवामान धुन्ना निज
चित्ररेव वडरूपविस्थाधर संज्ञान्निधाया धिपतिन स्वर्प भगवत्पुनंत आवेसित मेति त्तयो वनं प्रविवेण एते धांवधम
हा गिरयो न घञ्च सप्तसमवे ४२ इशानुनक्त शृंगौ वलभूः सतकेसरः सहस्रश्रोतो देवणालो महान सइति अनघा
आपुहीनु भयस्य रपरा जिता पंचपदी सरस्म श्रोतो देवणालो मरु न सइति अनघा आपुहीनु भयस्य रपरा जिता पंचः
पदी सरस्म त्नुतिर्नीज घनिरिति तद्वर्षपुरुषा ऋतवत सत्पवत दानसता गुह्यत नामानो भगवन्तं वाधात्मकं प्राणाप
म विभत्तरजस्तमसुः परमसमाधिमापजते अंतःप्रविश्य भूतानि यो विभत्तात्मकं तुभिः प्रंतयो मीस्वः साक्षात्पानु
को यद्दृशो स्पृष्ट एव मेव ह धिमंडो दात्तरतः पुस्कर दीपस्ततो विगुणा यामास मंततः उपकल्पिता समाने नखा रुद्रे

न समुद्रेशावदिराहतः ४७

प्रोर धातु की ये नाम हैं तिनै खंड कर के आप वडे भै पान की सीनाइ भगवान के कर्म मै हैं सील सुभाव जा कौ प्रै सोरु हैं ना
खंड के जे पुरुष ते वेद रूपी जो भगवान तिनै सब कर्म कर के प्रा राधना करे हैं याम वक्रं जे पैं ४६ जो फल कर्म रूप हैं हस्म जाते
इही रातें रा कपर मे स्वरु

६४

मैं हैं नेष्टा जा की भवती य हैं शांत है नाय जन ए जन करे हैं ना भगवान कौ नमस्कार है ताते परे लोका लोक नाम पर्व
त हैं सो लोक प्रलो बडन के मध्य में चारो प्रोर कर चो हैं ४७ जितनी मान सोतर समर इन के मध्य में भूमि है तिन नीची
मंडि समुद्र ते पैं ताते परे सोने की भूमि हैं आर सी सी निर्मल हैं भूमि मे गयो सो पदार्थ सो के सैज नही पा मित्र हैं ताते सगे

131

यस्मिन् हहत्पुस्करं ज्वलन सिखाः मलकन क्रपत्रा पुता पुतं भगवतः कमलासनः स्थाध्यासनं परकल्पितं तदीय
मध्ये मान सोतरना मै करवा ची चीन परा चीन वर्षयो मर्यादा चलो पुत योजनो आयागामः यत्र तु चतुस्रुदि सुचत्वा
रिपुराणि लोकपालानां मिंद्रादीना वडपरिष्ठात्म सूर्यरथस्य मेरु परिभ्रमतः संवत्सरात्मकं चक्रं देवानां मंडोरा
त्राभ्यां परममनितदीपस्या धियतिः प्रियवतो वीत होत्रे नाम एतस्यात्मजोर मरा क धात की नामानो वर्षयतिः
निपुज्यस्यं एवं च वडगवत कर्मशील एवास्ते ४८ तद्वर्षपुरुषा भगवन्तं ह स्मरुपरां सकर्म केरा कर्मणारा
धुयंती इहं चोदाहरंति यतः कर्म मयं लिंग हस्मडुं जने चयेत एकांत मद्दय शांतं तस्मै भगवते नम इतीततः परस्मा
लो कालो कना मो चलो कालो कपोराले परित उयत्कमः यावन्मान सोतर मे वीरुन रंतावती भूमि कांच
नम्या हरी ललोप मायस्यं प्रतिता पदार्थो नि कथं चित्पुनः प्रत्युपलभ्यते तस्मात्सर्वस

प्रा नीन कर के ररित हैं ४८ लो कालो कयत नाम चो हैं जाते लोक प्रलो बडन के मध्य में स्थापन कीयो हैं जाते लो कालो
क नाम हैं सो पर्वत इस्वर ने नीन लोकन के अंत में चारो प्रोर चो हैं जा पर्वत ते सूर्य इनि की प्रादि में ध्रुव जिन कथं
तमें एले जे निगुन तिन की जे किरन वीनि नी केरी नीन लोकन में चा

भा.पं.
६५

रों प्रो प्रकास करै लोका लोक जापवे कं नली समर्थ होतैं इत नो उंचो है इत नो तीवरो है ४५ मान लक्षण रचना इन कर
जैवाने इत नो इलो कौ विस्तार करौ है ४० सो जो लोक लोक पर्वत सो पांच किरार योजन गिनो जो भगवान को जो चौथो भाग
हैं साडे बारह किरार योजन सो समर करे एक प्रो रहे खेव कं यो गते ४१ ता पर्वत के उपर सब जगत के गुरु रसे जो भगवान निने
चारो दिशा नमें चार हाथीन के यति नख भपु स्तर चडवा मेन अपराजित ये राखे हैं सगरे लोक न को जो स्थित ता को कार न है ४२

अपर इना सित लोक लोक इति समास्था यद्नेन चलेवलोकः लोकस्यांतर्वर्तिनावस्थायते सचलोकत्रयांते परितः
इत्यरेण विहितः यस्यात्सूर्यादीनां ध्रुवापगाणां ज्योतिर्गणानां गभस्तयोर्वाचीनां स्थितो लोकानां वितन्वानां नक्षत्रां वि
पराधीनां भवितुस्ततं ते तावदुत्तरेनायामः ४५ एतावत लोकविना सो मान लक्षण सस्था भिर्विचितं कृविधि
शांतं चाशतकोटगुणतस्तु भगोल त्रस्यतुरीय भागो पं लोकालोका चल ४१ तडुपरि द्वाचन सखा साखा तमयानि न
खिल जगदुत्तराधिनिने पिताये दिरूपत परसमा परस्पर चडो वामनो पराजित इती सत्रल लोक स्थित तेन वा ४२
एवा एव विभूतीनां लोकपालानां विविधिभूपायस्तु रापु भगवान परमहापुरुषो महाविभूतिपति रंतरया म्पा
मनो विभूति लोने सुख धर्म ज्ञान वैराग्य श्रव्यो द्यम मला सिधु पलक्षण विध्वस्त नादि भित्तियार वेद मवरे परवार म्पानि
जवरा पुधो यशो भित्तो दिडः सधारय मारास्त भिगिरिवरे समता सकल लोक स्वस्तयः प्राप्ते ४३ श्रीरुहि ४३
प्रयनी विभूति जे लोक पालति न के नाम प्रकास को जो वीर्य ना कर के वडा इवे के ली ए महा विभूती के पति महा पुर्व अंत
रजा मीर सै जो भगवान सो धर्म ज्ञान वैराग्य श्रव्य म्पमहा सिद्धि इन कर के

६५

भा.पं.
६६

ऐसी वीस प्रधान कर के भूमो मर्यादा करी अवधानि परे तीन अध्यायन कर के स्वर्ग मार्यो को पालन करवै हैं १ इकी सकी
अध्यामै काल चक्र करवै दिन दिन में भ्रमे हैं प्रे सो जो सूर्य ता की जे पति ता कर के जे रासन के सुवारतिन कर के लोक पा
भान रूपन करवै २ श्रीशुक्र देव जी कहै हैं राजा भूमंडल को जो राजा सत्रिवेण सो प्रमाण लक्षण सो इत नो ई करे हैं ३
इतने इकर के स्वर्ग मंडल को जो प्रमाण ता पस्वर्ग के जानन वारे ते कहै हैं २ जै सैं हो उहलन में एक दल कर के दूसरे नो

133

श्रीशुक्र उवाच एतावानेव भवलयस्य शान्तिवेषः प्रमाणलक्षणतो व्याख्या १ एतेन हि दिवो यण लमानं
तद्वद्वपदिशंति यथा विलयो निष्ठावादी नम २ ने अंतरेणांतरि स्थिति उभय संज्ञीतं ३ यन्मध्यगति
भगवतां सपतां पतिस्तपनः प्रातयेन त्रिलोकिं प्रतिपत्तवभाषयतामभासा ४ सयष उदगयन
क्षिरायन विषुवत्संज्ञाभिर्माद्यसे प्रसमनाभिर्गतिभिरारोहिणा वरोत्तरात्पमवस्थानेषु यथा स्
वस्तमधिपयमानो मज्जरादिपुरासंज्ञो रात्रादि चिह्नस्वसमानसंज्ञीते ५ यद्यमेव तुलयावर्तते तदाहोति

प्रमाण होवै ते सै ई स्वप्रमाण जाणो उन के मध्य में आकास है ३ जा आकास के मध्य में भगवान सूर्य है सो प्रातपन्न
कैं त्रलोकी कृत पावे हैं अपनी कानि कर के प्रकास करे हैं ४ सो यह सूर्य उत्तरादरा दक्षिणायन विसुवत ये जे सं
ज्ञातिन कर के मंडसी प्रसमान जे गति ति न कर के आरोहन अवरोहन समय जे अव

६६

उपलिखनविश्वसत्त्वनायप्रघटकरतविस्वनसेनने आदिलैकैजेपार्यदनमेंअवतिनसैंरतअपनेअवस्थाप्रापुधचक्रा
 दिक्कतिनकरकैंसोभितभुजहंडतिनकरकैंरसाकरततापर्वतमेंसबलोकनकैकल्याणकरवेकरहैं ५३ याप्रकारकौजोदेश
 नायकल्पयेंतमाप्रहैंआहकैलीएप्रपनीजोगमायाकरकैंरचैनानाप्रकारकैलोकतिनकौजोआजानाकेपालनकरवेकैलीए ५४
 जितनोभीतरविस्तारकैंसोभीतनोहीअलोककैप्रमाराकरहैंजो ५लोका लोकपर्वततैंपरतातैंपरहैंविश्वप्रयोगअरनकी

आकल्पमेघराववेशांगतौपीछायेसर्थाः ५४ पोतिविस्तारएतेनघलोकपरिमाणचव्याख्यातंयदहिलोकालोक
 चलात ५५ ततः परस्तायोगेअवरातिविश्वद्रामुदाहरंति ५६ अणुमध्यगतः सूर्यो घावाभूमौ यदतरं सूर्यादि
 गेलयोर्मध्येकोटः पंचविंशतिं ५७ मतेः एषु एषतस्मिन् यदभूततौ मार्तंड इतीत्यपदेष्टादिरण्यगर्भ इतीत्य
 द्ररणाणामुद्भवः ५८ सूर्येण हि विभज्यंते दिवाः स्वर्गौर्महीभिर्वा स्वर्गापवर्गौ नरकारसौकोसिच सर्वश ५९ हे
 वतीर्यः मनुष्याणां सरोरस्य सरीरुधां सर्वजीवनिष्पापानां सूर्य आत्मा ह जीस्व ६० इतीश्रीभागवते पंचमो विंशततमो २०

गतिकहेहैं ५५ सूर्यहैंसोअंडकेमध्यमेंमतिहैंकोनसोमध्यहैं स्वर्गऔरभूमिइनकोजोमध्यस्थानहैंसूर्यसहितजोअं
 डजोकलकतिनकेमध्यमेंपचीसकिरोरकरहैं ५६ यहसूर्यप्रचेतनअंडमेंवैराग्यरूपकरकैंप्रविष्टहोतमपौ पानेजा
 कौनाममार्तंडकरहैं ५७ प्रकासवत्तजोअंडनामेंमपौहैंघातेहिरण्यगर्भकरहैं ५८ सूर्यकरकैंदिवाप्रकासस्व
 र्गएषीविभागस्वर्गमौक्षकेहैरापातालादिकनकेविभागकरयेहैं ५९ देवतामनुष्यपक्षीसधसगरेजीवनकेसमूह
 तिनकौसूर्यहोआत्माहैंनेत्रनकोअधिष्टातहैं ६० इतीश्रीभागवते पंचमस्कंधो विंशततमो अध्याय २० श्री श्री श्री श्री

स्थानिनमेंजैसोकालहैंतैसोइमाप्रिहोतमकरादिकरासनमेंदिनरात्रिहैंतिनैवडेछोटेसमानकरहैं ५ जासमैमेघ
 जुलाइनमैवर्ततवदिनरात्रिसमानकरहैंजववृषभतैंआदिलैकैजेपांचरासितिनमेंजवविचरहैं तवदिनवडेहैरा
 तिवडेहैं ६ जासमैह्यअिकतेआदिलैकैपांचरासनमेंवर्तहैंतवदिनघटेहैं रात्रिवडेहैं जवताइहसिलापनहैंत
 वताइदिनवडेहैं तवताइउत्तराइनहैंतवताइरात्रिवडेहैं अैसे ७ अैसेनोकिरोरकामनलाखपोजनमानसोतर

यहावृषभादिषु पंचसुराशिषु चरततदाहान्येववर्द्धते हसतमासमास्ये कैकाघटिकारात्रिषु ७ यहाह्यश्रि
 कादिसुपंचसुवर्ततेतदाहोरात्राणिविपर्ययाणि भवन्ति ८ यावदक्षीराण्यपनमहानिवर्द्धते यावदह्य
 नंरात्रियः ९ एवं नवकोट्युक्ता पंचासत्तलक्षणा निचयोजनानां मानसोतरागिरवर्तनस्योपदसंति १०
 तस्मिन्नेंद्रीपुरोएवस्मानमेरोहैवधानिनामदृष्टातोयाभ्यांसंयमनीमानपञ्चाधारिणां बीह्लोचनीनामउत्त
 रतः सौम्यां विभावरीनाम ११ तासहयमध्यासमयनशीथानीतभूतानां हर्तीनिमत्तानिसमयविशेषेणमेरो

पर्वतकोमंडलहैं १० तामानसोतरपर्वतमेंसुमेरकेपूर्वऔरदेवधानीनांइंद्रकीपुरीहैं दक्षराऔरकंपमकीसंयनी
 नामपुरीहैं पश्चिमकूनिमोचनीनामवरुनकीपुरीहैं उत्तरऔरकूविभावनीनामचंद्रमाकीपुरीहैं तिनपुरीनमें
 उहैमध्यान्प्रसूयाधीराततिनैकरहैं जेभूतनकेप्रवर्तनिवर्तइनेकेनिमित्तहैसुमेरकेचारोंदिशानतेहोहो ११

भा.पं.
६७

136

जेसुमेरमें स्थित हैं निनकुंदिनके मध्यमें प्राप्तीसूर्यप्रकाशपैहें सुमेरुवापौकरकेंचलेहैं औरदहिनोकरकेंजाते १३
जहांउदेहोहैंनाकेसूर्यनिपातमेंअस्तहोहैं औरजहांप्रखंडकरकेंचलेहैं तत्तीकेसूर्यनिपातमेंआधीरातिकरहैं तत्तांग
येजोसूर्यतापयकेलोन्नतीहोरेयैहैंजिवताहैंतेहोरेवैहैं १४ जामेइंइकीपुरीतेंचलेहैं पंड्रधरीकरकेंसवाहोकिरोरसा
देवारेलखपचीसहजारयोजनयमकीपुरीजामेजामेंजाते १५ एसेहीतपुरीतेवरुनकीपुरीमेंप्रेरचंडमाकीपुरीमेंआमे

तत्रतानां दिवसमध्यगएवसहादित्यस्तपति सवेनाचलंदक्षरांनकरोती १३ यत्रोदेततस्यहसमानस
प्रनिपातेनिलोचनीयत्रचनस्यंदेनाभितपतिनस्पहेंससमानसत्रनिपातेप्रस्थापिततत्रगतनपस्यंत
येस्तंसमनुपस्येरनु १४ यहावेगसूर्याप्रलतेपंचदशभीघटिकाभीर्यामांसपाहकौटद्वयंयोजनानांसाध
वाहशलक्षारिसाधिकाचोपयाति १५ एवंततोवाहूणीसोमामेंद्रीचपुना १६ तथायेचुगहासोमाहयो
नक्षत्रैसहजोतिष्रकेसममसुहंतिसुखानम्लोचंती १७ एवंमृतंतनचतुस्थिसलक्षयोजनान्यक्षराता
धिकानसोरोरथस्यपीमयौसौचतप्रधुपरिवततेपुरी १८

मैंदेनेसेहीप्रोरजेअहैंचंडमातेआहिलैकेनक्षत्रनकरकेंसहितजोतिसचक्रमेंसंगरीउदेहोहैंप्रस्तहोहैं १६
एसेत्रयीमयसूर्यकोरथहोघडीकरकेंतीसलाषप्रारसंयोजनचलेहैंचारोपुरीनकेविषेगलेहैं १७ जारथकोर
कपेसाहैंवारेजेमहीनातेहैंआजाजिनकेधेजेरिततेहैंनैमीजाकीतिनजैचातुमीस्यादिकतेहैंनामिजाकीरसो
संवत्सररूपकरहैहैं १८

६७

जायेंपाकौयेजोअक्षसोसुमेरकेमाथेमेंकीयोहैं दूसरोजोभागसोमनसोतरमेंकीयोहैं १९ जातेसूर्यकेरथकोपेयासोपहैं
ताअक्षमेपरनभागवाधीहैं दूसरीजोअक्षयसोसाढेतीसहजारउपरजंतालीसलाखयोजनकेप्रमाराकरकेंधवसेबाधो
उपरभागजाकौ २० रथकीजोसामिग्रीसोथतीसलाषयोजनविस्तारहैं नाकेचोथेप्रमाराखकोजंआहैंजाजुआमंगाप
कीआहिलैहैंधंहतेहैंनामजिनकेअक्षरासारथीनेजोरेसातयोडातेसूर्यकोवहेंहैंअक्षराजोहैंसूर्यतेआगेस्थितहैंप्रो

137

यस्येकंचक्रं द्वादशारंधरोनमित्रनामिसंवत्सरात्मकंसमामनंति १९ होमेरोर्मर्द्धनिकृतोतरभागोमानसो
तरेकृतोतरभागोयत्रप्रोतरं विरथचक्रंतेलयंतवद्मन्मानसोतरगिरोपरभ्रमति २० तस्मिन्बक्षेकृतम
लोद्धतीयोक्षस्तुतुरीभागविलास्तावान् विरथपुगेयत्रतयच्छंदोनामानाः समाक्षरायोजितावहंतिहेव
मादित्यं २२ पुरस्तात्सविभुकरुणाः पञ्चान्नियक्तः सौतेकर्मणीकिलासेनथावालखित्पात्रययोडः एषव
माजाः सृष्टिसहस्राणिपुनः सूर्यस्तुवासाकायनिपुणसंस्तवंती २४ तथायेचक्रययोगंधर्वाप्रसो
नागाग्रामयोपातधानादेवाइत्येकैकसोगरांसमचतुर्दशमाप्रमासभगवंतंसूर्यमात्मानंष्टब्जामानंष्ट
रपीधेकृतंमुखजाकौरसोरहैंहोसार्थीकेकर्ममैस्थितहैं २३ तैसेईवालखिप्रजेअधिलैअक्षराकेपर्वकैवरोवरसा
हहजारसूर्यकेभागेंस्ततिकहैंहैंतैसेईप्रोरअधिरंधर्वप्रक्षरानागराक्षसदेवतातेएकराकतौवोधेहोहोसातरा
सोगराहोकेनानाप्रकारकेहैंनामजिनकेंनानाकर्मनकरहैंनानाहैंनामजिनकेएसेजोसूर्यनारायणतिनकीउप
सनाकरहैंलाखउपरसाढेनोकिरोरयोजनभूमंडलतेनाकूंहोकोसउपरहोहजारयोजनतिनैसूर्यरा

भा.पं.
६८

138

कहाणकरकरैं भोगकरैं २६ इती श्रीभागवते पंचम स्कंधे राक विंशो ध्याया २१ वाइसकी प्रध्यायमें चंद्रमा अज्ञा
दिक इनको जो स्थान सो उपरवरी न करैं २ को गति के प्रथम सार करैं मनुष्य न बुंइ २७ प्रनिय की जो प्राप्ति सो वरी
करैं १ राजा प्रथे हैं भगवान जो सूर्य तिनको जो मंडल सो समर घव इनको दाहि नो करैं चले हैं प्रौरा सिन के समर

लक्षोत्तर सार्ध नव कोट योजन परमंडलं भवलयस्य क्षरोनसग मसुतरं दिसत प्रयोजनानि संभुंके २६३
ती भागवते पंचम स्कंधे राक विंशो ध्याया: २१ राजो वाच: यहेत इगत प्रादितस्य मे वंधवं च प्रहसरो न
परक्रम जो रासीनां मभिमुखं चाप्रह क्षिरां प्रचलतं भगवतो ववर्णित मसुतवयं कथ मनुमिमीमती
ति १ श्रुज्जवाच यथा कुलाल चक्रेण भ्रमता सह भ्रमतां सदा श्रयाणां पिपील काही नो गतिरयेवंप्र
हे शांतरे ध्युपलभमानत्वात् एव न क्षत्रासिभिरुपलं हते न काल चक्रेण ध्रुवं मेरुं च प्रहक्षिरो
न परिधावता सतपर धावमाना तदा श्रयाणां सूर्यादीनां गराणां गतिरन्ये वन क्षजांतरे तरे चोपल

वापो हो के चले परम नैवरी न करो या कहं म के सै जानें १ श्रीशुक देव जी कहैं गज जै सै चै टीने ऊफिरे डै
प्रौर चै टीन की गति मारी हैं चाक की गति मारी प्रसै हीन क्षत्रासि इन करैं उपलक्षति ए सो कुक्षार को चा
क फिरे हैं ना के संग चाक पें

जो काल चक्र घवसु मेरु कंदावी नो कर के होरैं हैं चक्र कूं प्राप्रयसूर्या दिक गत तिन की गति मारी हैं न क्षत्रन के म
ध्यमें रासिन के मध्यमें प्राप्ति होरैं २ सोय सूर्य भगवान प्रादि पुरुष है सा सात नारायण हैं लोकन के कल्याण के लीयत्र
यी मय कर्मन की विशुद्ध को करन प्रपना आत्मा लाय विभाग कर के वीन नैवेद कर के तर्क कीयो वार प्रकार कर के वसता
दिकरी तून में जे सो कर्म भोगरैं तै सै रितुन जे गुण तिनै धारन करैं ३ या सूर्य को पुष्य है ते तयी विधा करैं प्रौर वरी

सराय भगवाना हि पुरुष एव सात नारायणो लोकानां स्वस्त आत्मानं त्रयी मयं कर्म विशुद्ध निमित्तं कविभि
रिपि च भेदेन विजिज्ञास्यमानो द्वादशाधा विभज्य सुवसंतादिषु किरतुष्यथोपजोषमृतगुणान्विदधा
ति ३ तमेन मिहि पुरुषास्त्रया विधया वर्णाश्रमाचारैः पुनरुपजावचैः कर्मभिरात्मनैर्योगवित्तानैश्च
क्षयाय जंतो जसा श्रेया समधिगच्छंति ४ प्रथम सराय आत्मा लोकानां धावा एधि व्यां रत्न रेण न मो वलय
सकाल चक्र गतो द्वादशमाशान् भुंक्ते ५

अम को जो प्राचारता में जे चले ते छोटे वडे कर्मन करि कैं जो गति स्तार करैं आका करैं ए जन करैं हैं ते प्रनासाय
श्रेय को प्राप्ति होरैं ४ सोय सूर्य सगरै लोकन के आत्मा हैं स्वर्ग एथी के मध्यमें जो काल चक्र जाय प्राप्ति है मेयते
प्रादिले कैं जे रासिते हैं सजा जाकी ए से जे वारै मही ना संवत्सर के प्रगति नै भोग करैं दोप सुको राक मही ना पि
तरन को दिन रात्रि सूर्य के मनाव कर के सवाहन क्षत्र करैं जितने कर के छरे प्रसको भोग करैं सो संवत्सर को

भा.पं.
६५

140

प्राकासयथीमैप्राधेकरकैजितनेकालमैसूर्यविचरैहैमाकालकौप्रयनकरैहै ८ स्वर्गएषीकेजेमंडलतिनकरकै
सहितप्राकासमंडलकृभोगकरकैताकालकौसंवत्सरकरैहै ९ उसरेकंपर्वतसरकरैहै तीसरेकोहवावत्सरकरैहै चौ
थेकोप्रनुवत्सरकरैहै पांचमेकंवत्सरकरैहै सूर्यकोसंदसीघ्रसमानजिगतिनिनकरकैकरैहै १० एसेचंद्रमाहोसो
सूर्यकीकिरणननैउपरलारवयोजनपैहै सूर्यहैसौवर्षदिनाजोभोगकरैताकंचंद्रमाहोपक्षकरकैभोगकरैजित

रासिसंज्ञानसंवत्सरावयवानुमासाः पक्षद्वयं दिवानं चेति सप्ताहसद्वयमुपरिसंति ६ पावताषष्टमंशं
अंजीतसवेरितुरित्युपरिस्पतेसंवत्सरावयवः ७ प्रथमपावताघ्ननभोवीथ्याप्रचरितितं कालप्रयनमा
चक्षते ८ प्रथमपावन्नभोमंडलं स्रुवावा एथिव्यामंडलाभ्यां कस्मै न स्रु अंजीतं कालसंवत्सरपर्वस
रमिडावत्सरमनुवत्सरमितिभानोमंदेशीप्रासमगतिमिसमाभनंति ९ एवंचंद्रमाचक्रं गभस्तिभ्युपरि
शालक्षयोजनन उपलभमानोऽक्षस्य संवत्सरभुक्तिसपादलसाम्यादिनेनैवपक्षभुक्तिं अग्रचारीदुततरगम
नोभुक्ते १० प्रथमपावत्यं मासाभ्युपक्रमलाभिरमरणाभयसीयमासाभिश्चक्रलाभिपित्रणामृगोरात्राशिपूर्वप
क्षापरपक्षामावितन्वानः सर्वे जीवनिवर्तप्रारो जीवश्चराक्रमेकं नक्षत्रं शताभुतं भुक्ते ११

नेकं महीनामैसूर्यभोगकरैहै जितनेकौसूर्यपक्षमैभोगे जितनेकौचंद्रमाहोदिनमैभोगैहै प्र
अचारीहैवडोसीघ्रलेगमनजाको १० जोचंद्रमाकृत्वपदेकवज्रवदैरसीजेकलातिनकरकैदेवतानकेपितृनकेदिनगतिनिनै
हिलौउपरोपक्षतिनकरकैविस्तारकरैहै सगरेजीवसवसभूतनकोप्राशतै याहीनैजीवरूपतैराकनक्षत्रकंसंसाधरीमैभोगैहै ११

६८

जोयहचंद्रमासोंलैकलाजाकीपुरुषरूपहैमनोमयहै अभूतमयहै प्रन्तमयहै पितृदेवतामनुष्यभूतयप्रूप
क्षीसूर्यहसलताइनकेप्राणनकं प्राणायनकरनवारोहैयातेसर्पनयकरैहै १२ ताचंद्रमातेउपरतीनलारवः
योजनइस्वरनैकालचक्रमैराखैसुमेरुंहादिनोकरकैचलै अभिजितकरकैसहितप्रगइसनक्षत्रहै १३ ति
ननक्षत्रननैउपरहोलारवयोजनपैशुक्राचार्यहै सूर्यकेप्रागेपीछेसंगमेहसमानगतिनिनकरकैसूर्यकीसीना

141

यरावसोडसक्रलाः पुरुषो भगवान् मनोमयोऽन्नमयोऽमृतमयो देवा पितृ मनुष्य भूत य प्रूप क्षी सरी सय वीरु २
धांप्राणाप्रायनशीलत्वात्सर्वमयइतिवर्णयंति १२ ततः उपरिष्ठात्त्रिलक्षयोजनतो नक्षत्रामेरुं हस्तिरो
नैवकालायमइस्वरयोजितामिसदाभिनाप्रवाविंशतिः १३ तत उपरिष्ठादुशानाह्लक्षयोजनत उपल
भ्यते पुरुषश्चात्सदेववार्कस्य सीघ्रमां हसाम्याभिर्गतिभिर्कैवच्चरन्ति लोकानां निपदा कूलं एव प्रापे
रावर्षयं प्रारेणानुमीयते १४ सद्युविष्टं भजनं य समः उसनासाबुधो व्याख्याता १५ तत उपरिष्ठा
द्विलक्षयोजनतो बुधः सोमसुत उपलभमानापापेण श्रमकृद्दहाको धातिरिचेतत हातवाता च प्रापा
इविचरैहै १४ जोशुक्रलोकनकंवडुधाप्रनकूलहीहै कोईवर्षमैप्रतीचारहोहैतवप्रनुमानकरियैहैवर्षी
कोयामनावारोग्रहतायसांतेकरैहै १५ शुक्रकोसोइबुधकोसुभावजानौशुक्रनेहोलारवयोजनऊचो
वधहैसोशुभहीकोकरैहै सोजोसूर्यनेप्रागेचलैतोबुतयवनचलावेचाहरभावेवर्षानहीहोई १६

भा.पं.
७०

ताके उपर होला खयोजन पै मंगल है सो तीन पक्ष कर के राक २ रासि को भोग करै है जो सूर्य तेव करे के नरी चले तो अ
न करै वरु धातो प्रभु भगवतु है दुख ही को है १८ ताते उपर होला खयोजन पै प्रंतर यति भगवान् हरस्पतिर
है राकरा सके उपर राक वर्ष भोग करै है जो हरस्पति बक्रन तो यतो हां स्मरा कुल वरु प्रनु कुल करै १९ ताते उप

प्रथम उद्दिमंगार को पियोजन लक्ष दिन य उपलभ्यमाना स्थिति स्थितिः पक्षे रेवैव सो रासे न द्वादशान् भुजे
य दिन वक्रेणा भिवर्तते प्रायेणाः प्रभु राघव संसः १८ तत उपरिष्ठा दिलक्षयोजना नांतरगतो भगवान्
हरस्पति रेवैव स्मिन् रासौ परवत्सरं प्रचरति य दिन वक्रः स्यात् प्रायेणा नु कुलो हा स्मरा कुलस्य १९
तत उपरिष्ठा योजन लक्ष द्यात् प्रतीयमाना शने श्रवणैव स्मिन् रासौ वनसम्पत्ता न्विलंबमानाः स
र्वानेवानुपयेति तावद्भिर्नुवत्सरे प्रायेणा हि सर्वेषाम शांति करः २० तत उत्तरस्माद्दृश्य राका हसल
क्षयोजना नांतर उपलभ्यते य रावलो कानां शमनु भावतो भगवतो विष्णो र्यत्परमं पदं प्रदक्षिणो मूक
मंती २१ इति श्रीमद्भागवते मत्त पुराणे पंचम स्कंधे नां द्वाविंशोऽध्यायः २२ श्रीकृष्णाय नमः

र होला खयोजन पै प्रतीमान शनि श्रवण है सो राक २ रासि कृती समरी ना को विलंब करै है इतने ईव वर्ष न कर
वै सव प्राणी न दुख है वरु धासव कू दुख है २० ताते उपर ग्यार होला खयोजन पै सम अघिलो कन के सुख
की इच्छा करै है भगवान् विष्णु को जो परम पदता य प्रदक्षणा करै है २१ इति भागवते पंचम स्कंधे द्वाविंशोऽध्यायः २२

७०

ते ईस के प्रधायनै ज्योति स चक्र के प्राश्रय जो धव को स्थान लावर्णन करै है शिष्ट मार स्वस्व कर के हरि की जो स्थिति से क
है है १ श्रीशुक्र देव जी कहै है राजा इति रिधिन तै परै ते रै लाय जो जन पै विष्णु को परम पद कहै है या पद में महाभाग वद उता
न पात के वेदा ध्रुव जी कहै है प्रति उद्ग्राजापति कस्यप धर्म नक्षत्र रूपतिन कर के बहुत सम्मान सहित दात नै करीये है या
हस में कल्प पर्यंत है जीवन जिन को तिन के प्राश्रय है ता ध्रुव जी को प्रभाव प्राणै वर्णन कीयो १ सो ध्रुव सगरे जो जेति र्गण
ग्रहनक्षत्र तारा तिन के प्राश्रय है जो जेति र्गण प्रव्यक्त है वेगजा को ये सो जो वह काल चक्रता चर के नै है ईश्वर कर के रचो है

श्रीशुक्र उवाचः अथ तस्मत्परतत्त्वोद्देश्यो जनांतरयो यत द्विस्मोः परमं पदमभिवंदति १ यत्र तस्मात्तन्माग
वतो ध्रुव औतान पद रगित नै रेण प्रजापति नो कस्यपे न धर्मेण च समकाल युग्मिः स बहुमानं दक्षिणतः क्रिय
माण इहानपि कल्प जीवना माजी व्युपास्ते २ तस्येहानुभाव उपवर्णितः सहस्रवैसां ज्योति र्गण नां ग्रह
नक्षत्रादीनां मतिमिथेणाः व्यकरं हसा भगवता कालेन भ्राम्यमाणानां स्थानु विवावध न ईश्वरेण विहितः ३

निरंतर प्रकास करै है ३ जैसे मेरी स्तन में काचे है धान खदवे कू वें लने अणने स्थान में जैसे मेडल है तै सै विचरै है ४
जैसे हीन क्षत्रग्रहादि जने भीतर वाहर काल चक्र में राखे ते ध्रुव को प्राश्रय करि तै पवन के प्रेर कल्प पर्यंत पर कमी है है
का जैसे आस में मेघ सिद्ध न ते प्रादिलै के पक्षी कर्म है स एव जिन को कौन के व स डोले है जैसे ही प्राकृत पुरुष के संयोग
कर के प्रजु यद को ये कर्म कर के रचो है गति जिन की ते उन्मि में नरी गिरै है को ईश्वर ते रिधिते यह जो ज्योति स समूह
ताहि सिद्ध मार के संस्थान कर के भगवान् वासुदेव की जोग धारणा सामै करणा करै है ६

143

भा.प.
७९

005612

नेत्रे कुंहे सिरजिन को कुंडली न त है देह जिन को ता की प्रछवे प्रग्न वर है ७ या की प्रछ के मध्य में प्रजापति प्रभि ई
धर्म ये है प्रछ के मूल में धाता विधाता है कटि में समस्त धि है दक्षणा वर्त जो कुंडली न त शरीर ता के पार्श्व में जे उत्तरायन न
क्षत्र है तिनै कहै ८ प्रौर जे दक्षणा यन न क्षत्र है तिनै वाम पार्श्व के विसे कहै ९ यथा प्रि सुमार को कुंडली प्रकार जो

यथा मेटी स्थं न क्रौं प्रो मरण पशवः संयोजिता स्त्रिभिः सवनै र्थ या स्थानं मुं डलानि चरंति एवं मग्न गगनादय
रतस्मि संतर्वि र्द्यो गेन काल चक्रा प्राये जिता ध्रुव मेवा वलं च वा पुनो दीर्घ माणा प्राक् लोपं तं परिचक्रमंति ५
न भस्य यथा मे धा प्रे ना ह्यो वा युवसः कर्म सारथया परिवर्तते एवं जो निर्गण प्रकृति पुरुष संयोगा नु गही
ता कर्मी निर्मिति गतयो भुवनि पतंति ६ केचि देत ज्योति रनीकं प्रि सुमार संस्थाने न भगवतो वा सुदेव स्यो
गे धा रणा या मनु वर्णं यंति ७ ये स्य पुष्पा ग्रे वा ह प्रौर सः कुंडली न त देह स्य ध्रुव नु पशु लिपुः ८ तस्य लं गले प्र
जापति रभि र्दि द्रो धर्म इति पुष्पं मूलै धा धना विधा ता च कटां समर्पयः ९ तस्य दक्षणा वर्त कुंडली न त शरीर
स्य या न्यु दग यनानि दक्षणा पार्श्वे नु न क्षत्राणु प कल्पयंति दक्षणा यनानि नु सव्ये १० यथा प्रि सुमार स्य कुंडला
जोग सन्नि वे प्रा स्य पार्श्व दो स न यो रण्य वयवाः सम संज्ञा भवंति ११ एषे तज जी थी प्रा का स गंगा चो द रतः पुन र्वसु
पुष्पो दक्षणा वाम यो प्रो णो रा द्री स्त्रे ये च दक्षिण वाम योः पश्चिम पाद यो रभि जि हु त रा षा डि दक्षणा वाम यो र्नी सि कयो

यथा सख्यं प्रवण ए वी षा डे दक्षणा वाम यो र्नी च न यो १२

शरीर ता को हो ऊ प्रौर कुं वरो वर के अंग होइ है ११ पीठ में तो अज जी थी है प्रा का स गंगा उदर में है पुन र्वसु ग्री रु पुष्प ते
दक्षणा वाम प्रो णी न में है प्रा द्री स्त्रे वा ते दक्षिण वाम पी षे चो पाम न में है अभि जित उ त्रा षा ड ते दक्षणा वाम ना सि

144
१४५
७९

145

Diamond Book Binding House
Moh Karachh B.H.E.L Road Jawalapur

